श्रीः

त्रैमासिक

श्रीस्वाध्याय

ग्रीष्माङ्क

वर्ष १०
सं०२००८

संख्या ४
आषाढ़



वार्षिक मूल्य ४)

इस अङ्कका मूल्य १।)रु०

अन्तिम

प आगामी ग्या

लिए सब प्रतियां सु

रहा है। कूपन पर अपनी ग्राह

सचित्र 'नववर्षाङ्क' लगभग १२० पृष्ठका हो

१।) होगा। परन्तु ता० ३० सितम्बर १९५१ से

पाङ्क और वर्ष भरके शेष सब अङ्क ४) रु० में ही प्राप्त

विशेष स्नेह रखते हैं वे संरक्षक सहायक अथवा कम से

सहयोग देनेकी कृपा करें। सम्मान्य ग्राहकोंके शुभ नाम सधन्य

सम्पादक—
श्री पं० हरदेव शर्मा त्रिवेदी

श्रीस्वाध्यायके नियम तथा उद्देश्य

उद्देश्य—

समस्त संसारको हितकी ओर ले जाना तथा ऐहलौकिक और पारलौकिक मोक्ष (स्वातन्त्र्य) प्राप्त कराना 'श्रीस्वाध्याय' का मुख्य उद्देश्य है।

संचालकगणोंके नियम—

संरक्षक—

(१) जो महानुभाव ३००) तीनसौ रुपयेसे अधिक प्रतिवर्ष सहायता देंगे वे 'श्रीस्वाध्याय' के संरक्षक माने जायेंगे।

सहायक—

(२) जो सज्जन ५१) रु० से ३००) रु० तक प्रतिवर्ष सहायता देंगे, वे 'श्रीस्वाध्याय' के सहायक माने जायेंगे।

'श्रीस्वाध्याय' आश्विन शुक्ला १०, पौष शुक्ला १०, चैत्र शुक्ला १० और आषाढ़ शुक्ला १० को प्रकाशित होता है। इसका वार्षिक मूल्य ४) रु० और एक प्रतिका १।) रु० है।

(२) जिन सज्जनोंके लेख श्रीस्वाध्याय-सदनकी ओर से प्रार्थना-पूर्वक मंगवाये जायेंगे वे अवश्य प्रकाशित होंगे अन्य लेख यदि गवेषणा-पूर्ण मौलिक और उपयोगी समझे जावेंगे तो यथासमय प्रकाशित हो जायेंगे, अन्यथा नहीं।

(३) लेख, कविता, चित्र, समालोचनार्थ पुस्तकोंकी [illegible]दो प्रतियां और विनिमय (परिवर्त्तन) की पत्र[illegible]काएं सम्पादक 'श्रीस्वाध्याय' सोलन (शिमला) के [illegible]तेसे भेजने चाहिए।

(४) लेख, कविता आदि प्रकाशनार्थ सामग्री स्पष्ट अक्षरोंमें कागजके एक ओर ही लिखी [illegible] चाहिए।

(५) किसी लेखके प्रकाशित करने या न [illegible] उसमें घटाने-बढ़ाने तथा लौटाने न लौटाने का [illegible] अधिकार सम्पादक को है। अस्वीकृत लेख डाकव्यय [illegible]ने पर ही लौटाये जा सकेंगे।

ग्राहकोंके नियम—

'श्रीस्वाध्याय' के स्थायी ग्राहक वर्षारम्भके प्रथमाङ्क से (आश्विनमास की विजयादशमीसे) ही बनाये जाते हैं, चाहे वे मूल्य कभी भेजें। यदि विजयादशमीका 'नववर्षाङ्क' समाप्त हो जावे या कोई ग्राहक अवधि समाप्त होने पर पीछे विशेषांक न लेना चाहें तो बीचमें किसी समयसे ग्राहक हो सकते हैं। ऐसी स्थितिमें उनसे वार्षिक मूल्य ४) रु० न लेकर वर्ष-समाप्ति (आषाढ़) तकके शेष अङ्कोंका मूल्य ही लिया जायगा। 'नववर्षाङ्क' के बिना तीन अङ्कों या नौ मासका मूल्य ३) रु० और एक अङ्क का मूल्य १।) रु० मनीआर्डर द्वारा पेशगी आना चाहिए। वी० पी० मंगवानेमें उक्त मूल्यमें छः आने रजिस्ट्री खर्च के अधिक बढ़ जायेंगे। वर्षारम्भसे स्थायी ग्राहक बन कर पूरी फाइल मंगवानेमें ही ग्राहकोंको विशेष लाभ है।

मूल्य भेजते समय मनीआर्डरके कूपन पर अपना नाम तथा पूरा पता और ग्राहकसंख्या स्पष्ट अक्षरोंमें लिखना चाहिए। यदि ग्राहक संख्या स्मरण न हो और पुराने ग्राहक हों तो मनीआर्डरके कूपन पर 'पुराना' शब्द और नये ग्राहक हों तो 'नया' शब्द नामके साथ अवश्य लिख देना चाहिए। वार्षिक मूल्य या एक अङ्कके मूल्यका नोट या टिकट लिफाफेमें कदापि न भेजें।

'श्रीस्वाध्याय' का नमूना बिना मूल्य किसी को नहीं भेजा जाता। [illegible] टिकट [illegible] [illegible]ने सज्जनोंके जवाबी पत्र या उत्तरके लिए [illegible]येंगे, उन्हींको तत्काल उत्तर दिया जावेगा। 'श्री[illegible] प्रकाशित होनेकी तिथि (शुक्ला दशमी) [illegible]कके नाम बड़ी सावधानीसे भेज दिया [illegible] किसी ग्राहकके पास कोई अङ्क न पहुंचे तो [illegible]होनेकी तिथिसे १५ दिनके अन्दर हमें [illegible]सूचित पर कोई ध्यान

॥ श्रीः ॥

ग्राहकोंको आवश्यक सूचना

ग्यारहवें वर्षका "नववर्षाङ्क"

'श्रीस्वाध्याय' ने भारतीय समाज और साहित्यकी जो सेवा विगत दश वर्षोंमें की है उससे समग्र हिन्दी संसार भली भांति परिचित हो है। अब जगज्जननी महामायाकी असीम अनुकम्पासे आपका यह प्रिय पत्र अपने जीवनके दश वर्ष पूर्ण कर आगामी विजयादशमी (आश्विन मास) के अङ्कसे ग्यारहवें वर्षमें पदार्पण करेगा। दशहरे पर ग्यारहवें वर्षका पहला अङ्क सचित्र सुन्दर 'नववर्षाङ्क' के रूपमें प्रकाशित होगा। 'श्रीस्वाध्याय' के वर्तमान सभी स्तम्भों और विषयोंका समावेश तो इसमें रहेगा ही, साथ ही आगामी वर्षसे अनेक आवश्यक महत्वपूर्ण लेख कविता कहानी आदि देकर इसको विशेष उपयोगी बनाया जायेगा। 'नववर्षाङ्क' तो पिछले सब अङ्कोंसे अत्यन्त सुन्दर आकर्षक, ज्योतिष आयुर्वेद इतिहास दर्शनशास्त्र आदि पर गम्भीर विवेचनात्मक लेखोंसे भरपूर होगा। इस समय कागजका मूल्य पहलेसे डेढे दुगुनेके लगभग मंहगा हो गया है, अतः कुछ ग्राहकोंने ग्यारहवें वर्षसे 'श्रीस्वाध्याय' का मूल्य बढाने का सुझाव रक्खा है। उनका कहना है कि—"श्रीस्वाध्यायमें व्यापारियों और ज्योतिर्विज्ञानानुरागियोंके लिए इतनी अधिक उपयोगी सामग्री रहती है कि वे उसे १०) मूल्य होने पर भी खरीदेंगे ही।" परन्तु हम सर्वसाधारण ग्राहकोंका ध्यान रख कर अभी मूल्य नहीं बढ़ा रहे हैं। पहलेकी भांति ४) चार रुपयेमें ही वर्ष भरके सब अङ्क ग्राहकोंको भेंट करेंगे। यदि आगे कागजकी स्थिति विशेष बिगड़ गई तो फिर हमें किसी समय भी मूल्य बढ़ानेके लिए बाध्य होना पड़ेगा। क्योंकि 'श्रीस्वाध्याय' को अपने अधिकांश संरक्षक सहायकोंसे आर्थिक सहायता अब बिल्कुल नहीं मिल रही है, यह गत वर्षके 'ग्रीष्माङ्क' में हम निवेदन कर चुके हैं। हमारे महामान्य संरक्षक धर्ममार्तण्ड राजर्षि श्री-१०५ मन्महाराज दुर्गासिंह जी महोदयकी उदार सहायता और सीमित ग्राहकोंके बल पर 'श्रीस्वाध्याय' अपनी छपाई और कागजका व्ययमात्र पूरा कर पाता है। वर्तमान मंहगाईमें इसके व्ययकी पूर्त्ति या तो मूल्य बढ़ाने से हो सकती है या ग्राहक संख्या बढ़ने पर। यदि पुराने ग्राहकोंने समय पर अपना वार्षिक मूल्य नहीं भेजा और कुछ नये ग्राहक नहीं बढे तो फिर सम्भव है मूल्य बढ़ाना पड़ जावे, किन्तु जो ग्राहक ता० ३० सितम्बरसे पहले ही ४) रु० मनीआर्डरसे भेजकर ग्यारहवें वर्षके ग्राहक बनजावेंगे उन्हें अधिक मूल्य नहीं देना पड़ेगा। अतः आप इस सूचनाके मिलते ही अपना तथा अपने मित्रों का—

वार्षिक मूल्य शीघ्र भिजवाइये

क्योंकि वर्तमान दशवें वर्षका यह अन्तिम अङ्क आपके हाथमें है। आपका वार्षिक मूल्य इस अङ्कके साथ ही समाप्त हो जाता है। अतः आप आगामी ग्यारहवें वर्षका मूल्य ४) चार रुपये शीघ्रसे शीघ्र कार्यालय में मनीआर्डर द्वारा भेजकर वर्षभरके लिए सब प्रतियां सुरक्षित करा लीजिए। छपा हुआ मनीआर्डर फार्म इसी अङ्कके साथ भेजा जा रहा है। कूपन पर अपनी ग्राहक संख्या और पूरा पता स्पष्ट अक्षरोंमें लिखें। विजयादशमीका सचित्र 'नववर्षाङ्क' लगभग १२० पृष्ठका होगा। इस अङ्कका मूल्य २) और प्रत्येक साधारण अङ्कका मूल्य १।) होगा। परन्तु ता० ३० सितम्बर १९५१ से पहले मूल्य जमा करा देने वाले ग्राहकोंको यह विशेषाङ्क और वर्ष भरके शेष सब अङ्क ४) रु० में ही प्राप्त हो सकेंगे। जो सज्जन समर्थ हैं और श्रीस्वाध्यायसे विशेष स्नेह रखते हैं वे संरक्षक सहायक अथवा कम से कम ११) रु० भेजकर सम्मान्य ग्राहक बनकर सहयोग देनेकी कृपा करें। सम्मान्य ग्राहकोंके शुभ नाम सधन्यवाद 'नववर्षाङ्क' में प्रकाशित किये जावेंगे।

नये ग्राहक बनाइये

हम अपने प्रत्येक पाठकसे प्रार्थना करते हैं कि वे स्वयं तो अपना मूल्य शीघ्र भिजवा ही दें, साथ ही कम से कम एक नये ग्राहकका मूल्य भी अवश्य भिजवायें। यदि प्रत्येक सदस्य एक नया ग्राहक बना दे तो हम और अधिक उत्तम सेवा कर सकेंगे। आशा है इस बार श्रीस्वाध्याय-परिवारका प्रत्येक सदस्य अपने इस परम पुनीत कर्तव्यका पालन कर हमें पूर्ण सहयोग देगा। जो सज्जन गत चैत्र मासके वसन्ताङ्कसे (मार्च १६५१ से) ग्राहक बने हैं उनका मूल्य अभी समाप्त नहीं हुआ है। वे महानुभाव साथके मनीआर्डर फार्म पर किसी अपने परिचित मित्रका वार्षिक मूल्य भिजवाने की कृपा करें।

वी० पी० किसीको भी नहीं भेजी जायगी

अब आगामी ग्यारहवें वर्षका 'नववर्षाङ्क' किसी भी ग्राहकको वी० पी० द्वारा नहीं भेजा जायेगा। क्योंकि नये डाक नियमानुसार 'श्रीस्वाध्याय' के नववर्षाङ्ककी V. P. P. वी० पी० पर ।≡)। सवालात आनेका मार्गव्यय (टिकट) लगेगा। कुछ भले मानुष तो वी० पी० मंगवाकर भी लौटा देते हैं और किसीके समय पर न छुड़ानेसे लौट आती है, अतः कार्यालयको व्यर्थ में हानि उठानी पड़ती है, इसलिए हमने अब वी० पी० न भेजनेका निश्चय किया है। अतः अब कोई ग्राहक वी० पी० द्वारा 'श्रीस्वाध्याय' पानेकी आशामें न रहें। पहले वार्षिक मूल्य ४) भेज देनेसे ग्राहकोंको आठ आनेकी बचत है और अङ्क भी छपते ही उन्हें मिल जाता है। वी० पी० ४॥) में पड़ती है और सब ग्राहकोंको भेजनेके बाद विलम्बसे भी मिलती है। इस दृष्टिसे भी पहले मूल्य भेजनेमें ही ग्राहकोंको विशेष लाभ है। जिन ग्राहकोंको अङ्क सुरक्षित न पहुँचने वा डाकमें गुम होनेका भय हो वे वार्षिक मूल्यके साथ ।≈) अधिक भेजें तो उन्हें 'नववर्षाङ्क' रजिस्ट्री से भेजा जा सकेगा। चारों अङ्क रजिस्ट्रीसे मंगानेके लिए १≈) अधिक भेजना चाहिए।

'नववर्षांक' के कुछ महत्वपूर्ण लेख

श्रीशक्तिमहानुभवस्तव। आधुनिक विज्ञान और सनातन धर्म। आर्योंके संकल्पमें देश और काल। गीता विज्ञान। हिन्दू ला (धर्मशास्त्र) की उत्पत्ति और विकास। एकादशीव्रतका वैज्ञानिक महत्व। अवतारवाद रहस्य। मानव और शिक्षा। आरोग्यताका मूल और उसकी प्राप्तिके मार्ग। नवरात्रि और शक्ति-उपासना। दशहरा दीपमाला आदि त्यौहारोंका वैज्ञानिक महत्व। ज्योतिषशास्त्र और पंचमहाभूत। ज्योतिषका प्रारम्भिक शिक्षण। सिंहलग्नजातक। अनुभूत योग। दैवज्ञकी दृष्टमें संसार-चक्र। श्री नेहरूजी और राष्ट्रपतिके आगामी वर्षलग्न और भावी चुनाव पर ज्योतिर्विज्ञानकी दृष्टिसे विचार। राज्यकर्मचारी व्यापारी स्वतन्त्र व्यवसायी, अध्यापक और महिलाओंका विस्तृत राशि भविष्य। सुप्रसिद्ध ज्योतिषाचार्योंकी भविष्यवाणियां, अनुभूत चांस और प्रत्येक वस्तुका तेजी-मन्दी विचार। हस्तरेखा विज्ञान। इसके अतिरिक्त अनेक ओजस्वी लेख, कविता, कहानी, नाटक आदिसे यह अङ्क ओतप्रोत होगा।

नववर्षाङ्कके कुछ विद्वान् लेखक

श्री १०८ आचार्य अमृतवाग्भवजी महाराज, श्री १०८ स्वामी सदानन्दगिरिजी महाराज शङ्कराचार्य, श्री गोविन्द शास्त्री दुगवेकरजी, श्री डा० वासुदेवशरणजी अग्रवाल, श्री देवीनारायणजी एडवोकेट, स्व० महामना श्री पं० मदनमोहनजी मालवीय, श्री पं० दीनानाथजी शास्त्री, श्री १०८ स्वामी शिवानन्द सरस्वतीजी महाराज, श्री पं० शिवनाथजी काटजू, श्री पं० सूर्यनारायणजी व्यास, श्री पं० केदारनाथजी राजज्योतिषी, श्री पं० बलदेवजी मिश्र ज्यौतिषाचार्य, श्री पं० व्रजकिशोर शास्त्री एम० ए०, एम० ओ० एल०, श्री पं० रामबहादुरजी त्रिपाठी साहित्याचार्य।

पत्र-व्यवहार और मूल्य भेजनेका एकमात्र पता—

व्यवस्थापक—श्रीस्वाध्यायसदन, सोलन (शिमला)

❀ श्रीः ❀

❀ श्रीस्वाध्याय ❀

———०००———

संस्थापक तथा प्रधानाध्यक्ष—

सर्वतन्त्रस्वतन्त्र महामहिम आचार्य

श्री १०८ मान् अमृतवाग्भवजी महाराज



संरक्षक—

धर्ममार्तण्ड राजासाहब श्री० १०५ मान् दुर्गासिंहजी बहादुर सी० आई० ई०, सोलन ।

श्रीमान् ला० शिवचरणदासजी, सदस्य परामर्शदातृ-समिति हिमाचलप्रदेश, सोलन ।

सहायक—

श्री १०५ मती स्व० माँजी महारानी साहिबा (सिरमौरीजी) बघाटराज्य ।

आयुर्वेदमहोपाध्याय श्री पं० गोवर्द्धन शर्माजी छांगाणी, सीतावर्डी, नागपुर ।

श्रीमान् बा० भागीरथलालजी मिलओनर, लहरागागा (पटियाला राज्यसङ्घ)

श्रीमान् ला० अमरनाथजी रईस, दिल्ली ।

श्रीमान् लाला श्यामलालजी मित्तल, अनूपशहर (उत्तरप्रदेश)

श्रीमान् सेठ गयाप्रसादजी खण्डेलवाल सिल्चर (आसाम)

श्रीमान् स्व० पं० चतुर्भुजजी राजपुरोहित ताल्लुकेदार भरतपुर ।

श्रीमान् स्व० अक्रियानन्दजी (श्री चुन्नीलालजी) भरतपुर ।

श्रीमान् ला० शिवप्रसादजी आढ़ती, खड़ (पञ्जाब)



प्रधान सम्पादक और व्यवस्थापक—

श्री पं० हरदेव शर्मा त्रिवेदी ज्योतिषाचार्य

उप सम्पादक—

साहित्यरत्न काव्यतीर्थ श्री पं० भवानीशङ्कर त्रिवेदी शास्त्री बी० ए०

प्रकाशक—

श्रीस्वाध्यायसदन सोलन [हिमाचल प्रदेश]

विषय-सूची

क्रम	विषय	लेखक	पृष्ठ
१	निवेदन [संस्कृत पद्य]	श्री १०८ आचार्य अमृतवाग्भवजी महाराज	५
२	सम्पादकीय विचार	सम्पादक	६-८
३	सन्देश	श्री १०८ आचार्य अमृतवाग्भवजी महाराज	९-१०
४	श्रीराष्ट्रालोकावलोकनम्	श्री पं० रमानन्द शास्त्री सारस्वत	११-१४
५	व्यवसाय और धर्म	श्री वसन्तीलाल जी मालपानी	१४-१५
६	घटखर्परकाव्य	श्री प्रो० बलजिन्नाथ पण्डित शास्त्री M.A.M.O.L.	१६-१८
७	भाग्यवाद और कर्मवाद	श्री पं० कन्हैयालाल जी 'मस्त'	१९-२२
८	प्रश्नकुण्डलीसे भाग्योदयास्त कालनिर्णय	श्री पं० कालीचरण जी शर्मा ज्योतिर्विद्	२३-२४
९	विद्वानोंकी सेवामें एक जिज्ञासा	,, ,,	२५
१०	त्रैमासिक व्यापार भविष्य	श्री पं० गंगाप्रसाद जी ज्योतिषाचार्य	२६-२७
११	चांदी सोनेका भविष्य	श्री पं० अमरदत्त जी मिश्र राजवैद्य	२७-२८
१२	अनुभूत तेजी-मंदी प्रकाश	श्री राजाराम जैन ज्योतिर्विद्	२९
१३	तीन मासकी दैनिक तेजी-मंदी	श्री यादवचन्द्र जैन ज्योतिर्विद्	३०-३१
१४	व्यापारका साप्ताहिक विवरण	श्री पं० गणेश, विद्यासागर दैवज्ञ	३२-३४
१५	त्रैमासिक अनुभूत रिपोर्ट	श्री पं० गिरिधारीलाल जी शर्मा दैवज्ञरत्न	३५-३६
१६	लाटरी द्वारा धन प्राप्तिका योग	श्री पं० गङ्गाप्रसाद जी ज्योतिषाचार्य	३६
१७	त्रैमासिक राशिफल	,, ,,	३७-३८
१८	त्रैमासिक पर्वव्रतादि निर्णय	'श्रीविश्वविजय पञ्चाङ्ग'से	३९-४०
१९	दैवज्ञकी दृष्टिमें संसार-चक्र	श्री हरदेव शर्मा त्रिवेदी	४१-४६
२०	दिव्य उत्पात और २००८ वि०	श्री पं० कालीचरण जी शर्मा ज्यो०	४६-४७
२१	संसार पर शनिका कुप्रभाव	श्री पं० गेंदनलाल जी शास्त्री ज्यौतिषाचार्य	४७-४८
२२	अहिंसक राज्यमें हिंसाका भीषण ताण्डव		४९-५०
२३	आजका भारतीय	श्री 'रसिक'	५०
२४	लग्नेशका द्वादश भावस्थ फल	श्री पं० अमरदत्तजी मिश्र राजवैद्य	५१
२५	व्यक्तिगत शंका समाधान	श्री ज्यो० 'गर्ग'	५२-५३

व्यक्तिगत शंका समाधान

गत वर्षसे हमने 'श्रीस्वाध्याय'में यह स्तम्भ प्रारम्भ किया था। कई ग्राहकोंने इससे लाभ उठाया और कई ग्राहक नियमको न समझ कर अनेक लम्बे चौड़े प्रश्न कर बैठे वे इस लाभसे वञ्चित भी रहे। अनेक ग्राहकोंके विशेष आग्रहसे अब हमने ग्राहकका प्रश्न और उसका उत्तर 'श्रीस्वाध्याय' में ही प्रकाशित करनेका क्रम पुनः प्रारम्भ किया है तदनुसार पिछली बार आये हुए प्रश्नोंके उत्तर इस अंकमें पृष्ठ ५२-५३ पर प्रकाशित किये हैं। अब जो ग्राहक इस योजना से लाभ उठाना चाहें वे नीचे लिखे नियमोंका पूरा ध्यान रक्खें:—

(१) अपना वार्षिक मूल्य ४) भेजकर अलग लिफाफेमें अपना केवल एक प्रश्न और जन्मकुण्डलीकी प्रतिलिपि भेजें। यदि जन्मकुण्डली न हो तो प्रश्नका समय लिख भेजें। साथ ही मनीआर्डरकी रसीदका नम्बर भेजना भी आवश्यक है। (२) एकसे अधिक प्रश्नोंका उत्तर प्रकाशित न होगा। (३) सबसे पहले वार्षिक मूल्य प्राप्त होने वाले केवल १० ग्राहकोंके उत्तर ही नववर्षाङ्कमें प्रकाशित हो सकेंगे। (४) बादमें मूल्य और प्रश्न भेजने वाले सज्जनोंको १) अधिक भेजने पर डाक द्वारा उत्तर भेजा जा सकेगा। (५) वर्ष भरमें एक ग्राहक केवल एक प्रश्नका निःशुल्क उत्तर पानेका अधिकारी होगा। (६) जो प्रश्नकर्ता अपना नाम प्रकाशित कराना न चाहें उनका केवल ग्राहक संख्या देकर प्रश्नोत्तर प्रकाशित किया जा सकेगा।

निवेदकः—व्यवस्थापक **श्रीस्वाध्यायसदन [ज्योतिष विभाग] सोलन (शिमला)**

श्रीस्वाध्याय

[ग्रीष्माङ्क]

स्वराष्ट्रशिक्षां गृह्णीयाच्चिकीर्षुः स्वां समुन्नतिम् ।
दूरदृष्टिर्यया भूत्वा न कदाऽपि विषीदति ॥ [गङ्गालोक]

वर्ष १० — सोलन, आषाढ़ शु० १० शनिवार सं० २००८ वि० — संख्या ४

तत्तद्राष्ट्रे मानवानां व्यवस्थां शोभासम्पच्छालिनीमार्यरीत्या ।
प्रेम्णा लोके स्थापयंस्तत्त्वदर्शी श्रीस्वाध्यायः कल्पतां विश्वभूत्यै ॥

—अ० वा० आचार्य

निवेदन

[श्री १०८ आचार्य अमृतवाग्भवजी महाराज]

असत्सङ्गान्नित्यं कपटपटिमानं श्रितवता-
मसीषां लोकानां विषयशकृदन्तर्विहरताम् ।
न वेदैः शास्त्रैर्वा करतलगतैर्वा गलगतै-
रशान्तिः सा शक्या प्रशमयितुमन्तर्हृदि तता ॥१॥

तनूं लब्ध्वा रम्यामिह हि मनुजानामभिजने
दृशं प्राप्तुं पुण्यां सदसदवबोधप्रणयिनीम् ।
न यैर्लिप्ता श्रीसच्चरणरजसा भालपटली
कथं तैः संप्राप्या त्रिपुरहरसायुज्यपदवी ॥२॥

❋ नियन्त्रणका अभिशाप ❋

आज जिधर देखिये उधर ही भ्रष्टाचार, कालाबाजार, रिश्वत और घूसखोरीकी भरमार दिखाई देती है। किसी विभागमें चले जाइये किसी कर्मचारीको देख लीजिये कहीं सत्य शुद्धता और सन्तोषके दर्शन न होंगे। सरकारी विभागोंका तो कहना ही क्या, इन विभागोंमें ऐसी आपा धापी पड़ीहुई है कि कुछ न पूछिये। ऊपरसे सब कुछ ठीक होते हुए भी अन्दरसे भयंकर और उग्रतम देशकी दशा होती जा रही है। ऐसा प्रतीत होता है कि समग्र राष्ट्रमें एक प्रच्छन्न अराजकतासी फैल गई है। कोई किसी को कुछ पूछने या कहने सुनने वाला रहा ही नहीं। साधारण चौकीदारसे लेकर बड़े-बड़े अधिकारी तक सभीके सभी इस मूक अराजकताके समय अपनी स्वार्थ सिद्धिमें तत्पर हैं। एक प्रतिशतको छोड़ दें तो निन्नानवे प्रतिशत अधिकारी और कर्मचारी येनकेनप्रकारेण अपना ही उल्लू सीधा करनेके लिए कमर कसे बैठे हैं। स्पष्ट बात तो यह है कि भारतका चरित्रबल एक सहस्र वर्ष पूर्व मुस्लिम शासन कालके प्रारम्भसे लेकर आज तक उत्तरोत्तर पतनोन्मुख ही होता आया है और होता जा रहा है।

"प्रवृत्तिरेषा भूतानां निवृत्तिस्तु महाफला।"

के सिद्धान्तानुसार छोटी छोटी--बातोंके लिए अपने चरित्रकी रक्षा न करते हुए क्षुद्र स्वार्थमें लग जाना मनुष्यका धर्म सा हो गया है। किन्तु—

"विकार हेतौ सति विक्रियन्ते
येषां न चेतांसि त एव धीराः।"

के अनुसार धीर तो वही कहलाएंगे जिनके मन विकृत होनेकी परिस्थितियोंमें भी विकृत नहीं होते। देशका उद्धार ऐसे ही धीर और अपरिग्रही व्यक्तियोंसे हो सकता है। स्वार्थपरताका यह भयंकर संक्रामक रोग इतना अधिक व्यापक हो गया है कि इसके निराकरणका उपाय कुछ सूझता ही नहीं। कुछ विचारक कहते हैं कि भयंकर दण्ड व्यवस्थासे यह रोग दूर हो सकता है, पर प्रश्न तो यह है कि दण्ड दे कौन? वही तो दूसरेको दण्ड दे सकता है जो स्वयं पापी या अपराधी न हो। यहां तो जैसा कि पहले कहा गया है सभी एक ही घड़े के चट्टे बट्टे हैं. सबकी दुर्बलताओंसे सब खूब परिचित हैं। साथ ही यदि कोई दूसरेको भ्रष्टाचारसे रोकता है तो पहले स्वयं उसे ऐसे कार्यसे हाथ खींचना होगा। जो अध्यापक स्वयं धूम्रपान करता हो वह यदि अपने छात्रोंको बीड़ी सिगरेट न पीनेका उपदेश दे तो उसका कोई प्रभाव नहीं होता। यही कारण है कि आज हमारे नेताओं धर्माचार्यों और उपदेशकोंके भाषणोंसे जनताका कोई सुधार नहीं होता। अस्तु।

निरीह जनता आपसमें इन अधिकारियोंके ऐसे दूषित कार्योंके विरुद्ध आपसमें—अपने घर बाजारमें तो खूब रोष प्रकट करती है पर सामूहिक रूपसे संगठित हो कर किसी भी अधिकारीके कुकृत्योंका सामना करनेका साहस कभी नहीं दिखाती। किसी व्यक्ति-विशेष या संस्था विशेषके कोई भी कार्य तब तक पूरी तरह सफल नहीं हो सकते जब तक कि जन सामान्यका बल उसके साथ न हो। साथ ही हम यह भी स्पष्ट रूपसे कह सकते हैं कि हमारे केन्द्रीय और प्रान्तीय प्रशासनके प्रमुख संचालक गणों—मन्त्री, राज्यपाल, राष्ट्रपति आदिमेंसे अधिकतरका चरित्र उज्ज्वल है। पर शासनको सुधारनेके लिए केवल अपने चरित्रकी उज्ज्वलतासे ही कुछ कार्य नहीं चल सकता, इसके लिये तो दृढ़ और स्वयं कर्मनिष्ठ होना पड़ता है। हमारे प्रधान मंत्रीजीको विदेशी राजनीति और मुस्लिम-रक्षा आदिकार्योंसे ही छुट्टी नहीं मिलती, फिर भला वे दूसरे विभागोंका स्वयं निरीक्षण कैसे करें। अधिकसे अधिक वे यही कर सकते हैं कि

पचास साठ हजारकी भीड़ वाली सार्वजनिक सभामें व्याख्यान दे आए।

प्रधानमन्त्रीके समान ही दूसरे मन्त्रियोंकी भी यही दशा है। इसलिए शासक या प्रजा किसीसे भी कुछ आशा रखना व्यर्थ है। फिर भी उचित और हितकी बात कहना प्रत्येक राष्ट्रहितैषीका कर्तव्य है। अतः हम यह कहनेमें संकोच नहीं करते कि राष्ट्र-कल्याणकी दृष्टिसे कण्ट्रोल और राशन शीघ्र ही समाप्त कर दिये जाने चाहिएं। अधिकतर भ्रष्टाचार इसी राशन और कण्ट्रोलकी व्यवस्थाके कारण हैं। जनतामें संग्रहकी भावनाको प्रोत्साहन मिलता है। सरकारका करोड़ों रुपया व्यर्थमें व्यय हो रहा है। कपड़े, खांड आदि वस्तुओंका राशन तो तत्काल समाप्त हो ही जाना चाहिये। जबतक राशनिंग व्यवस्थाका अंत न होगा देशमें सुख शांतिका संचार नहीं हो सकता। जिस वस्तुकी जिसे आवश्यकता होती है वह उसे अधिकमूल्यमें चोरबाजारसे मिल ही जाती है। कोई व्यक्ति भूखा नंगा तो रहता नहीं, फिर वस्तुका अभाव कैसे माना जाए? इस नियंत्रणसे कण्ट्रोल अधिकारियों और चोर-बाजार करने वाले बड़े-बड़े व्यापारियोंकी जेबें गरम हो रही हैं। यही लोग कण्ट्रोल समाप्त होनेसे अव्यवस्थाके भयका भूत दिखाकर जनताका शोषण कर रहे हैं। अतः अब इस अभिशापको शीघ्र समाप्त करना ही राष्ट्रके लिए हितकर होगा।

संस्कृतकी भी सुनाई हो रही है

इस वर्षसे मध्यभारत, राजस्थान और उत्तरप्रदेशके शिक्षा विभागने हाईस्कूलकी श्रेणियोंमें संस्कृतको अनिवार्य बनाकर देववाणीके प्रति अपने कर्तव्यका पालन किया। यद्यपि संस्कृतकी वास्तविक उन्नति तो संस्कृतके स्वतन्त्र शिक्षणको प्रोत्साहन देनेसे ही होगी पर स्कूलोंमें संस्कृतके सामान्य ज्ञानका प्रबन्ध कर देनेसे भी 'अकरणान्मन्द करणं श्रेयः, के अनुसार लाभ ही होगा, इसके लिये इन तीनों प्रान्तोंकी सरकार बधाईकी पात्र है।

प्रान्तीय मन्त्रिमण्डलोंमें उलटफेर

पिछले दिनों राजस्थानमें व्यास वर्मा मंत्रिमण्डलकी स्थापना हो गई। व्यासजीने आरम्भसे ही पर्याप्त तत्परतासे कार्य आरम्भ किया है, उनकी यह कर्मठता बनी रहे तो प्रजाका हित हो सकेगा इसमें कोई संदेह नहीं। पर अभी तो अस्वस्थताने उन्हें कर्मक्षेत्रसे विरत होनेके लिये बाध्य कर दिया है। आशा है प्रभु कृपासे वे शीघ्र स्वस्थ होकर जन सेवाके कार्यमें समर्थ हो जायेंगे। पंजाबमें भार्गवमन्त्रिमंडल टूट गया। वहां गवर्नरी राज्य आरम्भ हो गया है। इससे जनताको क्या लाभ होगा, नहीं कह सकते।

काश्मीरकी समस्या

इधर काश्मीरकी समस्या नया रूप धारण करती जा रही है। पाकिस्तानने कई स्थानों पर प्रत्यक्ष आक्रमण आरम्भ कर दिये हैं। साथ ही संयुक्तराष्ट्रसंघ द्वारा नियुक्त मध्यस्थ श्री ग्राहम महोदय भी भारत आ पहुंचे हैं। यद्यपि भारत उन्हें सहयोग न देनेका निर्णय कर चुका है, फिर भी उनका विरोध नहीं कर रहा। हमारा तो निश्चित मत है कि तीन मास पश्चात् जब ग्राहम महोदय अपनी रिपोर्ट पेश करेंगे तो 'वही ढाकके तीन पात' वाली उक्ति चरितार्थ होनेके अतिरिक्त कुछ भी सुफल नहीं निकलेगा।

सोलन-देवीका मेला

सोलनमें मिथुनसंक्रांतिके दूसरे रविवारको प्रतिवर्ष दुर्गाभगवतीका मेला लगता है। यह मेला सोलनदेवी (शूलिनी देवी)का कहा जाता है। सम्भव है कि 'शूलिनी' देवीके नामसे ही सोलन नगर आरम्भमें बसा हो और अपभ्रंश होकर अब 'शुलन'से सोलन नाम बन गया हो।

इस मेलेमें मल्लयुद्ध (पहलवानोंकी कुश्ती) विशेष रूपसे होती है। प्रान्तके बड़े बड़े अधिकारी और दूर दूरकी जनता दर्शनार्थ आती है। इस वर्ष भी ता० २२-२३-२४ जूनको यह मेला बड़े समारोहके साथ

सम्पन्न हुआ। सोलनके प्रथम श्रेणी न्यायाधीश (मजिस्ट्रेट फर्स्टक्लास) श्री विनोदरायजी अन्तानी महोदयके सदुत्साह एवं अध्यवसायके परिणाम स्वरूप अबकी बार यह मेला पहलेकी अपेक्षा अत्यन्त महत्वपूर्ण रहा। पहले यह मेला केवल रविवारको बाजारमें दुर्गामन्दिरके पास ही होता था, किन्तु इस वर्ष मन्दिरसे दूर ठोडोग्राउण्ड नामक स्थानमें इस मेलेकी चहल-पहल तीन दिन तक निरन्तर रही। प्रथम दिन शुक्रवार ता० २२ जूनको सायंकाल श्री दुर्गाभगवतीकी शोभायात्रा (जलूस) नगरमें निकला। इस शोभा यात्रामें पंजाबयूनिवर्सीटी ड्रामेटिकक्लबकी ओरसे निकाली गई झाँकियां विशेषरूपसे दर्शनीय थीं। भगवतीके मन्दिरको सजाने, शोभायात्राका प्रबन्ध कीर्तन तथा मेलेके अन्य कार्योंमें सोलनके सुप्रसिद्ध व्यवसायी धर्मानुरागी श्रीमान् लाला शिवचरणदासजीने जिस हार्दिक लगन और उत्साहसे कार्य किया वह सर्वथा प्रशंसनीय था। स्थानीय सामाजिक सांस्कृतिक एवं धार्मिक कार्योंके लिए ला० शिवचरणदासजी सदा मुक्तहस्त रहते हैं।

इस बार मेलेमें शिशुप्रदर्शनी, पशुप्रदर्शनी, कृषिप्रदर्शनी स्वास्थ्यप्रदर्शनी, चिड़ियाघर, स्थानीय विद्यालयोंके छात्र एवं छात्राओंके खेल कूद मल्लयुद्ध (शाहीदंगल) आदि अनेक मनोरंजक उत्साहवर्द्धक सामग्रियां विद्यमान थीं। जनता भी दूर दूरसे आई थी और सब यह कहते सुने कि सोलनमें ऐसा मेला और सुप्रबन्ध पहले कभी नहीं देखा। इस सफलताके लिए हम श्री अन्तानी महोदयको हार्दिक बधाई देते हैं। अन्तानीजी अभी ३ मास पूर्व ही सोलनके उच्चाधिकारी बनकर आये हैं। अपनी सत्यनिष्ठा, सौजन्य, साधुस्वभाव, निरभिमानता और जनसेवाकी भावनाने आपको अधिक लोकप्रिय बना दिया है। आपके स्व० पूज्य पिता श्री रतिलालजी अन्तानीसे हमारा निकट सम्पर्क था। उदयपुर राज्यके उच्चाधिकारी (दीवान) पद पर रहते हुए भी हमने उनके अन्दर जो निरभिमानता निष्पक्षता आध्यात्मिकता विद्यानुरागितादि अनेक आह्मर्योचित सद्गुणोंके दर्शन किये थे वे सब सद्गुण पिताकी सम्पत्तिके रूपमें श्री विनोदरायजीमें पाकर आज हमें अत्यन्त सन्तोष है। श्री अन्तानीजीका भारतीय साहित्य और ज्योतिविज्ञानमें भी अच्छा प्रवेश है। अपने अध्ययनकाल में विदेशमें (यूरोपमें)वर्षों तक आप निरामिष भोजी रहे हैं और सिगरेट तकका व्यसन भी नहीं है। मेलेके प्रबन्धके लिये आपने कई दिन तक अहर्निश घोर परिश्रम किया। हमने स्वयं देखा कि मजदूरोंके साथ धूपमें खड़े रहकर प्रदर्शनी और स्टालोंके टेण्ट तम्बू आदिके कीलें खूंटियां स्वयं स्थान बताकर गड़वा रहे थे। आपकी कर्मठतासे सोलनके स्थानीयप्रसिद्ध नागरिकों अधिकारियों व्यापारियोंऔर जनताने भी आपको पूरा सहयोग दिया। श्री अन्तानीजीकी यह सदिच्छा है कि आगामी वर्ष यह मेला एक सप्ताह मनाया जाय और इसमें कविसम्मेलन साहित्य-सम्मेलन संस्कृति-सम्मेलन आदिका कार्यक्रम भी रखा जावे। हम चाहते हैं कि जगदम्बाकी कृपासे आपकी यह जनहितकारी भावना आगामी वर्ष पूर्ण हो।

ता० २४ रविवारको हिमाचल-प्रदेशके चीफ कमिश्नर श्री भगवानसहायजी महोदय भी प्रान्तके अन्य अधिकारियोंके साथ शिमलासे इस मेलेमें पधारे। खेलमें विजेता छात्र छात्राओं और मल्लों (पहलवानों)को पुरस्कार वितरण भी आपके करकमलोंसे ही हुआ। सुना है हमारे नये चीफकमिश्नर साहब श्री भगवानसहायजी महोदय भी बड़े उदार न्यायप्रिय और साहित्यानुरागी सज्जन हैं। यदि राज्यके सभी अधिकारी चरित्रवान् बनकर अपना उच्चादर्श उपस्थित करें तो राष्ट्रका बहुत कुछ कल्याण हो सकता है।

★

स न्दे श

[श्री १०८ आचार्य अमृतवाग्भवजी महाराज]

अनावृत्तनवद्वारे पञ्जरे पवनः खगः ।
स्वाभाविके निःसरणे वसतीत्येव विस्मयः ॥

प्रेमीजन संदेश चाहते हैं। उनकी ऐसी चाह स्वाभाविक कही जा सकती है। वे अपनेको चातक (पपीहा) कहते हैं, साथ ही उसे वे मेघ बना बैठे हैं जिससे वे सन्देश चाहते हैं। चातक तथा मेघ इनका सम्बन्ध तो वस्तुतः वैसा ही है। किन्तु इनकी उपमा कहां ठीक लागू हुई और कहां नहीं, यह निर्णय अपने-अपने अनुभवकी कथा है।

लीजिये अब सन्देश भी—यह सन्देश एक महात्माने दिया है। प्रथम-प्रथम हमको यह सन्देश महाभारतमें मिला, अनन्तर उसीको प्राकृत भाषामें हमने किसी महात्माकी उपदेश वाणीमें पढ़ा, पश्चात् उसीको संस्कृतमें आप लोगोंके लिये भेजा जा रहा है।

"एक पिंजरेमें खग (आकाश चारी प्राणी) रहता है। वह पवन रूप है। पिंजरेमें दश द्वार हैं, एकको छोड़ नौ-के-नौ खुले हुए रहते हैं। ऐसी दशामें खगका उड़ जाना ही स्वाभाविक है, पर आश्चर्य यही है कि वह उसी में अभी भी बस ही रहा है।"

सन्देश बड़ा नहीं स्वल्पकाय है, पर इसमें एक गम्भीर रहस्य भरा है। इस ओर यदि हमारा ध्यान जाय तो हम इससे महान् लाभ उठा सकते हैं। लाभ उठाना प्रायः सभी चाहते हैं, पर उठाता तो कदाचित् कोई ही है। इसका एक कारण है—ज्ञानकी विषमता। ज्ञानकी विषमतासे ही लाभकी व्याख्या तथा उसके प्राप्तिके उपायोंकी परिभाषामें असंख्य भेद-प्रभेद हो जाते हैं। अनन्तर यह ज्ञान तथा कर्मसे सम्पादित महान् घन बन जाता है। फिर इसमें अनन्त चर तथा अचर भावको ढोते हुए जीव भावमें फंसे हुएसे ये कल्पित भगवदंशु लाभ तथा हानिकी चिन्तामें अगणित काल तक भटकते रहते हैं। कल्पित ही इनका वह ज्ञान तथा कल्पित ही इनका वह कर्म कभी क्षणमात्रके लिये लब्ध-लाभताकी कल्पना करा कर सुखित्वकी भावनाको जाग्रत् कराता है, तथा कभी वही ज्ञान-कर्म क्षणमात्रके लिये लाभसे वञ्चितताकी कल्पना उठा कर दुःखित्वकी भावना को उद्भिद्ध कर देता है। बस इसी प्रकार इस पिंजरेसे उस पिंजरेमें और उस पिंजरेसे इस पिंजरेमें "जायस्व-म्रियस्व" का चक्कर लगाते हुए ये बस रहे हैं। महात्मा कहते हैं यह स्वाभाविक नहीं, स्वाभाविक तो यहांसे निःसरण है और वही लाभ है, लाभकी व्याख्या भगवान् यों करते हैं—

यं लब्ध्वा चापरं लाभं मन्यते नाधिकं ततः ।
यस्मिन्स्थितो न दुःखेन गुरुणाऽपि विचाल्यते ॥
(गी० ६-२२)

[जिसको प्राप्त करनेके अनन्तर दूसरे किसी भी लाभको उससे अधिक लाभ नहीं मानता वास्तवमें वही लाभ है। जिसमें स्थित होने पर बड़ा भारी दुःख भी उसे उससे विचलित नहीं कर सकता।]

बद्ध भावसे बिना मुक्त हुए आत्मलाभ नहीं होता, और आत्मलाभसे बढ़कर दूसरा कोई भी लाभ बड़ा नहीं। ऐसा महर्षियोंका पूर्ण अनुभव है। महर्षि आपस्तम्ब कहते हैं—"आत्म लाभान्न परं विद्यते" शास्त्र

तथा कर्तृत्वकी ओर ललचाई आंखोंसे न देखिए। यह आपको बन्धनमें डालने वाला है और यही पिंजरेका निर्माता करता है। भगवदिच्छाकी शरण लीजिए और "मा गृधः कस्य स्विद्धनम्" (अपनेसे अतिरिक्त किसीके भी धनको लेनेकी, हड़पनेकी इच्छा मत करो) इस श्रुति माताकी आज्ञा पर चलिये "तेन त्यक्तेन भुंजीथा" (संकुचित सम्पूर्ण अभिमान छोड़ कर भगवदिच्छाका उपभोग करो) इसको हृदयङ्गम करनेसे भगवदिच्छामें निरन्तर स्थिति लाभ होगा। आपको योग-क्षेमकी चिन्ता करनेकी आवश्यकता नहीं, आवश्यकता तो केवल इन वाक्यों पर श्रद्धापूर्वक चलनेकी है। सुनिए वे वाक्य ये हैं—

ईशा वास्यमिदं सर्वं यत्किं च जगत्यां जगत्।
तेन त्यक्तेन भुंजीथा मा गृधः कस्य स्विद्धनम्॥
(ई० १)

[इस संसारमें सृष्टि-स्थिति-विनाशशाली जो भी कुछ ज्ञात भावसे वा अज्ञात-भावसे है इस सबको सभी प्रकारकी सम्पूर्ण चलानेकी व्यवस्था सर्व समर्थ परमात्माकी ओरसे हो रही है, तुम चिन्ता न करो तुम उसकी व्यवस्थाका अपना संकुचित अभिमान छोड़ उपभोग करो और किसी भी अन्यके धनको अपहरण करनेकी वासना न करो।]

अनन्याश्चिन्तयन्तो मां ये जनाः पर्युपासते।
तेषां नित्याभियुक्तानां योगक्षेमं वहाम्यहम्॥
(गी० ९-२२)

[मुझ परमात्माको छोड़ कर जो लोग किसीके साथ सम्बन्ध नहीं रखते इसी लिए जो सर्वत्र मेरा ही चिन्तन करते हैं, जो प्रत्येक प्रकारसे मुझमें ही स्थित रहते हैं, वे सभी प्रकारसे श्रेष्ठ हो जाते हैं। उनके योग तथा क्षेमका वहन मैं स्वयं करता हूं। उन्हें कोई भी चिन्ता नहीं करनी पड़ती। ना ही उनको किसी अभावका कष्ट ही रहता है क्योंकि वे सभी प्रकारसे परिपूर्ण हो रहते हैं।]

अन्तमें हमसे सन्देश चाहने वाले सभी प्रेमियोंको अपनी सुरक्षाका रहस्य भरा सन्देश यही है—

तपस्विनो दानपरा यशस्विनो
मनस्विनो मन्त्रविदः सुमङ्गलाः।
क्षेमं न विन्दन्ति विना यदर्पणं
तस्मै सुभद्रश्रवसे नमो नमः॥
(भा० २-४-१७)

[तपस्वी दानी यशस्वी मनस्वी मन्त्रविद् सुमङ्गल सभी अपनी समर्जित सम्पत्ति जिसको बिना सौंपे क्षेम नहीं प्राप्त कर सकते उस सुन्दर कल्याणमय-कीर्ति वाले परमात्माको बारम्बार प्रणाम है।]

सम्पत्तिकी सुरक्षा सभी चाहते हैं। परन्तु उसकी रक्षामें समर्थ सब नहीं हो सकते। वे निरन्तर यही चाहते हैं कि इसकी सुरक्षा किसी पूर्ण समर्थ हाथमें हो। मानवी, दानवी, दैवी किसी प्रकारकी सम्पत्ति हो उसके लिये किसी ऐसे अधिकोषकी (बैङ्ककी) आवश्यकता है जिसकी संसार में पूरी साख हो। ऐसा अधिकोष भगवान् हैं। उनकी कल्याणमय कीर्ति अनन्त ब्रह्माण्डोंमें व्याप्त है। उनके पास अपना अमूल्य-से-अमूल्य आप जिसे समझते हैं वह धन समर्पित करें और आप निश्चिन्त रहें। वह अधिकोष ऐसा है कि आपका धन प्रतिक्षण बढ़ता रहेगा और अक्षय हो सकेगा। आजसे पहले बड़े-बड़े तपस्वियोंने अपना तप, दानियोंने दान, मनस्वियोंने मन, मन्त्रविदोंने मन्त्रवित्ता, सुमङ्गलोंने सौमङ्गल्य उन कल्याण कीर्ति भगवान्‌के पास सुरक्षाके लिए रख कर अपनेको अक्षय सम्पत्तिमान् बनाया है। वहां कभी भी चोरी, लूट, अपहार अस्त-व्यस्तता आदि कभी न हुआ न होगा न हो सकता है। उसको छोड़ अन्य कोई अविनश्वर सुरक्षा स्थान नहीं अतः हम सब उन्हीं मङ्गलमय भगवान्‌को बारम्बार प्रणाम करते हुए उन्हींकी इच्छामें समर्पित रहें, और अनन्तमें अनन्त रूप रहें। फिर किसी प्रकारके योग-क्षेमकी चिन्ता न रहेगी। और "जायस्व-म्रियस्व" के पिंजरोंमें बद्ध न होना पड़ेगा—शिवमस्तु।

—★★—

श्रीराष्ट्रालोकावलोकनम्

[अवलोककः—श्री रमानन्द शास्त्री सारस्वत]

[हेमन्ताङ्क १०/२ से आगे]

'श्रीराष्ट्रालोक'के प्रथम और द्वितीय श्लोकका अवलोकन करते हुए यह प्रकट किया गया था कि इस ग्रन्थमें सूत्ररूपमें ही प्रायः सभी बातोंका सन्निवेश किया गया है, और जो बात विशेष महत्वपूर्ण है, उसका बारम्बार प्रयोग अनेक स्थलों पर हुआ है। गत श्लोकावलोकन करते हुए राष्ट्रस्वरूप एवं राष्ट्रशक्तिनिरूपण पर पर्याप्त विचार किया गया है। अब आगे तृतीय श्लोकसे वास्तवमें ग्रन्थका प्रारम्भ होता है। प्रथम और द्वितीय श्लोक तो एक प्रकारसे ग्रन्थकी भूमिका स्वरूप ही हैं। तृतीय श्लोक ही एक प्रकारसे सारे ग्रन्थका मूल है, यह कहें तो कोई अत्युक्ति न होगी, क्योंकि इस श्लोक या कारिकामें "राष्ट्र"की परिभाषा की गई है। मूल कारिका इस प्रकार है:—

"समान संस्कृतिमतां यावती पितृपुण्यभूः।
तावतीं भुवमावृत्य राष्ट्रमेकं निगद्यते ॥ ३ ॥"

अर्थात् समान संस्कृति वाले लोगोंकी जितनी पितृभूमि और पुण्यभूमि होती है, उतनी सारी भूमिको मिलाकर (घेर कर, इकट्ठा कर) एक राष्ट्र कहते हैं। अथवा यों कहें कि राष्ट्रके लिये तीन मुख्य बातें अपेक्षित हैं:—१. समान संस्कृति, २. पितृभूमि और ३. पुण्यभूमि।

हम इससे पूर्व कारिकामें वर्णित राष्ट्रके इन तत्वत्रयों पर विचार करें, पहले राज्य, राष्ट्र और देश किसे कहते हैं, वे कितने होते हैं, तथा उनमें परस्पर क्या अन्तर होता है, इस पर कुछ विचार करें तो समुचित होगा। इससे राष्ट्रके पौर्वापर्य लक्षणोंका सम्बन्ध-परिज्ञान सुगम रहेगा।

ग्रन्थकी अवतरणिकामें आर्य और अनार्योंकी सभ्यताओंका संकेत किया है और 'व्यक्ति-शासन', 'संघ-शासन', तथा 'राज्य-शासन' और 'राष्ट्र-शासन' इस प्रकार चार प्रकार के शासनोंका उल्लेख किया गया है। जिनमें पहले दो प्रकार तो अनार्योंकी शासन व्यवस्थाके हैं, और दूसरे दो प्रकार आर्योंकी शासन व्यवस्थाके हैं, जो आपेक्षिक शांतिका प्रसार करते हैं, यह सम्यक् रूपेण निरूपित किया गया है। अब यहां क्रमशः पहले इन्हीं पर विचार किया जाता है।

१. व्यक्ति-शासन

सारे समूह पर केवल किसी व्यक्ति विशेषका ही शासन हो अथवा जहां व्यक्ति ही सार्वभौम बनकर चाहे जो करता हो, वह व्यक्ति शासन कहलाता है। वहां पर धर्म, कर्म, आचार, विचार, नियम आदि कुछ नहीं होते, डिक्टेटर ही सर्वेसर्वा होता है। इस प्रकारका शासन आसुरी शासन कहलाता है। पुराणोंमें वर्णित हिरण्याक्ष, हिरण्यकशिपु आदिके शासन इसी कोटिमें आ जाते हैं। व्यक्ति-हित प्रधान होनेसे इस प्रकारके शासनमें शांति या सुख तो नाममात्रको ही होता है।

२. संघ-शासन

इसी प्रकार कुछ छोटे छोटे राज्योंका मिलकर एक संघ बनता है, जिसे 'संघ शासन' कहा जाता है। 'संघ शासन'का आधार सदा स्वार्थ होता है। क्योंकि छोटे-छोटे निर्बल राज्य किसी प्रबल राज्यसे आत्म रक्षार्थ ही अपना संघ (फैडरेशन) बनाते हैं। यद्यपि भावना तो यह रहती है कि पारस्परिक संघसे समवेत समुन्नति हो, किंतु इन संघोंमें प्रायः 'मत्स्य-न्याय'का ही आधिक्य रहता

है। उदाहरणार्थ 'संयुक्तराज्य अमेरिका'को ही ले सकते हैं, जहांकी सरकार संघात्मक है और जो सुख समृद्धि व ऐश्वर्यकी दृष्टिसे अनुपम माना जाता है; आज उसकी क्या दशा है? एक ओर विश्वमें शांतिका घोष करते हुए भी दूसरी ओर समराङ्गणमें कूद रहा है, और वह भी शांतिके नाम पर। आज भी वहांका वर्णभेद और हब्शी लोगोंके साथ किया जाने वाला व्यवहार मानवताके नाम पर एक कलङ्क है। यही क्यों, पहले तो वहां की सरकारने 'कैपीटेशन ग्रांट' नामकी प्रथा चालू की थी, जिसके अनुसार पुराने निवासियोंके मस्तक एकत्र करने वाले व्यक्तिको सरकारकी ओरसे पुरस्कार दिया जाता था, ईसाई पादरी इसे 'परलोक प्राप्तिका धर्मानुष्ठान' बतलाते थे। इस प्रकारकी दशा अन्य संघशासनोंमें भी पाई जाती है, जहां शांति और सुखकी आड़में भयङ्करसे भयङ्कर घातकृत्य होते हैं। अतः ऐसी शासन व्यवस्था अनार्य व्यवस्था ही हो सकती है; और उसमें पूर्ण शांतिका सन्निवेश किस प्रकार हो सकता है।

३. राज्य-शासन

पूर्व वर्णित 'व्यक्ति-शासन' और 'संघ-शासन' से कुछ अधिक सुखप्रद राज्यशासन हो सकता है। क्योंकि वस्तुतः राजाका धर्म प्रजाका पालन होता है, यदि कोई राजा धर्मविमुख हो जाता है तो प्रजाको उसे हटा देने तकका अधिकार रहता है। वेन आदि इसके उदाहरण भी मिलते हैं। स्वयं भगवान् श्रीरामके यौवराज्य प्रसङ्ग पर दशरथ महाराजका मन्त्रियों द्वारा पूछा जाना इसको पुष्ट करता है। किन्तु यह स्थिति आदर्श राज्यमें ही होती है। तथापि राजाको धर्मका एक ऐसा अंकुश रहता है जिसके कारण उसे कर्तव्यका ज्ञान रहता ही है। इस दृष्टिसे राज्य शासन द्वारा शांति का अनुभव हो जाता है। किन्तु वह आंशिक रूपमें ही। वास्तवमें 'राजा' जब तक 'राजा' मात्र रहता है राज्य शासनमें शांतिकी सम्भावना होती है, किन्तु जहां राजा 'भूपति' या 'नृपति' बन बैठता है वहीं अशांतिका उदय होने लग जाता है। इसलिए व्यवस्था की दृष्टिसे राज्य पद्धतियां तीन प्रकारकी ही होती हैं, जिन्हें एकायतन, अनेकायतन और सर्वायतन संज्ञाएं दी जाती हैं। एकायतन पद्धति व्यक्ति-शासनका विकसित रूप होता है। और इसमें 'साम्राज्य-शासन' के दुर्गुण नहीं होते। एकाधिकारी होते हुए भी राजा धर्म व्यवस्थानुकूल नियमादि निर्मित करता है। इस पद्धतिका आदर्शराज्य 'मनु राज्य' कहा जा सकता है। वर्तमानमें पाई जाने वाली रियासतें (संघोंमें मिलनेसे पूर्व) इसी पद्धतिका विकृत रूप थी। अनेकायतन पद्धतिको 'जन-राज्य' संज्ञा दी जा सकती है, इस पद्धतिमें अनेक व्यक्ति या परिषद् ही नियम निर्माण करती है, और शासन चलाती हैं। एक प्रकारसे यह पद्धति गणराज्योंका ही सुसंस्कृत रूप है। वेदोंमें ऐसे जनराज्यों और समितियोंका वर्णन मिलनेसे ज्ञात होता है कि इस प्रकारकी पद्धतियां प्राचीन कालमें यहां भी प्रचलित थीं। सर्वायतन पद्धति वह राज्य पद्धति है, जिसमें सब लोग मिलकर अपनी व्यवस्था करते हैं—नियम बनाते हैं। जन-तन्त्र प्रणाली इसका ही एक रूप है और 'राष्ट्रशासन व्यवस्था'से यह मिलती जुलती सी ही पद्धति होती है। यद्यपि नैसर्गिक रूपसे राज्य पद्धतियां तीन प्रकारकी ही होती हैं, तथापि इनमें कई स्वाभाविक और कृत्रिम अथवा काल्पनिक, परन्तु अवश्य विचारणीय उपाधियोंके आधार पर अनेक अवान्तर भेद उत्पन्न हो जाते हैं। एकायतन और सर्वायतन ये दो प्रकार सर्वथा ऐकान्तिक, अतएव एकविध हैं। परन्तु अनेकायतन पद्धतिमें अन्य विविध पद्धतियोंकी समुत्पत्ति हो जाती है। इसके दो स्वाभाविक विभाग होते हैं—अल्पसंख्यायतन और बहुसंख्यायतन। बहुसंख्याका अर्थ वह श्रमिक वर्ग है जो लक्ष्मी शक्ति और सरस्वतीसे प्रायः हीन रहता है। यह पद्धति प्रायः सभी देशोंमें विद्यमान रहती ही है अतः एक विधिमें सम्मिलितकी जा सकती है। हां, अल्पसंख्यायतन राज्यपद्धतिका आधार शास्त्र, शस्त्र और उद्योग (पूंजी या धन) प्रायः होता है, जिसके कारण शास्त्रिक-सत्ता, शस्त्रिक-सत्ता और धनिक-सत्ता, ये तीनों सत्ताएं मूलतः एक दल उत्पन्न होती हैं। इन तीनोंमें से दो-दो के मिश्रणसे शास्त्रशस्त्रिक, शास्त्रधनिक, और धन-शास्त्रिक ऐसी तीन द्विदल सत्ताएं उत्पन्न होती हैं, उनमेंसे फिर महत्वके तारतम्यानुसार

शस्त्रशास्त्रिक, धनशस्त्रिक और धनशास्त्रिक ऐसी और भी तीन द्विदल सत्ताएं उत्पन्न होती हैं। इस प्रकार कुल छः प्रकारकी द्विदल सत्ताएं होती हैं। पुनः उसी प्रकार तीन मूलभूत एक दल सत्ताओंमें से तीनोंके समवाय और तारतम्यसे शास्त्र शस्त्र धनिक आदि छः त्रिदल सत्ताएं उत्पन्न होती हैं--और इनके भी पुनः अनेक भेद हो सकते हैं। पर यहां उस विशेष प्रपञ्च के निरूपणसे कोई लाभ नहीं। अतएव अनुपयुक्त समझकर अनेक भेदोंका निरूपण यहां पर नहीं किया गया है।

उपरोक्त लेखसे यह स्पष्ट हो चुका है, कि राज्यपद्धतिके मुख्य तीन भेद होते हैं और अनेकायतन-पद्धति के दो भेद होते हैं। तथा अल्प संख्यायतन पद्धतिके दलों सहित अठारह भेद होते हैं। इस प्रकार तेईस प्रकारकी या चौबीस प्रकारकी राज्यपद्धति तत्वतः होती है। यों तो राज्यपद्धतिमें और भी अनेक प्रकार दृष्टिगोचर होते हैं, जैसे—वार्णिक यथा गोरों की कालों पर, जर्मनोंकी यहूदियों पर अथवा अंग्रेजोंकी नीग्रों आदि पर। वांशिक—यथा ईसाइयों की यहूदियों पर अथवा जैसी सन् १८६५ से पहले दक्षिणी अमेरिकन राज्योंमें प्रचलित थी। राष्ट्रिक—यथा—इंगलैंड की हिन्दुस्तान पर। नागरिक— यथा पुराने रोम नगरकी तत्कालीन संसार में थी, अथवा जैसी कभी भारतकी विश्व भरमें प्रचलित हो गई थी। आदि आदि दूसरी अनेक सत्ताएं, पद्धतियां अलग अलग नामोंसे भले ही प्रकट हुई हो, किन्तु तत्वत: उनका समावेश उपर्युक्त अठारह प्रकारोंमें कहीं-न-कहीं हो ही जाता है। अल्प संख्यायतन-पद्धति के ही नात्सीवाद फासिस्टवाद आदि भेद हैं जो विशेषकर योरोपमें प्रचलित हैं। हिंसा, यन्त्र, पूंजी उनके प्रमुख प्रसाधन हैं, और बहुसंख्यकोंका अज्ञान उनकी दुर्बलताकी भित्ति पर ही यह प्रासाद निर्मित है। बहुसंख्यायतन-पद्धतिका रूसमें बड़ा दम्भ भरा जा रहा है, जिसे सोशलिज्म अथवा राष्ट्रीयकरणके जैसे सुन्दर नाम दिये गये हैं। किन्तु स्टालिनकी वर्तमान नीतिको देखकर यह सहज जाना जा सकता है कि शस्त्रधारण, धनसंग्रह और उसके रक्षणमें अल्प संख्यकों द्वारा कितना अधिक कूटनीतिका प्रयोग किया जा रहा है। अतः इसे बहुसंख्यायतन कैसे कहा जा सकता है?

सांख्यके तीन गुणोंकी भांति राज्यमें भी शास्त्र, शस्त्र और धन ये ही तीन वस्तुएं मूलाधार होती हैं। वस्तुतः किसी राजाकी व्यक्तिगत सत्ता मान लेने पर भी राज्य उसका एकांगी नहीं होता, उसका भी अमात्यादि सहायक वर्ग होता है जो बहुसंख्याश्रित रहता है। सर्वायतन पद्धतिमें भी अन्तिम प्रमाणभूत कुछ व्यक्ति रहते ही हैं। जनता सभी स्थितियोंमें जीवननिष्ठ रहती है और सुखसे जीना मात्र चाहती है। फलतः तत्वज्ञानी और व्यवहारी भिन्न-भिन्न प्रकारके वाद या व्यवस्था सम्बन्धी पद्धतियां शास्त्र, शस्त्र और धनके आधारों पर निर्मित करते रहते हैं। सिद्धान्ततः राज्यस्थापनमें सदुद्देश्य ही रहता है। धर्मपूर्वक प्रजाकी रक्षा करना ही उसका लक्ष्य भी होता है, पर जब वर्षाकालीन सूर्य किरणों-सा यह आदर्श स्वार्थ-तिमिराच्छन्न हो जाता है, तभी यह व्यवस्था दोषपूर्ण हो जाती है—और इसीको लक्ष्य में रख महाराज रन्तिदेवने कहा था— 'न त्वहं कामये राज्यम्'। अन्यथा भारतवर्षके लिये तो राज्यपद्धति अत्यन्त सुखदायिनी सिद्ध हुई है। और अब भी भगवान् श्रीराम, दिलीप, रघु आदि पुण्यश्लोक राजाओंका नाम स्मरणमात्र भारतीयोंको पुलकित कर देता है। विचार करने पर इस प्रकार आदर्शपूर्ण राज्य पद्धतिके निम्न दस तत्व प्रतीत होते हैं—

१. सार्वप्रजिक भ्रातृभाव।

२. सब प्रजाजनोंमें ज्ञानपूर्वक, यथाशक्ति, सहजस्फूर्ति और हार्दिक प्रेमपूर्ण सहयोग।

३. समर्थ अल्पसंख्यक और सर्व सामान्य बहुसंख्यकोंका हितैक्य।

४. सबके सर्वाङ्गीण विकासकी समान व्यापक उदार दृष्टि।

५. राज्य सत्ताका व्यापकतम विभाजन।

व्यवसाय और धर्म

[लेखकः— श्री वसन्तीलालजी मालपानी]

एक ऋषि ध्यान-मग्न हो एक वृक्षके नीचे तपस्या में बैठे थे। आंखें खुलीं और ऊपर दृष्टि पहुंची। वृक्ष पर एक कौआ बैठा था, भस्म होकर नीचे गिर पड़ा। ऋषिको तपस्या सिद्धिका उन्माद हो उठा। उन्मत्त होकर पासकी नगरीमें गये और एक गृहस्थके यहां आतिथ्य मांगा। पतिव्रता स्त्री पति-सेवामें लगी हुई थी, अतएव उत्तर मिला—"आप विराजिये, मैं आतिथ्य सेवाके लिए उपस्थित होती हूं।" थोड़ा समय हुआ, तपस्या-सिद्धि की सफलताके उन्मत्त अवस्थामें ऋषिने बाहरसे उतावलापन प्रदर्शित किया। पतिव्रताने उत्तर दिया—"महात्मन्! यह कौआ नहीं है, जो भस्म हो जाय, कृपया शांति रखें।" ऋषिने विचारा कि इस स्त्रीको कौएकी बात कैसे ज्ञात हुई और इस विचारसे मस्तिष्ककी उन्मत्तता विलीन होकर चित्तमें थोड़ी शान्ति उत्पन्न हुई। पतिव्रता स्त्रीके आतिथ्यको प्रेमसे ग्रहण कर पूछा—"देवी! आपको कौएके भस्म होनेकी बात कैसे ज्ञात हुई?" उत्तर मिला—"आप कृपा कर अमुक कसाईके पास पधारिये, वहां आपके प्रश्नका उचित निराकरण हो जायेगा।" ऋषि आश्चर्य और कौतूहलमें निमग्न हो गये और यथाशीघ्र कसाईके स्थान पर पहुँचे। कसाईने ऋषिको प्रणाम किया और कहा—"आप कौएकी बात पूछने आए हैं, भगवन्?"

६. अल्पतम और नियमानुकूल शासन।
७. सुलभतम तन्त्र।
८. न्यूनतम व्यय।
९. न्यूनातिन्यून रक्षा। (स्वावलम्बिता)
१०. सार्वत्रिक, अव्याहत, उन्मुक्त उचित ज्ञान प्रसार।

(क्रमशः)

ऋषिको और आश्चर्य हुआ और पूछा—"आप कसाई हैं! आपको मेरे मनकी बात कैसे ज्ञात हुई?" कसाईने उत्तर दिया—"मेरे पूर्वजन्मके कर्मका फलस्वरूप यद्यपि मुझे कसाईकी वृत्ति प्राप्त हुई है, किन्तु मैंने अपने यहां यह नियम बना रखा है, कि 'सच बोल और पूरा तौल।' मैं अपना पेशा करता हूं। मेरे यहां चाहे बालक आये, चाहे वृद्ध; चाहे स्त्री आये, चाहे पुरुष, एक भाव और एक वजनसे उसकी प्राप्य वस्तु उसे दी जाती है। बस एकमात्र इसी कर्त्तव्य-परायणताके पुण्य-स्वरूप आपकी सारी बातें मुझे ज्ञात हैं। आपको सिद्धिका उन्माद हुआ, वह अब शान्त हुआ, आप पुनः तपस्या आरम्भ करें; आपको तब वास्तविक सिद्धि प्राप्त होगी, ऋषिने वन-में प्रस्थान किया और तपस्या आरम्भ की।

उपर्युक्त कथानकसे यह सिद्ध होता है कि व्यवसाय के साथ भी धर्म चिपका हुआ है, किन्तु इस कलियुगमें इस प्रकारका व्यवसाय नष्टप्राय हो चुका है। यही कारण है कि जितना अधिक व्यवसाय उतनी अधिक अशान्तिको सह-चारिणी बनाकर चलना पड़ता है। कलियुगकी वायु ज्यों-ज्यों वृद्धिंगत होती गई, त्यों-त्यों व्यवसाय और धर्म पृथक् पृथक् होते गये। कलियुगमें कलायुगका आरम्भ हुआ। कलियुगकी समृद्धिके साथ काले युगने स्थान ग्रहण किया, जहां-तहां कालेबाजारकी चर्चा दृष्टिगत है। ज्ञान, विज्ञानके आवरण से आवृत हो गया। "जैसी बहे बयार पीठ तब तैसी कीजै"की उक्तिके अनुसरणके अतिरिक्त दूसरा कोई मार्ग संसारके पास रहा नहीं। विज्ञानने संसारकी उन्नति की अथवा संसारको वास्तविक ज्ञानसे विगत-ज्ञान किया, यह तो समय ही सिद्ध करेगा। पर अब यह स्पष्ट हो चुका है कि वर्तमान समयमें लोगोंने धर्मको व्यवसायसे पृथक्

वस्तु बना लिया है। व्यवसायमें धर्मकी चर्चा करना लोगों के लिए एक उपहासका विषय हो गया है।

एक बार श्रीमद्भागवत्का उपदेश हो रहा था। एक प्रसङ्ग आया कि—"अमुक लाभसे अधिक लाभ करने वाला व्यक्ति अमुक नरकमें जाता है।" बात इतनी स्पष्ट है, जितना सूर्यका प्रकाश। यदि नफेका प्रमाण व्यवसाय में रहता है, तो भी न वस्तुओंकी कमी दृष्टिगत होती, न कालाबाजार ही फैला हुआ होता। न कण्ट्रोलका कांटा चुभा करता और न टेक्सोंकी खटखट प्रतिदिन खड़ी रहती। न तेजी-मन्दीका तूफान मस्तिष्ककी नसोंको चाटता और न सुखकी नींदके समय टेलीफोनोंकी झंकार झनझन करती रहती। न नोटोंके नखरोंका नग्न-नृत्य दृष्टिगत होता और न संसार लालसा और वासनाओंकी विषैली लपटोंमें झुलसता। यह है व्यसायको धर्मसे पृथक् कर देने का परिणाम। अब तो व्यवसायमें केवल यह बात रह गई कि—

"धर्मस्य तत्वं निहितं गुहायां,
महाजनो येन गतः स पन्थाः।"
"कलिमल ग्रसेउ धर्म सब,
गुप्त भये सद्ग्रन्थ।
दम्भिन निज मत कल्पिकर,
प्रकट किये बहु पन्थ॥"

बादशाह अकबरके जीवनकी एक कथा है, वे जङ्गलमें जा रहे थे। प्यास लगी। एक खेतमें बुढ़ियासे उन्होंने जल मांगा। बुढ़ियाने एक गन्ना तोड़ा और उसके सुमधुर जल से एक गिलास भर गया। वह गिलास बादशाहको दिया। बादशाहको परम सन्तोष और सुख हुआ, परन्तु साथमें ही मस्तिष्कमें यह कलुषित विचार आया कि जिस एक गन्नेमें इतना जल है, उस मालिककी पैदाका क्या ठिकाना? कुछ दिन पश्चात् बादशाह उधरसे पुनः निकला, उस माताले पुनः पानी मांगा। बुढ़ियाने ३-४ गन्ने तोड़े, जब कहीं जाकर गिलास भरा। बादशाहने मातासे पूछा कि "उस दिन एक गन्नेसे गिलास भर गया था, आज तीन-चार क्यों तोड़ने पड़े?" बुढ़ियाने उत्तर दिया कि "राजाकी नीयत बिगड़ गई।" बादशाह समझ गया। आज राजाकी नीयतमें जो है वह भी स्पष्ट है। व्यवसाय में भी धोखेबाजीका पैसा सबको खाना है। पराये धन पर दीपावलीका दीपोत्सव जगमगानेकी भावना जहां-तहां जागरित है। राज्य कानूनोंकी ओटमें व्यवसायका गला घोंटता है। नीयत साफ नहीं, बरकत कहांसे हो? व्यवसायियोंको अपने स्वार्थकी पड़ी है, किसानोंको सोना, चांदी इकट्ठा करना है, मजदूरोंको लोगोंकी बातोंमें आकर मालिकोंसे बगावत करनी है, नेताओंको गगनध्वनि सूचक और नभोवाणी यन्त्रोंसे मनमोहक बातें कर अपना नेतृत्व जमाये रखना है। इन सब तूफानोंसे पार होकर व्यवसायियोंको व्यवसाय करना है। धर्म भी गया, नियत भी बिगड़ी, अब तो समय का खेल है। यह है हमारे आधुनिक युगका विकास, उन्नति कर्त्तव्य और व्यवसाय।

संसारकी जो हवा है, वह व्यवसायके सामने है। इस हवासे बच कर चलना बड़ा कठिन और दुष्कर कार्य है। आजका युग अर्थ-युग है। संसारका समस्त व्यवहार विशेष रूपसे व्यवसाय पर निर्भर है। प्रत्येक देशकी उन्नति उसके व्यवसाय पर अवलम्बित है। व्यवसायोन्नति के साथ देशोन्नति सम्भव है। व्यवसायका जीवन देशका जीवन है। ऐसी अवस्थामें देश-भक्तिके नाते व्यवसायियों का कर्त्तव्य बहुत बढ़ गया है। भारतवर्षने सदैव अपना स्थान सर्वोच्च रखा है। आज वह सर्वोच्चता भारतके व्यवसायियोंसे इस ऋषिकी तपस्याकी प्रतीक्षा कर रही है। आज तककी सफलताओंसे यहांके व्यवसायियोंमें यत्किञ्चित् उन्माद उत्पन्न हो गया है। उन्मत्तताके दोष दिन-प्रतिदिन बढ़ रहे हैं। हमें प्रयास करना चाहिये कि हम इन दोषोंके शिकार न बनें। व्यवसायको एकमात्र धन-प्राप्तिका ही केन्द्र नहीं बनाना चाहिये, वरन् इसके अन्तर्गत धर्म, नीति, कर्त्तव्य, दानशीलता, परोपकारिता, दया, आश्रितोंकी सुरक्षा आदि सद्गुणोंका भी यथाशक्य समन्वय करनेका प्रयत्न करना चाहिये। प्रयत्नोंकी सफलतामें ही वास्तविक सुख और शान्ति सन्निहित है।

—★—

घटखर्पर काव्य

[लेखक :— श्री प्रो० बलजिन्नाथ पण्डित शास्त्री एम. ए., एम. ओ. एल.]

संस्कृत साहित्यके पाश्चात्य इतिहास लेखकोंने अपने ग्रन्थोंमें लिखा है कि—'घटखर्पर-काव्य भी कालिदासके नाम पर प्रसिद्ध है, परन्तु यह काव्य वस्तुतः कालिदासने नहीं बनाया है, यों ही किसीने उसके नाम पर लिख दिया है। क्योंकि एक तो मल्लिनाथने इस पर टीका नहीं लिखी है और दूसरे इस काव्यके सभी श्लोकोंमें यमक अलंकार है। कालिदास जैसे रसिक कवियोंने यमकबहुल कविता नहीं लिखी, क्योंकि यमकोंमें केवल शब्दाडम्बर ही होता है और यमक प्रायः रसविच्छेद कारक होते हैं।' आधुनिक भारतीय विद्वान् भी प्रायः अपने पाश्चात्य आचार्योंका ही अनुसरण करते हैं।

ज्योतिर्विदाभरणकारने तो घटखर्पर-काव्यका रचयिता 'घटखर्पर' नामक कविको माना है। उसके मतमें तो घटखर्पर कालिदासका समकालीन था और विक्रमादित्यके नवरत्नोंमें एक था। परन्तु अब यह सिद्ध हुआ है कि ज्योतिर्विदाभरणकारका यह श्लोक—

"धन्वन्तरिक्षपणकामरसिंह शङ्कु,
वेतालभट्ट घटखर्पर कालिदासाः।
ख्यातो वराहमिहिरो नृपतेः सभायां
रत्नानि वै वररुचिर्नव विक्रमस्य॥"

उसकी अपनी कल्पनामात्र है। इस श्लोकमें कोई ऐतिहासिक सत्य नहीं है। इसमें ऐसे आचार्योंको इकट्ठे गिना गया है जो एक दूसरेसे कई कई शताब्दियां दूर हैं। अतः इस श्लोकको प्रमाण नहीं माना जा सकता। इसके आधार पर 'घटखर्पर काव्य'के निर्माताका निर्णय नहीं हो सकता।

इतिहासकारोंके अरुचिपूर्ण निर्देशके संस्कारसे प्रायः छात्रों और विद्वानोंको घटखर्पर काव्यको खोल कर पढ़नेकी प्रवृत्ति ही नहीं होती। 'यह काव्य यमक बहुल है' इसी संस्कारसे मुझे भी इसको देखनेका सौभाग्य चिरकाल तक प्राप्त नहीं हुआ। जब काश्मीर राज्यके रिसर्च विभागने आचार्य अभिनव गुप्तकी लिखी हुई इस काव्यकी विवृतिको प्रकाशित किया तब आचार्यके नामके महात्म्यसे मुझे इस काव्यको देखनेकी इच्छा तो हुई थी, परन्तु मैं आचार्यजीके अन्य ग्रन्थोंके अध्ययन में संलग्न था, इस कारण घटखर्परका पढ़ना स्थगित ही रह गया।

गत वर्ष ग्रीष्मकालमें एक पण्डितजी इस पुस्तिकाको मेरे पास ले आये और मुझसे इसका हिन्दी अनुवाद लिखनेकी प्रार्थना करने लगे। उस समय मुझे इस पुस्तक रत्नको देखने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। मैंने इसके श्लोकोंको पढ़ा और अपने मित्रोंको भी पढ़ कर सुनाया। वे यद्यपि संस्कृत नहीं जानते थे फिर भी श्लोकोके शब्दोंके माधुर्यसे अतीव प्रसन्न हो गये। दो तीन श्लोकोंका अर्थ भी मैंने सुना दिया। इस पर वे आनन्दमें मग्न हो गये। मेरे तो आनन्दकी कोई सीमा नहीं रही। मैंने सचमुच एक छिपा हुआ रसका खजाना ही प्राप्त किया।

यह सत्य है कि काव्यके समस्त श्लोकोंमें पादान्त यमकालङ्कार है। यह भी सत्य है कि आनन्दवर्धनाचार्य आदि आलङ्कारिकोंने कहा है कि—'सामर्थ्य होने पर भी शृंगाररसपूर्ण ध्वनि काव्यमें कविने यमक आदि अलङ्कारोंकी रचना नहीं करनी चाहिए, विशेष करके विप्रलम्भ शृंगारमें।' घटखर्पर काव्य विप्रलम्भशृंगारसे ही आरम्भसे लेकर अन्त तक ओत-प्रोत है। यह है भी ध्वनि काव्य। परन्तु आश्चर्यकी बात यह है कि यद्यपि यमक रस विच्छेद कारक होता है, फिर भी इस काव्यकी रचनाशैली ऐसी दिव्य है कि यहां यमक कहीं भी रसभङ्ग नहीं करता, उलटा सर्वत्र रसका उत्कर्ष ही कर रहा है। यह तो कवित्व शक्तिका ही माहात्म्य होता है कि दोष भी कहीं औचित्यके कारण गुण बन जाता है। इस बातको अलङ्कार शास्त्रके मर्मज्ञ आचार्य

मम्मटने भी मान लिया है। काव्यके इस उत्कर्ष पर प्रकाश डालनेके लिए ही आचार्य अभिनवगुप्तने इस पर विवृति लिखी है। कविको भी स्वयं इस बात पर बड़ा अभिमान है कि इस काव्यमें यमक भी विप्रलम्भ श्रृंगार रसके परिपोषक बने हैं। काव्यके अन्तिम श्लोकमें कविने कहा है—

भावानुरक्तललनासुरतैः शपेयम्
आदाय चाम्बु तृषितः करकोशपेयम् ॥
जीयेय येन कविना यमकैः परेण
तस्मै वहेयमुदकं घटकर्परेण ॥

(अर्थात्—मैं अंजलिमें जल उठा कर शपथ खाता हूं और प्रेमसे अनुरक्त सुन्दरीके रत्युत्सवोंकी शपथ खाता हूं, कि जो कोई भी कवि मुझे यमकोंके प्रयोगमें जीत लेवे, मैं जीवन भर टूटे घड़ेके खप्परमें उसके लिए पानी भर भर लाऊंगा।)

इस अन्तिम पद्यके अन्तिम शब्दके ही कारण इस काव्यका नाम घटकर्पर काव्य पड़ा है। बम्बईके एडिशनमें घटखर्पर शब्द है। परन्तु कश्मीरके छापेमें 'ख' के स्थान पर 'क' है। अस्तु। तो यह स्पष्ट हो गया कि घटकर्पर काव्यका नाम है, यह कविका नाम नहीं। काव्यको भी सम्भवतः 'घण्टा माघ' और आतपत्र भारवि' जैसे नामोंकी तरह लोगोंने यह नाम दिया है। हो सकता है कि कविने इसका नाम कुछ और रखा हो। परन्तु यह सत्य है कि इसी नामसे काव्यकी प्रसिद्धि हुई और ज्योतिर्विदाभरणकार तथा आचार्य अभिनवगुप्तके सामने काव्य इसी नामसे आया।

इस काव्यका कवि कौन है? घटकर्पर कवि तो एक काल्पनिक व्यक्ति है, ऐतिहासिक नहीं। काव्यमें कहीं भी कविका नाम नहीं दिया गया है। न ही किसी और कवि या आचार्यके ही नामका कोई उल्लेख है। विप्रलम्भ-श्रृंगारके विभावों अनुभावों और व्यभिचारीभावोंको छोड़ कर किसी भी वस्तुका वर्णन इस काव्यमें नहीं है। यहां तक कि नायक और नायिकाका भी नाम नहीं बताया गया है। नायिकाको तो श्रृंगार रसकी एक असाधारण मूर्ति ही समझो। बस इतना ही कविने पर्याप्त माना है। शायद नाम कहनेसे भी श्रृंगार रसकी घनतामें कुछ शैथिल्य-सा आ जाता या रूतान्तर सा हो जाता। ऐसी स्थितिमें कविका निर्णय कैसे किया जा सके? बस दो ही उपाय हैं—१. प्रसिद्धि और २. शैलीकी परीक्षा। एक प्रसिद्धि तो ज्योतिर्विदाभरणमें दी गई है जोकि कोरी कल्पनाके ही आधार पर खड़ी की हुई प्रतीत होती है। दूसरी प्रसिद्धि यह हैकि इस काव्यके निर्माता महाकवि कालिदास हैं। इस प्रसिद्धिका उल्लेख पाश्चात्यविद्वानोंने भी किया है, जैसाकि आरम्भमें ही बताया गया। इस दूसरे पक्षमें हमें सौभाग्यसे आचार्य अभिनवगुप्त जैसे प्रकाण्ड विद्वान्की भी साक्षी मिल रही है। उन्होंने इस काव्यकी विवृतिमें लिखाहै—'किञ्च अत्र कर्ता महाकविः कालिदास इत्यनुश्रुतमस्माभिः।' इस साक्षीके विरुद्ध हमें कोई भी विश्वसनीय प्रमाण नहीं मिल रहा है। इस कारण भी यह साक्षी विश्वसनीय है।

शैलीसे भी यही प्रतीत होता है कि इस काव्यके निर्माता कालिदास ही हैं। सरस रचना और श्रृंगार रस ध्वनिमें आज तक संसार भरमें कालिदास जैसा दूसरा कोई कवि उत्पन्न नहीं हुआ। अब रही बात यमक अलङ्कारके प्रयोगकी, यह ठीक है कि कालिदासको इस प्रकारका शब्दाडम्बर पसन्द नहीं। परन्तु इससे यह सिद्ध नहीं होता कि उसने शपथ खा कर यमकोंका त्याग किया हो। हां, माघ और भारविकी भांति कालिदासने अलङ्कारोंको इतनी प्रधानता नहीं दी है जिससे रस और वस्तु तिरोहित हो जाएं। उसने तो सभी काव्योंमें अलङ्कारोंकी मात्रा औचित्यके ही अनुसार रखी है। तो घटकर्पर काव्यमें यमक होते हुए भी रसका तिरोभाव नहीं हो रहा है। उल्टा रस प्रकृष्ट बन रहा है। यमकोंके ऐसे हितकर प्रयोगको कालिदासके बिना और कौन कर सकता है? तो यह कहना कि 'यमक कालिदासकी शैलीके विरुद्ध हैं', निरी अन्धपरम्परा है।

इन्दुमतीकी मृत्यु पर अजके विलाप नायकके विलाप हैं, तो कामदेवके भस्म होने पर रतिके विलाप नायिकाके विलाप हैं। इसी प्रकारसे करुण विप्रलम्भको दोनों रूपोंमें कालिदासने दिखा दिया है। इसी प्रकारसे मेघदूतमें जहां विरहीका अलौकिक वर्णन है, वहां घटकर्परमें

विरहिणीका भी वैसा ही वर्णन है। इस तरहसे विरहको भी कालिदासने दोनों रूपोंमें दिखा दिया है। घटकर्पर और मेघदूतमें यदि कोई एक बिम्ब है तो दूसरा निःसंदेह उसका प्रतिबिम्ब है, यदि एक कालिदासकी पूर्व रचना है तो दूसरी अवश्य उसकी उत्तर रचना है। घटकर्परमें विरहिणी नायिका मेघोंको दूत बना कर अपने प्रियतमको अपना सन्देश भेज रही है। मेघदूतमें वह सन्देश बहुत विचारपूर्ण है और सोच समझ कर कहा गया है। परन्तु घटकर्परमें न विरहिणी नायिका विरहमें उन्मत होकर अपने हृदयके भावोंको यथार्थरूपमें ही मेघोंसे कह रही है। अपने प्रियतमको उलाहना भी दे रही है और उपदेश भी, अपनी अवस्थाका भी वर्णन कर रही है और उसकी अवस्थाका निर्देश भी, प्रियतमसे प्रार्थनाएं भी कर रही है और भावी अनिष्टकी आशंकाका संकेत भी। इसके अनन्तर उद्दीपन विभावको हाथ जोड़ कर उनसे करुणाकी याचना कर रही है, और साथ ही बीच बीचमें अपनी सखीसे कुछ वार्तालाप कर रही है। सखी उसको अद्भुत रीतिसे समझा बुझा कर आश्वासन दे रही है और इस प्रकारसे विरहकी दशवीं दशा अर्थात् मृत्युसे उसे बचानेमें सफल होती है। कौन श्लोक नायिकाका है, कौन सखीका है और कौन कविका, इस बात पर कवि मौन ही है। क्योंकि श्लोकके अर्थ और भावसे ही यह बात स्पष्ट हो जाती है। ऐसा प्रतीत होता है कि इस काव्यकी रचना करते समय उस नायिकाकी तरह स्वयं कवि भी भावोंमें ही तन्मय हो गया, और उस तन्मयता हीके कारण श्लोकोंके समन्वयकी ओर उसका ध्यान नहीं गया। इसका फल यह हुआ कि इस समय भी पढने और सुनने वाले भावमें पूर्णतया लीन होकर क्षण भरके लिए रसमय ही हो जाते हैं। अधिक क्या लिखें, यह लिखनेकी वस्तु तो नहीं। स्वयं अनुभव करनेकी वस्तु है। अतः सहृदय काव्यको पढकर स्वयं अनुभव करें और महाकवि कालिदासके इस प्रयत्नको सफल करें।

कुछ एक श्लोकोंको यहां उद्धृत करते हैं:—

व्रूत तं पथिकपांसुलं घनाः,
यूयमेव पथि शीघ्रलङ्घनाः।
अन्यदेशरतिरद्य मुच्यतां,
साथवा तव वधूः किमुच्यताम् ॥३॥

यमक और आक्षेप अलङ्कारकी संसृष्टि यहां रसकी अत्यन्त परिपोषक बन रही है।

नीलशष्पमभिभाति कोमलं,
वारि विन्दति च चातकोऽमलम्।
अम्बुदैः शिखिगणो विनाद्यते,
का रतिः प्रिय मया विनाद्य ते ॥५॥
किं क्षमापि तव नास्ति कान्तया,
पाण्डुगण्डपतितालकान्त या।
शोकसागरजले च पातितां,
त्वद्गुण स्मरणमेव पाति ताम् ॥६॥
कुसुमितकुटजेषु काननेषु,
प्रियरहितेषु समुत्सुकाननेषु।
द्रवति च कलुषं जलं नदीनां,
किमिति च मां समवेक्षसे न दीनाम् ॥८॥
तरुवर विनतास्मि ते सदाहं,
हृदयं मे प्रकरोषि किं सदाहम्।
तव पुष्प निरीक्षिताऽपदेहं,
विसृजेयं सहसैव नीप देहम् ॥१३॥

सबसे बड़ा आश्चर्य तो यह है कि यमकोंके होते हुए भी इस काव्यमें इतना प्रसाद गुण है जितना कालिदासकी अन्य रचनाओंमें नहीं मिलता। इन्हीं गुणों चमत्कारों पर गर्व करते हुए महाकविने काव्यके अन्तिम पद्य में ऐसा कठोर शपथ खाया है। इन श्लोकोंका अनुवाद मैंने यहां नहीं किया। क्योंकि श्लोक इतने सुन्दर हैं कि लेखनी अनुवाद करनेमें संकोच कर रही है। श्लोक तो स्वयं 'मधु नवमनास्वादितरसम्'के समान हैं, और इनका अनुवाद 'आसवस्येव शुक्तता'के समान हो जाएगा।

—۞—

भाग्यवाद और कर्मवाद

[लेखक :— ज्योतिर्विद् श्री पं० कन्हैयालालजी 'मत्त']

यद्यपि यह विषय विवादग्रस्त समझा जाता है परन्तु गहरे स्तरमें अध्ययन करने पर दोनों विचार धाराओंमें कोई विशेष विवाद नहीं जान पड़ता। भाग्य और कर्म एक दूसरेसे इतने निकट सम्बन्धसे जुड़े हुए हैं कि दोनोंके बीचमें कोई विभाजक रेखा खींचना अत्यन्त कठिन है। दोनोंमें अन्योन्याश्रितकासा सम्बन्ध है, अथवा यों कहिए कि जो भाग्य है वही कर्म है — और जो कर्म है वही भाग्य है।

हम जो भी कर्म करते हैं वे प्रायः हमारे चारों ओरके वातावरणसे स्फूर्त होते हैं और वह परिस्थितियां जिनमें हम रहते हैं प्रायः पूर्व निर्धारितसी जान पड़ती हैं। ऐसा जान पड़ता है मानों संसारका प्रत्येक कार्य, प्रत्येक घटना किसी पूर्व निश्चित कार्यक्रम अथवा विधानके अनुसार होता रहता है और मनुष्य अपनी योग्यताके अनुसार अपनी सीमामें बंधा हुआ अपने अनुकूल उनमें कुछ सुधार मात्र कर सकता है। इस सीमाबद्ध उछलकूदको ही वह अपनी 'स्वतन्त्रता' कह सकता है। जीव कर्म करनेमें स्वतन्त्र है केवल उसी सीमा तक जहां तक परिस्थितियां उसे अनुमति दें। जीव द्वारा असीम वा स्वच्छन्द चेष्टाओंकी कल्पना करना कोरी भूल है। इसका अभिप्राय यह नहीं कि हम किसी अदृश्य शक्तिके इतने आश्रित हैं कि बिना उसकी आज्ञाके हम साधारण दैनिक कृत्य तो क्या हाथ पैर भी नहीं हिला सकते। ऐसी कल्पना कदर्य है— आत्मघातक है। इसी कल्पनाके विरोधमें ही तो शास्त्रोंने —'दैवं निहत्य कुरु पौरुषमात्म शक्त्या' का आदेश दिया है। यह कर्तव्यहीन दैववाद है जिसका यदि उन्मूलन न किया जाय तो मानव समाजकी अधोगतिकी कल्पना करना भी कठिन है। हाथ पर हाथ धरे रहनेसे तो कुछ भी नहीं होता। इसके विपरीत परिस्थितियों पर विजय पाना अथवा उनमें आमूलचूल परिवर्तन कर देना भी मानव शक्तिसे परेकी वस्तु है। नियति पर आज तक किसी भी कर्मवादीने विजय प्राप्त नहीं की। वह भी अपने कर्मकलाप किसी अदृष्ट शक्तिको समर्पित करके फलकी सदाशा रखता है। भगवान् कृष्णके "कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन" का यही गूढ़ रहस्य है।

सम्राट् नैपोलियनका कथन था कि— 'असम्भव मूर्खोंके ही कोषमें मिलता है "Impossibility is the word which is found in the dictionary of fools" परन्तु जब उसकी विजय वाहिनी सेना रूसके दलदल में फंसी रह गई तब उसे भी नियतिके विधानके आगे नतशिर होना पड़ा। उसके मस्तिष्ककी विषम परिस्थितिका चित्र हमें उस समय मिलता है जिस समय वह कुछ समय एल्बा में बन्दी रहनेके पश्चात् कहता है —'एल्बा' में आनेके पूर्व मैं योग्य था।' नैपोलियनकी इन दोनों उक्तियोंमें परस्पर विरोधाभास है और ऐसा जान पड़ता है कि मानों ये दोनों वाक्य तत्कालीन परिस्थितियोंने उससे कहलवाये हों। यदि वास्तवमें संसारमें असम्भवका अस्तित्व न होता तो एल्बामें बन्दी होनेके लिये उसने कब प्रयास किया था? और बन्दी होनेसे पूर्व क्या उसने कोई भूल नहीं की? इसमें कोई संदेह नहीं कि उसने अपनी सीमित शक्तियोंका अधिकसे अधिक उपयोग किया। उस पर यदि भाग्य उसके अनुकूल न था तो इसमें उसका कोई दोष नहीं। उसका आत्मविश्वासके साथ अपनी शक्तियोंका उपयोग ही उसे महापुरुष बनाता है।

भाग्यको अपने अनुकूल बनाना मेधावियोंका काम है। कहावत है कि भाग्य वीर पुरुषका साथ देता है। अतः वीर पुरुष वही कहलाएगा जो अपनी ईश्वर प्रदत्त प्रतिभाका समुचित प्रयोग करे। नियतिके विधान कुछ ऐसे लचीले हैं कि मनुष्य यदि चेष्टा करे तो परिस्थितियों

को यथासम्भव अपने अनुकूल बना सकता है, परन्तु यह निश्चयपूर्वक नहीं कहा जा सकता कि परिवर्तित परिस्थितियोंका परिणाम उसके अनुकूल ही होगा। कार्यका निर्णय परिणामसे करना उतना ही अयुक्त है जितना परिणामका निर्णय कार्यसे करना। मनुष्यका यह स्वाभाविक गुण है कि वह कुछ न कुछ करता रहे। कुछ कार्य वह इच्छापूर्वक करता है और कुछ कार्य ऐसे होते हैं जो बरबस करने पड़ते हैं। अपनी योग्यताओंको जानकर जो प्रयत्न करता है प्रायः भाग्य उसका साथ देता है और इस प्रकार उसे जीवनका आनन्द प्राप्त होता है। अपनी योग्यताओंको आंके बिना—अथवा किसी बाहरी प्रेरणाओंसे जो व्यक्ति कार्य करता है चाहे भाग्य उसके अनुकूल ही रहे परन्तु उसे जीवनका आनन्द प्राप्त नहीं हो सकता।

कुछ लोग आलसी होते हैं और कामसे कतराते हैं। इसका अभिप्राय यह है कि वे अकर्मण्य तो हैं परन्तु 'कर्महीन' वा 'कर्मशून्य' नहीं। महालस्य उनका प्राकृतिक गुण है जो उन्हें जन्मजात संस्कारों द्वारा प्राप्त हुआ है। भाग्यकी परिभाषा कुछ लोगोंने इस प्रकार की है:—

'पूर्वजन्मकृतकर्म तद्दैवमिति कथ्यते'

पूर्वजन्ममें किया हुआ कर्म भाग्य कहलाता है। इस का फलितार्थ यह हुआ कि इस जन्ममें किया हुआ कर्म अगले जन्ममें भाग्य होता है तो एक ओर तो हम अपने पिछले कर्मोंका फल भोगते हैं और दूसरी ओर अगले जन्मके लिए भाग्य संचय करते जाते हैं। इसी कारण शास्त्रादि एवं महापुरुष हमें सत्कर्म करनेका आदेश देते आये हैं। पुनर्जन्म होता है या नहीं इस विषयमें मत भेद अवश्य है, परन्तु जो लोक पुनर्जन्मवादको मानते हैं अथवा उसपर आचरण करते हैं उनमें एक प्रकारका धार्मिक भाव होता है जो उन्हें सत्कर्म करनेके लिये प्रेरित करता रहता है। जो लोग पुनर्जन्मवाद पर विश्वास नहीं रखते उनका ध्येय प्रायः खाना पीना और मस्त रहना [Eat, drink and be merry] ही होता है। एक सीमित क्षेत्र न रहकर उनकी प्रवृत्तियां आत्म-केन्द्रित हो जाती हैं और ऐसे व्यक्ति अपनेसे भिन्न समाज वालोंके लिये प्रायः भय और अविश्वासका कारण बने रहते हैं।

अभी ऊपर हम कह रहे थे कि इस जन्ममें जीव अपने पिछले कर्मोंका फल भोगता और इस जन्मके कर्मों द्वारा अगले जन्मके लिये भाग्य निर्माण करता है। यह बात अक्षरशः ऐसी ही नहीं है, प्रायः यह भी देखा जाता है कि इस जन्मके कार्यका फल तत्काल इसी जन्ममें भी मिल जाता है। कल्पना कीजिए कि एक व्यक्तिने क्रोध वश अपने पुत्रकी हत्या कर डाली। इसका तात्कालिक परिणाम यह हुआ कि वह पुत्र-विहीन हो गया। आगे चल कर राज्य उसे मृत्यु दण्ड भी दे सकता है। यदि सौभाग्यसे वह उस दण्डसे बच गया तो आगे यह भी सम्भव है कि वह पश्चात्तापके कारण पागल हो जाय। इसी प्रकार कल्पना करते जाइये तो ज्ञात होगा कि एक कर्मके अनेकों परिणाम हो गये। कभी-कभी अनेकों कर्मों का केवल एक परिणाम ही दृष्टिगोचर होता है। यह केवल हमारा दृष्टि-दोष है। वास्तवमें एक परिणाम पर कार्यकी कल्पना करना हमारी भूल है। एक-एक कार्यके न जाने कितने-कितने परिणाम होते हैं और उनके फल भी न जाने कब-कब प्राप्त होते रहते हैं। और न जाने कितने कारणोंके उपस्थित होने पर एक कार्य होता है। पिछले दृष्टान्तमें उस व्यक्ति द्वारा पुत्र हत्या करनेके न जाने कितने कारण विद्यमान थे। न जाने कितने पूर्व जन्मों तथा इस जन्मके कितने संस्कारोंका यह फल हुआ। और यह फल भी क्या हुआ—स्वयं भावी परिणामोंके लिये कारण बन गया। फलतः कारण, कार्य और फलका निर्णय करना अथवा उनके बीचमें कोई विभाजक रेखा खींचना बड़ा कठिन हो गया। हमें यह पता नहीं रहा कि वास्तवमें हम कर्म करते हैं अथवा फल भोगते हैं? एक विधान है जिस में हम बंधे हुए हैं और जितनी स्वतन्त्रता हमें उस विधान द्वारा प्राप्त है केवल उसका ही हम उपभोग कर सकते हैं। इस स्वतन्त्रताका उपभोग करना कर्मठता है और उसे संज्ञात न करके केवल भाग्यका आश्रय टटोलना ही कर्तव्य हीन दैववाद है।

कभी कभी हमें ऐसे फल प्राप्त हो जाते हैं जिनके

लिये अपनी जानकारी में हमने कभी प्रयास नहीं किया। हम ऐसी घटनाओंसे चमत्कृत होकर इन्हें भाग्य द्वारा प्राप्त हुई निधि समझते हैं। परन्तु वास्तवमें यह भी पूर्व जन्मके किसी प्रकारका ही फल है। कभी कभी हमारे अनेकानेक प्रयत्नोंके करने पर भी कार्य सिद्धि नहीं होती यह भी हमारे किसी पूर्व जन्मके संस्कारका ही फल है।

फलित-शास्त्र इसी सत्यके सहारे अग्रसर होता है। कर्मवाद और भाग्यवादका जैसा सुन्दर समन्वय इसमें हुआ है, वह अन्यत्र देखनेमें नहीं आता। दृष्ट द्वारा अदृष्ट का प्रत्यक्षीकरण एवं अदृष्ट साधन द्वारा दृष्टको साध्य बनाना ये दो ज्योतिष-शास्त्रके मूलभूत सिद्धांत हैं। उन फलादेशों पर जब अनुभव जनित कल्पनाका रंग चढ़ जाता है, तब वे साकार सत्य बन कर 'चमत्कार' जैसे जान पड़ते हैं। वास्तवमें संसारमें चमत्कारोंका अस्तित्व ही नहीं है। मनुष्य अपने सीमिति ज्ञानको ही प्रमादवश ज्ञान की परम सीमा मान बैठता है और जब कोई ऐसी वस्तु घटित होती है, जो उसने उसके पूर्व न कभी देखी हो और न कभी सुनी हो तो वह इसे अद्भुत अथवा चमत्कारपूर्णके नामसे पुकारने लग जाता है। कालान्तरमें इन तथाकथित चमत्कारोंमें भी उसके लिए कोई विशेष आकर्षण नहीं रह जाता। ज्योतिषी द्वारा फलादेश सुन कर प्रायः लोग चकित हो उठते हैं, पर ज्योतिषका ज्ञान रखने वालेके लिए यह कोई विशेष बात नहीं। केवल ज्योतिष ही नहीं, अन्य विज्ञान भी चमत्कारपूर्ण हैं। क्या गणित, भौतिक शास्त्र, शल्यशास्त्र, रसायन विज्ञान आदिके नवीन आविष्कार कुछ कम चमत्कारपूर्ण हैं ? सच पूछो तो ये सभी विज्ञान ज्योतिषके अंग हैं, अतएव ज्योतिषशास्त्रका वास्तविक रहस्य समझनेके लिए इन अंगोंका पूर्ण ज्ञान प्राप्त करना परमावश्यक है।

जैसा कि पहले कह चुके हैं, ज्योतिष रहस्यका लक्ष्य कर्त्तव्यहीन कर्मवाद नहीं है। इसके द्वारा प्रवृत्तियोंको आधारभूत मान कर भाग्यादेश किया जाता है। जन्मकाल में जैसी ग्रह-स्थिति होगी, जातककी वैसी ही प्रवृत्तियां होंगी और जिन-जिन प्रवृत्तियोंसे जातक सम्पन्न होगा, वैसे ही उसके कार्य कलाप होंगे तथा उन्हींके अनुकूल उसे फल प्राप्त होंगे। प्रवृत्तियां प्राकृतिक हैं, अतः वे हमारे चारों ओरके वातावरणोंसे अवश्य स्फूर्त होती है। जन्मकालमें ग्रहों तथा नक्षत्रोंका स्पष्टीकरण तत्कालीन प्राकृतिक परिस्थितिका दिग्दर्शन करानेके लिए होता है। देश और कालके अतिरिक्त ऋतु, अयन, मास तिथ्यादि भी इन प्रवृत्तियों पर अपना विशेष प्रभाव रखते हैं। मनुष्य के रंग, रूप, स्वभावादि इन्हींके द्वारा सम्पन्न होते हैं। इन्हींके अनुसार उसके मस्तिष्कका विकास होता है और मस्तिष्ककी विकासावस्था जातककी लौकिक अवस्थितिकी परिचायक है। अतः यदि आपको किसी मनुष्यके जन्मकालीन देश, काल, ऋतु, मासादिका पता चल जाय, तो आप भी उसके विषयमें कुछ बता सकेंगे। तदुपरान्त यदि आपको इस विषयमें कुछ योग्य व्यक्तियों की अनुभव जनित सम्मतियां प्राप्त हो जाएं तो आप उनके आधार पर कुछ बातें अधिकारपूर्वक बतानेकी स्थितिमें हो जायेंगे। इसी प्रकार यदि आप अपने ज्ञान-कोषको बढ़ाते रहें तथा अन्य मनीषियोंके गवेषणापूर्ण अनुभवका विश्लेषण करते रहे तो आप एक दिन ऐसी बातें बताने लगेंगे कि लोग चकित रह जायें। यही फलितशास्त्रका आधारभूत सिद्धांत है। उसमें उन अनेकानेक महर्षियोंकी सम्मतियां हैं, जिन्होंने अपने जीवनभर इन प्रवृत्तियोंका प्रत्यक्ष अनुभव किया। अनुभव-जनित ज्ञान सर्वदा सत्य और लोकोपकारी होता है। उस पर अविश्वास करना अथवा उसकी उपेक्षा याने प्रत्यक्ष सत्य को अस्वीकार करना है। प्रत्यक्षवाद ज्योतिषशास्त्रकी सबसे बड़ी विशेषता है, जो अन्य शास्त्रोंकी तुलना में उसे सर्वोच्च पद प्राप्त कराता है। कहा भी है—

अन्यानि शास्त्राणि विनोदमात्रं,
न किञ्चिदेषां भुवि दृष्टमस्ति।
चिकित्सितं ज्योतिष-मन्त्रवादा,
पदेपदे प्रत्ययमावहन्ति ॥

कुछ लोग प्रश्न करते हैं कि जब प्रवृत्तियां ही मनुष्य को कर्म करनेके लिए प्रेरित करती हैं तो फिर उसे असफलता क्यों प्राप्त होती हैं ? जिसकी इन्जीनियर बननेकी

प्रवृत्ति होगी, वह इंजिनियर बन ही जायगा और जिसकी व्यापारिक प्रवृत्ति होगी, वह एक कुशल व्यापारी। फिर क्या कारण है कि मनुष्य जीवनभर किसी कार्यमें प्रवृत्त होता हुआ भी असफल रहा, परन्तु जब जीवनके अंतिम दिनोंमें उसने एक नए कार्यको आरम्भ किया, तो उसमें उसे बड़ी सफलता मिली, फलतः जो होना था वह होकर ही रहा। ज्योतिष उसे क्या लाभ पहुंचाता? इस प्रश्नमें वैज्ञानिक भूल है। जो लोग फलितशास्त्रके मर्मसे भिज्ञ हैं वे जानते हैं कि ज्योतिष उसे क्या लाभ पहुँचाता, वह चाहे उसकी भौतिक हानिको लाभ में परिणित न करता परन्तु उसकी तात्कालिक प्रवृत्तियोंका निर्देश अवश्य कर इस प्रकार उसे भयंकर हानिकी ओरसे सचेत कर देता। उस व्यक्ति द्वारा जीवनके अंतिम दिनोंमें किये गये व्यवसायकी प्रवृत्तिका निर्देश करके उसके लिए साधारणसे अधिक लाभकी सम्भावना बना देता। हानिके दिनोंमें उसे साहसिक कार्य करनेके विरुद्ध चेतावनी देता और लाभके दिनोंकी ओर संकेत करके उस व्यक्ति में आत्म-विश्वासकी मात्रा बढा देता। प्रायः लोग इसी प्रकारके प्रश्न किया करते हैं और इस प्रकार वे सर्वोपयोगी विद्यानके लाभसे वंचित रह जाते हैं। ज्योतिषियोंका भी यह कर्तव्य है कि वे ऐसी शंकाओंका समुचित समाधान करें और फलित ज्योतिषके यथार्थ स्वरूपका जनतामें प्रचार करें।

एक और गंभीर प्रश्न है। प्रायः लोग समझते हैं कि यदि किसी व्यक्तिको उसका कटु-भविष्य बता दिया जावे तो उसका मानसिक संतुलन इस प्रकार हो जावेगा कि उसका कुफल उसे अवश्य भोगना पड़ेगा। सुफल चाहे उसे प्राप्त न हो दुष्ट फल अवश्य भोगना होगा। यह भी एक प्रकारकी अवैज्ञानिक शंका ही है। यदि किसी व्यक्ति से यह कह दिया जावे कि उसे जलसे भयकी सम्भावना है तो यह आवश्यक नहीं कि वह डूब कर मर जायगा। शास्त्र द्वारा तो कुफल और सुफल दोनोंका ही परिज्ञान होता है। ऐसी दशामें यह कहना कहां तक उचित है कि कुफल तो अवश्य होते हैं और सुफलोंकी संभावना संदिग्ध है। इस विषयमें इतना तो स्वीकार किया जा सकता है कि अपने पूर्वजोंकी अपेक्षा हम लोगोंकी सहन-शक्ति हीन हो गई है। जिस साहस और धैर्यके साथ जीवनकी विषमताओंका वे सामना करते थे वह दुर्भाग्यसे हमें प्राप्त नहीं है।

पहले लोग ज्योतिष-शास्त्रका सम्मान करते थे और कुशल ज्योतिर्विदों द्वारा अपने भावी कुफल या सुफलको जानकर प्रसन्न होते थे और साहसपूर्वक उसकी प्रतीक्षा करते थे।

कभी कभी मनुष्य अपने दुर्भाग्यको बदलनेके लिए बड़े बड़े भीषण कार्य करने पर उतारु हो जाता है। मैं एक मित्र को जानता हूं जिसके सात कन्याएं थी और उसकी आर्थिक स्थिति साधारण थी। आठवीं बार जब उसकी स्त्रीको गर्भ हुआ तो उसने उसे गिरानेके लिए बड़ी बड़ी औषधियोंका प्रयोग किया। दैवयोगकी बात कि गर्भ नहीं गिर सका परन्तु बच्चेका जन्म होनेके पश्चात् उसकी स्त्री एक वर्ष तक भयंकर रोगोंमें ग्रस्त रही। यदि यह व्यक्ति हमारे पूर्वजोंके कालका होता तो उसकी मानसिक स्थिति इतनी दुर्बल न होती और वह उसे दैवेच्छा समझ कर अंगीकार कर लेता। तत्कालीन इतिहासमें ऐसी अनेकों कथाएं मिलती हैं, जब ज्योतिषियोंने लोगोंको वृद्धावस्था तक संतान न होनेके योग बताये और उनकी उस अवस्था तक संतान न होनेके कारणों पर भी प्रकाश डाला। कालावधिमें उन कारणोंके दूर होने पर उन्हें संतान प्राप्त हुई। परन्तु आजके मनुष्य की मानसिक स्थिति इतनी सबल नहीं रही वह आपत्तियोंसे इतना घबरा जाता है कि किसी भावी आपत्तिकी पूर्व-कल्पना ही उसके लिये एक भयानक आपत्ति बन जाती है। ऐसी दशामें कुशल ज्योतिषियोंका यह कर्तव्य है कि वे उन कटु फलोंको मधुर एवं स्निग्ध भाषामें जिज्ञासुओंको बतावें और ज्योतिषके सत्यस्वरूपका अधिकसे अधिक प्रचार करें। इससे दो लाभ होंगे, एक ओर तो शास्त्रके प्रति लोगोंकी आस्था एवं विश्वास दृढीभूत होते जायेंगे और दूसरी ओर जनताके विचारोंका मान दण्ड इतना पुष्ट और परिपक्व हो जायगा कि भविष्यमें ऐसी छोटी छोटी शंकाएं एवं भय उनके मस्तिष्कमें स्थान ही न पा सकेंगे।

———

प्रश्न कुण्डली द्वारा भाग्योदयास्त कालनिर्णय

[ले०—श्री पं० कालीचरणजी शर्मा ज्योतिर्विद्]



जन्म पत्रिकाके द्वादश भावोंमें भाग्य भवनका महत्व निर्विवाद सिद्ध है, अतएव भाग्योदय-अस्त-काल सम्बन्धी निर्णय सशास्त्र किया जाता है।

नवम भाव

संज्ञा— भाग्य, त्रिकोण, धर्म, पुण्य। अङ्ग-विभाग— जंघा। विचारणीय विषय— भाग्योदय, शील, वीर्य, मनःप्रवृत्ति, पुराणश्रवण, दीक्षा, दीर्घायुः, पौत्र, प्रतिष्ठा, विद्या, तप।

(१) भाग्येश ग्रह बलवान् होनेसे मनुष्य भाग्यशाली होता है। (२) भाग्य भवन पर अनेक ग्रहोंकी दृष्टि हो तो उसके भाग्यशाली होनेमें अनेक मनुष्योंका हाथ होता है, तथा उसे भाग्योदयके समय बहुत मनुष्योंकी सहायता लेनी पड़ती है, तथा वह स्वयं भाग्य-वृद्धि देने वाले कार्योंमें असमर्थ रहे। (३) भाग्य-भवन देखनेमें यह विशेष है कि—भाग्येश ६-८-१२ भावमें शुक्रके घरमें बैठा हो तो मनुष्यका भाग्य भाग्येशकी दशामें प्रारम्भमें उन्नत होकर बिगड़ जाता है— परन्तु भाग्येश शनि १२ वें भावमें अथवा मंगल भाग्येश ६ठे भावमें हो तो भाग्येशका ६।१२ भावमें होना अधिक कष्ट दायक नहीं होता, बल्कि पहले भाग्य हानि और पीछे गत संपदाको वही भाग्येश लौटा लाता है। (४) भाग्य भावनमें अधिकतर सौम्य तथा शुभग्रहकी दृष्टि विशेष शुभदायक होती है। (५)— भाग्यभवनमें तृतीयेश ही बैठा हो तो नौकरीका योग बन जाता है और जन्म पत्रमें बुधादित्य योग हो तो यही नौकरीका योग राजयोग बन जाता है। (६) नौकरीके योगके साथ केमद्रुम योग हो तो, यही योग भिक्षुक होनेका कारण बन जाता है। प्रव्रज्या योगके साथ यह योग होनेसे यही योग अपरिग्रही (योग) साधु बनाता है। (७)— भाग्यस्थानका स्वामी तथा लग्नेश लग्नसे ७ गृहके भीतर बैठा हो तो— मनुष्य भाग्यशाली प्रतिष्ठित होता है। (८)— लग्नेश दशममें बली होकर बैठा हो और साथ ही राज योग भी हो तो मनुष्य प्रतापी राजवैभव सम्पन्न होता है। महत् पदाधिकारी जनोंके लग्नेश क्रूरग्रह हो तो ही वे प्रजासे सम्मानास्पद होंगे और प्रजाका शासन सुचारू रूपसे कर सकते हैं। अन्यथा वह अपने अमात्य आदिके हाथ कठपुतली बन जाते हैं। भाग्येश यदि ६ठे भावमें मित्र क्षेत्री बैठा हो तो भी जमींदारी खरीदनेका तथा बाप दादाके समयकी जमींदारीका योग करता है।

प्रश्नसे भिन्न-भिन्न प्रकृतिके मनुष्योंके भाग्योदयास्त — काल

पृच्छायां गौरगात्राणां यत्र मासे गुरोर्भवेत्।
उदयस्तत्र मासे स्यात् पुंसामस्तेऽस्त मादिशेत् ॥१॥
पृच्छायां श्यामगात्राणां यत्र मासे कवेर्भवेत्।
उदयस्तत्र मासे स्यादुदयोऽस्तेऽस्त मादिशेत् ॥२॥
घातव्रणितगात्राणां यत्र मासे कुजोदयः।
उदयस्तत्र मासे स्यात् पुंसामस्ते ऽस्त मादिशेत् ॥३॥
पृच्छायां भिन्न गात्राणां यत्र मासे बुधोदयः।
उदयस्तत्रमासे स्यात् पुंसामस्ते च दुर्गतिः ॥४॥
आतङ्क रुग्ण गात्राणां यत्र मासे शनेर्भवेत्।
उदयस्तत्र मासे स्यात्पुंसामस्ते ऽस्ति पूर्ववत् ॥५॥
उदयात् षष्ठ लग्ने चपृच्छायां पृच्छकस्य च।
नास्यात् पृच्छार्थ सम्पत्ति पृच्छायां पृच्छकस्य च॥६॥
पृच्छाकाले यदा स्वामी विलग्नस्योदयं भवेत्।
तदा सिद्धिं बुधैर्वाच्या प्रष्टुर्मनसि या स्थिता ॥७॥

पृच्छा काले यदा खेटा उदयं यांति भावपाः ।
अभ्युदयस्तदा वाच्यः प्रष्टुर्ग्रामपदादिभिः ॥ ८॥
पृच्छाकाले चतुर्णा कंटकानां मितो यदि ।
एककालमुदीयन्ते तदा प्रष्टु र्महोदय ॥ ९ ॥
पृच्छायां गोचरेशुद्धिर्यदा काले प्रजायते ।
प्रष्टु रभ्युदयो वाच्य शुभभाव वशात् पुनः ॥ १० ॥
पृच्छायां राशिनाथस्य यदा दशा शुभा भवेत् ।
प्रष्टुस्तदोदयोऽदेश्यो राशेरपि प्रमाणतः ॥ ११ ॥
नाथोदये दशासौम्या गोचरे शुद्धिरुत्तमाः ।
शकुनैः शोभनैर्जातैर्भवेत् पुंसा महोदयः ॥ १२ ॥

उपरोक्त लिखित प्रमाण भाग्योदय-भाग्यास्त काल निर्णयके लिए जन्मकुण्डली व प्रश्न कुंडली दोनोंका समन्वय करते हुए फल कहना चाहिये। ऐसा करनेसे फल कहने व भविष्यत्फल मिलनेसे पूर्ण यशस्वी होनेकी सम्भावना है।

गौर गात्रके मनुष्यके भाग्योदयके प्रश्नमें गुरु-ग्रहके उदय मासमें भाग्योदय और गुर्वस्तके समय भाग्यास्त होता है ॥ १ ॥

श्याम शरीर (जिनके श्याम वर्णमें आकर्षण शक्ति हो मोहकशक्ति हो) वालोंके भाग्य वृद्धि प्रश्नमें शुक्रके उदय कालमें भाग्योदय-तथैव शुक्रास्त कालमें भाग्यकी वामता रहती है ॥ २ ॥

जिन मनुष्यों पर मंगलका प्रभाव रहता है, वे शौर्य प्रकृतिके होते हैं। अतः जिन्होंके अंग पर चोट-घाव आदिके चिन्ह हों ऐसोंके भाग्य वृद्धि प्रश्नमें भौमोदय कालमें भाग्योदय तथैव भौमास्त कालमें भाग्यास्त कालका अनुभव होता है ॥ ३ ॥

गौर श्याम व चोट घाव आदिसे भिन्न प्रकृति वाले सततहास्यरुचि निरन्तर हास्यमुद्रासे वाग्व्यापार करने वाले, "बुधे तु कुटिला वाणी" जिनके मनमें कुछ और वाणीमें कुछ और एवं समय आजाने पर करें कुछ और ऐसे लोगोंके भाग्योदय प्रश्नमें बुधोदय काल भाग्योदय काल सौम्यास्त समय ही भाग्यका अस्तकाल होता है। भाग्यास्तमें दुर्गति व्यापारमें हानि अपयश आदि होते हैं ॥ ४ ॥

आतंक-रोगी कुरूप कृष्णरंग वाले पुरुषोंके भाग्योदय प्रश्नमें जिस मासमें शनिका उदय होता है, उस मासमें भाग्योदय होता एवं शनिके अस्तकालमें भाग्यकी वामताका अनुभव होकर अपयश कीर्ति हानि आदि दुर्गति होती है। ५ ॥

उदय कालसे छठे प्रश्न लग्नमें पृच्छककी मनोप्सित संपत्तिका लाभ नहीं होता है। ६ ॥

प्रश्नकालमें पृच्छकके जन्मलग्नके स्वामीका उदय काल होतो पृच्छकके मनमें जो चिन्ता होती है, वह चिन्ता दूर हो जाती है ॥ ७ ॥

प्रश्नकालमें जिन जिन भावोंके स्वामियोंका उदय होता है, उन-उन भाव सम्बन्धी फलोंका उदय होकर शुभफल होता है, एवं अस्तकालमें उन उन भाव सम्बन्धी चिन्ता होती है ॥ ८ ॥

प्रश्नकालमें यदि चारों केन्द्रोंके स्वामियोंका एक साथ उदय होता हो तो, प्रश्नकर्ताके भाग्यका महोदय होता है ॥ ९ ॥

प्रश्नकालमें उपर्युक्त केन्द्रेशोंके उदयके साथ गोचर शुद्धि भी हो तो पृच्छकका अभ्युदय हुए बिना रहता नहीं है ॥ १० ॥

पृच्छाकालमें प्रश्नकालीन कुंडलीमें केन्द्रेशोंके उदयके साथ राशिनाथकी शुभ दशा हो तो राशिके गुण धर्मानुसार पृच्छकका भाग्योदय होता है ॥ ११ ॥

प्रश्नकालमें जन्म भाग्य-नाथका उदयकाल हो दशासौम्य हो, गोचर शुद्धि हो, तात्कालिक शोभन शकुन हों तो पुरुषोंके भाग्यका महोदय होता है ॥ १२ ॥

(सं० १९८८ में विद्याभूषण पं. दीनानाथ जी शास्त्रीसे सनावर निवासी राज्यभूषण सेठ अनन्तलाल जी कटेतीने भाग्योदय सम्बन्धी प्रश्न किया। शास्त्रीजीने तात्कालिक प्रश्नकुण्डली और शोभन शकुन देखकर एक महीनेमें १ लाख का लाभ बताया था, उस समय मैं वहीं सेठजीके साथ था, ठीक २७ दिनमें ८५ हजारका लाभ हुआ था)

वैज्ञानिक विद्वानोंकी सेवामें एक जिज्ञासा

वैद्य समाजके लिए चरक और सुश्रुत सर्वोच्च ग्रन्थ हैं, इसी प्रकार वैष्णव समाजके लिए ही नहीं हिन्दू मात्रके लिए श्रीमद्भागवत पुराण संमान्य एवं समस्त भारतके आस्तिकोंके लिए परमादरणीय भी है—

इस पुराणके षष्ठ स्कन्धमें एक कथानक आता है, एक बार देवराज इन्द्रने देवगुरु बृहस्पतिका अपमान किया था उसके प्रभावसे निस्तेज हुए जान कर दैत्योंने देवराज पर आक्रमण कर दिया था, एवं देवेन्द्रकी देवताओंके साथ बड़ी दुर्दशा हुई थी, पुनः दुःखी होकर ब्रह्माजीसे कष्टका कारण पूछा । ब्रह्माजीने कहा यह गुरुके तिरस्कारका फल है । अस्तु, हुआ सो हुआ इसका उपाय नहीं । आगे यदि दुःखसे बचना है तो त्वष्टाके पुत्र विश्वरूप ब्राह्मणको पुरोहित बनाओ, वह तपस्वी और जितेन्द्रिय है । वह तुम्हारी कामना पूर्ण करेगा । तब देवराजने प्रार्थना करके विश्वरूपको पुरोहित बना कर नारायण कवच प्राप्त करके विरोधियों पर विजय प्राप्त की थी, परन्तु विश्वरूप पितृपक्षके नाते यज्ञमें देवताओंके समक्षमें आहुति देता एवं मातृपक्षके नाते दानवोंको गुप्तरूपसे आहुति देता था इसको एक दिन इन्द्रने देख लिया और क्रोधके आवेशमें आकर हतबुद्ध होकर विश्वरूपके ३ शीर्ष थे वे काट दिये इसके कारण इन्द्रको ब्रह्महत्या लगी । देवोंने इन्द्रसे अश्वमेधयज्ञ करा कर ब्रह्महत्या दूर की थी । वह ब्रह्महत्या ४ स्थानोंमें बांट दी गई थी । १ पृथ्वी, २ जल, ३ वृक्ष, और ४ स्त्रियोंको, इन चारोंने ब्रह्महत्या स्वीकार करते समय एक एक वरदान भी लिया था ।

ब्रह्महत्या स्वीकार करने वाले	ब्रह्महत्याके चिन्ह
१. पृथ्वी	ऊपर जिसमें चारा या अन्न नहीं होता
२. जल	बुदबुद, फेन, काई आदि
३. वृक्ष	निर्यास-गोंद
४. स्त्रियां	प्रतिमास रजोधर्म

वरदानका फल

१. गड्ढा करने पर अपने आप पूर्ण होना
२. जिस वस्तुमें मिलाया जाय वह बढ़ेगी
३. काटने पर पुनः अंकुरित हो जाना
४. सगर्भावस्थामें पतिसहवासजन्य रत्यानंद लेते रहना।

पृष्टव्य विषय यह है कि विश्वरूप वधके पूर्वकालमें स्त्रियोंको मासिक ऋतुस्राव होता था या नहीं ? यदि होता था तो स्पर्शास्पर्शका विचार था या नहीं ? शंका— यदि आप मानते हैं कि मासिकधर्म नहीं होता था तो ऋतुस्रावके बिना संतति होती नहीं, यह बात ज्योतिष- और आयुर्वेद शास्त्रसे प्रसिद्ध है । यदि आप मानते हैं कि प्रकृतिधर्मानुसार ऋतुस्राव होता था तो अस्पृश्यता स्वीकारनेमें पूर्वापेक्षा ऐसी क्या रज कीटाणुओंमें विशेषता आ गई ? इस विषय पर ज्योतिष धर्मशास्त्र और चिकित्सा- आयुर्वेद शास्त्रसे मिलता हुआ उत्तर इसी पत्रमें प्रकाशित करनेकी उदारता प्रकट करें ।

— कालीचरण शर्मा ज्यो०

त्रैमासिक व्यापार भविष्य

[ले०—श्री पं० गङ्गाप्रसादजी ज्यौतिषाचार्य]

प्रिय पाठकों ! सं० २००८ आषाढ़ शु० १० शनिवार से त्रैमासिक व्यापार भविष्यका ज्ञान सर्वसाधारणको होना अत्यावश्यक है। कारण कर्केऽर्कः २१।२० मु० १५ कर्कराशिमें सूर्य प्लुटोका योग बड़ा ही महत्वका बना है। इसमें व्यापारमें मोटी क्रांति पैदा होने जा रही है। तथा आषाढ़ सुदी पूर्णिमा बुधवारको वायुपरीक्षणसे भी सर्व प्रकारके व्यापारमें भारी उलट फेर होगी, अतः व्यापारी सावधान — मुनाफे मिलते हुए संग्रहीत वस्तुसे लाभ उठा लेना ही चांस होगा। इन तीन मासोंमें प्रत्येक वस्तु की तेजी की चाल रुक कर शनैः २ नीचा गिरा देगी, इन तीन मासों में मंदीके रुखको ग्रहण करने वाले व्यापारी अवश्य बड़ा भारी लाभ उठा सकेंगे। ता० १७ जुलाई से २६ तक विशेष तेजी रहेगी, इस समयमें व्यापारियों को मंदीकी तरफ झुक जाना चाहिये। कारण यहां अगस्त सितम्बरमें चांदी, सोना, रुई, जूट, बारदाना, शेयर्स, कालीमिर्च, अलसी, अरंडा सरसों, अरहर मटर वगैरा में एक प्रखर मंदी की लहर हवाकी तरह आने वाली समझें। इसमें जो व्यापारी अपनी नाम राशि से मिलती हुई वस्तुओं का व्यापार करेंगे वे अवश्य ही बड़ा भारी लाभ प्राप्त कर सकेंगे। अब हम व्यापारियोंकी सुविधाके लिये त्रैमासिक नाम राशीसे वस्तुओंमें लाभकारी निर्णय उपस्थित करते हैं। मेष—राज्यसम्बन्धी व्यापार, भूमि, ठेकेदारी मिट्टी, चूना रंग हैंडुरी कालीमिर्च। वृषभ-कृषि वस्त्र सुगंधी-पदार्थ, चांदी रुई घृत मोती, भूषणादि। मिथुन—मसूर गुड़ कालमिर्च किराना, अनेकवस्त्र, चांदी सोना रुई। कर्क—जूट बारदाना, मूंग, मटरा, अरहर गुवार अलसी सरसों अरंडा। सिंह-चना जौ हल्दी फल, औषधी, चमड़ा, रंग, सर्वप्रकार का किराना। कन्या—रुई चांदी शक्कर घृत कागज बारदाना अरहर, मटर, गुवार। तुला—चांदी फीचर लाटरी, मटर गुवार ?इडा। वृश्चिक—लौह गिलटके बर्तन विदेशी वस्तु विद्युतके समान। धनुः—विचित्रवस्तु, खिलौने, यन्त्र, मशीनरी, तमाखु, वारनिश। मकर-नकली रेशम, सोडा तेजाब, गन्धक, पारा, चांदी सोना। कुम्भ—नमक औषधी गुड़ मिट्टी पत्थर तेल पैट्रोल वगैरा। मीन,-चांदी, फीचर, रुई, मटरा गुवार अलसी किराना फल।

इस प्रकार नामराशियों की वस्तु का व्यापार अवश्य ही लाभप्रद रहेगा। जो वस्तुएं मन्दी हों उनका संग्रह करना, तथा जो तेज हों उन्हें बेचना ही लाभ का कारण होगा। विशेष :— ता० १४ अगस्तके बाद प्रायः सर्व वस्तुओंमें मंदी का धमाका आने वाला है। व्यापारियोंको धनोपार्जन करने का बहुत ही अच्छा समय होगा। अतएव १४ अगस्त से १४ नवम्बर तक जो सज्जन तेजी मन्दी से विशेष लाभ उठाना चाहें, वे ५) फीस भेजकर दैनिक तेजी मन्दी मंगा सकते हैं। अवश्य ही लाभान्वित होंगे। 'अबकी बार श्रीस्वाध्यायके ग्राहकोंके कितने ही पत्र हमें मिले हैं उनमें यही संकेत लिखा है कि चांदीके जनरल चांस तीन महीनेके भेजिये। अतः व्यापारी भाई एवं 'श्रीस्वाध्याय'के ग्राहकोंके लिये केवल चांदीके जनरल चांस अनुभवी कई बार गणितसे परीक्षण करके लिख रहे हैं।

सं० २००८ आषाढ़ सुदी १० से आश्विन सुदी १० तक चांदी के जनरल चांस

जुलाई १९५१

ता० १४ की बेचो। ता० १६ तक मंदी २।)
ता० १६ को खरीदो। ता० १८ तक तेजी २॥)
ता० १८ को बेचो। ता० २३ तक मंदी ३)
ता० २३ को खरीदो। ता० २७ तक तेजी ३)
ता० २७ को बेचो। ता० ३० तक मंदी २॥)
ता० ३० को खरीदो। ता० २ अग. तक तेजी ४॥)

अगस्त १६५१

ता० ३ को बेचो । ता० ६ तक मंदी ५॥)
ता० ६ को खरीदो । ता० १० तक तेजी ६)
ता० १० को बेचो । ता० १७ तक मंदी ६)
ता० १८ को खरीदो। ता० २४ तक तेजी ५)
ता० २४ को बेचो । ता० २८ तक मंदी ७)
ता० २८ को खरीदो। ता० ३१ तक तेजी ४)

सितम्बर १६५१

ता० २ को बेचो । ता० ६ तक मंदी ५)
ता० ६ को खरीदो । ता० १० तक तेजी ३)
ता० १० को बेचो । ता० १५ तक मंदी १०)
ता० १६ को खरीदो । ता० २१ तक तेजी ५)
ता० २१ को बेचो । ता० २७ तक मंदी ८)
ता० २७ को खरीदो । ता० २६ तक तेजी ४॥-)
ता० २६ को बेचो । ता० १ तक मंदी २॥)

अक्टूबर १६५१

ता० २ को खरीदो । ता० ५ तक तेजी ४)
ता० ५ को बेचो । ता० ११ तक मंदी ७)

इस प्रकार चांदीके जनरल चान्स त्रैमासिक 'श्रीस्वाध्याय'के ग्राहकों को लाभ पहुंचानेके लिए शोधकर लिखे गए हैं ताकि जनरल चांसोंसे श्रीस्वाध्यायके ग्राहक लाभ उठा सकें। मेरे विचारसे ७५ प्रतिशत चांस सही होंगे। व्यापारी अनुभव करके इन चांसोंके विषयमें सूचना दें। यदि व्यापारी भाइयोंको लाभ पहुँचा तो इसी प्रकार जनरल चांस छपाये जायेंगे।



चांदी सोनेका भविष्य
(अनुभूत चांस)

[ले० राजवैद्य डा० श्री भ्रमरदत्त मिश्र एम. एच. डी. एस. कोमरशीयल एस्ट्रोलोजर]

—★—

चांदी सोनेमें मई मासमें निम्न योगों के आधारसे साधारण परिवर्तन होंगे जिनका फल सायन गणितके आधारसे 'श्रीस्वाध्याय'के पाठकोंकी सेवामें प्रस्तुत करता हूं।

जुलाई सन १६५१ के योगायोग और फल

इस मासमें कर्क राशि तेजी कारक रहती है Bullish sign उस राशिमें सूर्य और हर्शल मिल रहे हैं ०।१० का ही अन्तर है, अतः ता० २ जुलाईको चांदी सोनेमें उत्तम तेजी आवेगी, एवं ता० ३ को भी तेजी रहेगी, कारण कि मंगल चन्द्रकी युति है एवं ता० ४ को हर्शल चन्द्रकी युति है, इसलिए उस दिन भी बाजार तेजीमें ही चलेगा। पुनः ता० ५ को कर्कराशिमें बुध चन्द्रकी युति होती है सो यह भी तेजी कारक है, पुनः ७ और ८ को बाजार बना रह कर बाजारकी टेण्डन्सी नीचेमें चलेगी। ता० १० को शनि चन्द्रकी युतिसे बाजार तेजीमें बदलेगा और १२ को गुरु चन्द्र योगसे मन्दी आजावेगी। ता० १७ को तेजीके योग हैं और ता० १८ को घटाबढ़ी चलेगी और १६ को बाजार तेजीमें जाकर मन्दा रहेगा। ता० २० को उत्तम तेजी आवेगी इस तेजीमें अवश्य ही लाभ उठायेंगे जो पोते रखेंगे, पुनः बाजार धीरे धीरे नरम हो जावेगा। ता० २३ को फिर उठेगा और २४ को गिरेगा अन्तिम दिन घटाबढ़ीमें चलेगा, यह स्थिति इस मासकी है।

अगस्त १९५१ ई० योगायोग और फल

इस मासमें बाजार मन्दा सा रहेगा। गुरु मेषमें वक्री हो रहा है इसी कारण ता० ५ से चांदीमें तेजी करेगा।

ता० १ को सोनामें तेजी और ता० ४ को मन्दी आवेगी पुनः ता० ७ को चांदी सोनेमें तेजीका चांस है। ता० ८ से १४ तक घटाबढ़ी चलेगी और १४ को फिर बाजारमें तेजी आवेगी। ता० १८ को बुध कन्यामें वक्री हो रहा है इसके प्रभावसे बाजार में सस्ती आवेगी। इसी प्रकार ता०१४ को शुक्र वक्री हो रहा है अतः यहांसे रुईके बाजारमें विशेष परिवर्तन होगा। ता० १८ को तेजी भी है और गुरुके प्रभावसे ६।४ उपर सायं मन्दी भी आवेगी। फिर १६ को तेजी आवेगी और बाजार रह कर ता० २८ को घटाबढ़ी चलेगी। फिर ता० ३० को बाजार तेज होकर ता० ३१ को बाजारमें साधारण परिवर्तन होगा।

सायन सिद्धान्तके आधार पर यह बाजारका फलादेश. है अतः प्रयोक्ता अपनी जिम्मेदारीसे काम करें।

सूक्तिसुधा

संतानके लिए धन संग्रह करनेमें आप लोग जितना प्रयत्न करते हैं, उसका आधा प्रयत्न भी यदि बुद्धि शुद्ध करनेके लिए करें, तो बहुत लाभ हो।

बुद्धि शुद्ध रही तो धन कम रहते हुए भी सन्तान सुख-शांतिका अनुभव कर सकती है और यदि बुद्धि दूषित रही तो अनन्त धन-धान्य रहते हुए भी दुर्वासनाओं में पड़ कर सन्तान दुःख और अशान्ति ही भोगेगी। इसलिए बुद्धि शोधनके लिए प्रयत्न पहले करो, पीछे धन संग्रह करो।

सन्तानका गर्भाधान संस्कार विधानसे करो। और बाकी संस्कार भी समय पर होना चाहिये। उपनयनके बाद बालकोंको संध्या गायत्रीमें अवश्य लगाओ। भगवान्‌के जप ध्यानसे ही बुद्धिकी मलिनता दूर होती है। सन्तानकी बुद्धि शुद्ध करनेका ध्यान यदि प्रारम्भसे ही न रखा गया तो आगे चल कर पछताना ही हाथ रहता है।

—भगवान् शंकराचार्य

अनुभूत तेजी मन्दी प्रकाश

ग्वार, मटर, अरहर, चादी, सोना, रुई आदि पर अनुभूत विचार

[लेखक—श्री राजाराम जैन हस्तरेखा अङ्क परीक्षा विशेषज्ञ]

व्यापारियोंके समक्ष आज पुनः कुछ लिखकर प्रस्तुत कर रहा हूं जो अधिकांशतः सत्य होने की सम्भावना है।

गवार मटर अरहर उड़द मूंग मोठ रमास मसूर धनियांमें मन्दी का योग ३ जूनसे चालू होचुका है जो २० जुलाई तक रहेगा। यदि जूनके द्वितीय सप्ताहमें या पूरे मासमें नीचे भाव बनकर ऊंचा हो जावे जिससे बिकवाल महोदय घबरा रहे हों उनको वही नीचे भाव २० जुलाई तक पुनः अवश्य मिलेंगे। बढ़े भाव बेचने वाला ही लाभमें रहेगा। ग्वारमें भारी घटा-बढ़ी वर्षा होते ही प्रारम्भ होगी, उसकेप हले तो बाजार ।-) ।≡) की घटाबढ़ीमें ही पड़ा रहेगा। यहां इसकी इतनी घटाबढ़ी ही बहुत समझना जबकि प्रत्येक दाल ऊपर लिखी अवधिमें १।) १॥) की घटाबढ़ी दो तर्फी करेगी। गिरे भाव से ॥।) ॥।≥) बढ़ने पर बिकवाल ही लाभमें रहेगा। २१ जुलाईके खरीदार ठीक इसीदिन बादल वर्षा का चमत्कार देखते हुये भी खरीदें, ७ अगस्त तक उन्हें अच्छा लाभ मिल सकेगा। ६ अगस्तसे १४ अगस्त तक भारी तेजी आनेकी संभावना है। श्रावणी पूर्णिमा से प्रत्येक दाल व ग्वारकी तेजीसे निकल जाना ही ठीक है अन्यथा भारी हानि होने की संभावना है। विजय दशमी तक मन्दा ही समझें। —

२० जुलाईसे १७ अगस्त तक प्रत्येक स्थानमें महा वृष्टि होनेकी सूचनासे भाद्रपद मासमें एकदम बहुत चीजें तेज होंगी। क्यों? भादवेमें पांच शनिवार हैं यथा युक्ति वचन

"महा मंगल ज्येष्ठे रवि भादों शनियुत होय।
सात कहे रे बालका नाजमें एकका दोय॥

तथा वर्षेश शनि आषाढ़ शुदि १ से ४५ दिनमें अन्तादि विशेष तेज करे साथमें गुड़ नमक भी तेज होगा। श्रावणमें चांदी विशेष तेज, भादवामें प्रायः मन्दी ही रहेगी। और बहुत मन्दा भी सम्भव है। आश्विनसे गिरे भाव सुधरते जायेंगे। ३ अगस्त से पहले रुई रेशम गुड़ बारदानाके खरीदार अगस्त मासमें ही असाधारण लाभ पा सकेंगे। ६ अगस्तसे गुड़ खांडमें भयकर तेजी चमकेगी जो २० दिन ही रहेगी, फिर ६ दिनमें आचनक मन्दा आकर पुनः भयानक तेजी होगी। २४ अगस्तसे चांदीमें मन्दी अवश्य आवेगी। आगे हस्त नक्षत्र का शनि भी भयानक मन्दी का सूचक है। देखो श्री सखलेचा द्वारा लिखा ६० वर्षीय रिकार्ड तथा "श्रीविश्व-विजय-पंचांग"में नक्षत्र पर्यटन देखकर व्यापार करें आगे शुक्र भी मार्गी हो रहा है। विधि की गति विधि ही जाने परन्तु ग्रहयोग देखते चांदी सोनामें भारीमन्दा आकर रहेगा। लाभ हानिका पूर्ण उत्तरदायित्व अपने ऊपर जानकर कार्य करें।

———

तीन मास की दैनिक तेजी-मन्दी

[लेखकः — श्री यादवचन्द जैन ज्योतिर्विद्]

श्रावण मास

बदी १ बृह० ता० १६ जुलाई— चांदी मन्दी, मूंग, उड़द, सरसों तेज।

बदी २ शु० ता० २० जु०— चांदी, गुड़, सरसों, अन्न तेज।

बदी ३ शनि ता० २१ जुला०— चांदी तेज।

बदी ५ सोम ता० २३ जु० — चांदी तेज होके मंदी, गुड़, सरसों, रुई, घी तेज।

बदी ६ मं० ता० २४ जु०— गुड़, सरसों मंदी, चांदी, रुई तेज।

बदी ८ बृह० ता० २६ जुला० — चांदी मन्दी होके तेज।

बदी १० शनि० ता० २८ जुला०— चांदी तेज।

बदी १३ मं० ता० ३१ जुला० — चांदी, सरसों तेज।

बदी ३० बृह० ता० २ अगस्त— चांदी मन्दी होके रात को तेज।

सुदी १ शु० ता० ३ अगस्त— चांदी, सरसों, रुई, अन्न तेज।

सुदी २ शनि ता० ४ अग०— रुई तेज, अन्य सब वस्तु मन्दी हों।

सुदी ३ सोम० ता० ६ अगस्त— चांदी तेज।

सुदी ४-५ मं० ता० ७ अग०— हरेक वस्तु तेज।

सुदी ६ बुध ता० ८ अग०— चांदी, गुड़, अन्न तेज।

सुदी ८ शु० ता० १० अग०— चांदी मन्दी होके तेज। रुई, सरसों, गुड़, शक्कर तेज हों।

सुदी ६ शनि ता० ११ अग०— आसोजमें या मार्गशीर्ष तक छत्र भंग या नेता की मृत्यु हो।

सुदी ११ सोम० ता० १३ अग०— चांदी, गुड़, सरसोंमें इकतरफा लाइन चलेगी, हमारा ध्यान तेजी पर है।

सुदी १२ मं० ता० १४ अग०— चांदी तेज।

सुदी १३ बुध ता० १५ अग०— चांदी मन्दी होके तेज।

सुदी १५ शु० ता० १७ अग०— चांदी, गुड़, सरसों, रुई, अन्न तेज।

श्रावण मासका सारांश

इस मास चांदीमें ८) १०) गुड़में २) ३) रु० मन तथा सरसोंमें ३) ४) रु० मनकी घटाबढ़ी होगी, तथा इकतरफा लाइन भी चलेगी। रुईके भावोंमें भादों बदी ३० तक मंदीका अच्छा झटका आकर बादमें बाजार काफी तेज होंगे। रुईके सबसे ऊंचे भाव इस वर्ष बनेंगे।

भाद्रपद मास

बदी १ २ शनि ता० १८ अगस्त— चांदी, गुड़, शक्कर, सरसों तेज।

बदी ४ सोम ता० २० अग०— चांदी में घटाबढ़ी।

बदी ५ मं० ता० २१ अगस्त— चांदी, गुड़, सरसों, अन्न तेज।

बदी ६ बुध ता० २२ अग०— चांदी मन्दी।

बदी ७ बृह० ता० २३ अग० — चांदी, गुड़, सरसों तेज।

बदी ८ शु० ता० २४ अग०— चांदी मन्दी।

बदी ६ शनि ता० २५ अग०— चांदी मन्दी होके तेज।

बदी १० सोम० ता० २७ अग०— चांदी, गुड़ तेज।

बदी १२ बुध ता० २६ अग०— चांदी मन्दी होके तेज।

बदी १३ बृह० ता० ३१ अग०— चांदी मन्दी।

बदी १४ शु० ता० ३१ अग०— चांदी, गुड़, सरसों, रुई, अन्न, बारदाना तेज।

बदी ३० शनि ता० १ सितम्बर— चांदी, सरसों, अन्न तेज होके मंदे।

सुदी २ सोम० ता० ३ सितं०— कुछ तेज होके चांदी मन्दी।

सुदी ३ मं० ता० ४ सितं०— सावधान! चांदीमें जोरदार तेजी-मंदी इसी दिन निकले।
सुदी ६ शु० ता० ७ सितं०— चांदी मन्दी।
सुदी ७ शनि ता० ८ सितं०— चांदी, रुई, घी तेज।
सुदी ९-१० सोम० ता० १० सितं०— चांदी तेज होके [मन्दी
सुदी १२ बुध ता० १२ सितं०— चांदी तेज।
सुदी १३ वृह० ता० १३ सितं०— चांदी मन्दी।
सुदी १४ शु० ता० १४ सितं०— चांदी, गुड़, सरसों, रुई, मूंग, उड़द तेज।
सुदी १५ शनि ता० १५ सितं०— हरेक वस्तु तेज।

भाद्रपद मासका सारांश

इस मास चांदीमें ८) १०) गुड़में २) २॥) रु० मन तथा सरसोंमें १॥) २) रु० मनकी घटाबढ़ी होगी। रुईके लिए श्रावणके सारांश में लिखी बातोंको भूल न जाना चाहिये। ता० १२ सितम्बरसे भी सरसोंमें तेजी चलने का ध्यान है। इस मास वर्षा बहुत होगी। सुदी पक्षमें अन्न बहुत तेज हो। इस मास ता० ३१ अगस्तसे घी बहुत तेज होगा।

आश्विन मास

वदी १ रवि ता० १६ सितम्बर— बाजार बन्द रहेगा।
वदी २ सोम० ता० १७ सितं०— चांदी तेजीके उछालेके साथ मन्दी। गुड़ तेज।
वदी ३ मं० ता० १८ सितं०— चांदी तेज होके मन्दी, गुड़, सरसों तेज।
वदी ५ वृह० ता० २० सितं०— चांदी थोड़ी मंदी होके तेज।
वदी ६ शु० ता० २१ सितं०— चांदी मन्दी।
वदी ७ शनि ता० २२ सितं०— चांदी मंदी होके तेज।
वदी ९ सोम० ता० २४ सितं०— चांदी तेज।
वदी १० मं० ता० २५ सितं०— चांदी खरीदो, गुड़, सरसों, रुई, अन्न तेज।
वदी ११ बुध ता० २६ सितं०— चांदी, गुड़, सरसों, अन्न तेज।
वदी १२ वृह० ता० २७ सितं०— चांदी, गुड़, सरसों अन्न तेज।
वदी १३ शु० ता० २८ सितं०— चांदी मन्दी अन्न तेज।
वदी १३ शनि ता० २९ सितं०— चांदी तेज, खांड और सोनेमें यहां से तेजी हो।
वदी ३० सोम ता० १ अक्टूबर— बाजार रुख देखो।
सुदी १-२ मं० ता० २ अक्टू०— चांदी तेज होके शाम को मन्दी।
सुदी ४ वृह० ता० ४ अक्टू०— चांदी, गुड़, अन्न, सरसों तेज।
सुदी ६ शनि ता० ६ अक्टू०— मन्दीका झटका होके चांदी तेज।
सुदी ८ सोम० ता० ८ अक्टू०— मन्दी होके तेज।
सुदी ११ वृह० ता० ११ अक्टू०— चांदी, गुड़, सरसों मन्दी होके तेज।
सुदी १२ शु० ता० १२ अक्टू०— चांदी, सरसो मन्दी।
सुदी १३-१४ शनि ता० १३ अक्टू०— चांदी, गुड़, सरसों तेज।

सारांश आसोज मास

इस मास चांदीमें दो बार इकतरफा लाइनें निकलेंगी। गुड़, खांड, शकर प्रायः तेज ही रहेंगे। ता० २८-२९ सितम्बरसे खांडमें अच्छी तेजी आवेगी। अन्न तथा दालकी वस्तुएंमंदीके झटकोंके साथ विशेषकर तेजीमें ही रहेंगी। बारदाना तथा घी वदी पक्षमें तेज होंगे। लाल वस्तु लाल रंग ता० १७ सितम्बरसे तेज होंगी। सरसों आदि तिलहन भी इस मास प्रायः तेज ही रहेंगे। प्रत्येक वस्तुमें जोरदार घटाबढ़ी निकलेगी।



व्यापार-रुख का साप्ताहिक विवरण

[लेखक — ज्योतिषाचार्य रमलाचार्य प्रो० श्री गणेश, विद्यासागर, "दैवज्ञ"]

ता० १४ से २० जुलाई तक

अश्लेषा पर बुध चांदी, स्वर्ण, शेयर, अलसी. सरसों, मूंगफलीमें तेजीका उछाला देगा, इस आये उछालेका ध्यान बेचाणमें लेना, ता० १५ तेजीमें रहेगा। ता० १६ को कर्कमें सूर्य आया है। यह रात्रिमें मंदीकी सूचना करता है। ता० १६ तक इसका नफा ले लेना। ता० २० को दोनों तरफ बाजार चलेगा और बाजारको ऊपर उठानेका प्रयत्न करेगा।

ता० २१ से २७ जुलाई तक

चन्द्र राहुकी पूर्ण दृष्टि ही बाजारको तेजीकी तरफ ले जावेगी। यहां चांदी २) २॥), स्वर्ण ॥।) १), गुवार मटर ॥) ॥।), अलसी सरसों १) १।), मूंगफली १॥) की तादादमें तेजी बना देगा। ता० २३ को सिंह पर बुधकी सवारी होगी। गुरु चन्द्रकी राशि युति होगी ऐसे समयमें बाजार दोनों तरफ चलता है। नजराने लगाने वालोंको लाभ हो सकता है। किन्तु एक बात और बताये देते हैं कि आप घटे भावोंमें माल खरीदनेकी नीति कायम रखें, भारी उछाला आयेगा, पानी बहुत बरसेगा। ता० २७ को अच्छी तेजीका योग है। ता० २४ से २७ तक जो तेजी खेलेगा उसका तेज बढ़ जावेगा।

ता० २८ जुलाई से ३ अगस्त तक

अन्य योग तो तेजी मन्दीके चालू हैं लेकिन यहां अजब गजबकी बात सुन लो ता० २८ २९ को जो भी मार्केट जिस प्रकार चले चलने दो। ता० ३० को भावोंमें तेजीका तूफान आयेगा, ऐसे समयमें पहिलेसे जो मोर्चा-बन्दी बांध लेगा वह पक्का खिलाड़ी माना जावेगा। ता० ३१ तक तेजीका नफा खालो। ता० १-२ को बाजार कुछ मन्दीका समर्थन करेगा। कारण ता० ३१ को नैपच्यून मार्गी होगा यह मन्दी वालोंको प्रोत्साहन देगा। ता० ३ को सूर्य हर्शलकी युति होगी। असाधारण घटना संसारमें दिखाई दे। मेरा ध्यान मन्दा है।

ता० ४ से १० अगस्त तक

ता० ४ से १० तक हम आपको संकेत किये देते हैं कि मार्केटमें मामूली उछाले आते दिखाई देंगे, लेकिन आई हुई तेजी ठहरेगी नहीं। आप आये उछाले मालका बेचाण करते रहो और नफा कमाते रहो। यहां काली मिर्च ८०), आईरन ३॥) २), ऐरंडा ७) ८), चांदी ४) ५) गुवार-मटर १) १।) की मन्दी दोनों तरफ चलनेके बाद भी आ सकती हैं।

ता० ११ से १७ अगस्त तक

ता० ११ को शुक्रका वक्र होना ही महा मन्दीका सूचक है। अन्य योग भी मन्दीके अधिक तथा तेजीके कम दिखाई देते हैं। यदि ज्योतिष गणनामें कोई फर्क नहीं तो फिर चिन्ताकी कोई बात मत समझो। अतः हमारे सतरंगीय दाव पेचका निरीक्षण स्पष्ट बतला रहा है कि इस मिटिङ्गमें मन्दी वालोंको अधिक वोट मिलेंगे। यहां तक कि काली मिर्च ७५), रुई ऐरंडा ५) ७), चांदी ३) ॥), स्वर्ण १) १।), शेयर ॥।) १), टाटाडिफर्ड ४०) ४५) मन्द आ जावें, लेकिन याद रखना यहां गुवार, मटर, अनाज अलसी सरसों मूंगफलीकी मन्दीमें रुकावट आकर बाजार समान दिखाई दे जावें। चांदी सोनेमें बीच-बीचमें उछाले आकर मन्दी आना पाया जाता है।

ता० १८ से २४ अगस्त तक

ता० १८-१९-२० इन तीन दिनमें बाजार काफी घटाबढ़ीमें चलेगा। ऐसे समय नजराने लगाना ही नेक सलाह है। ता० २१ से २४ तक बाजार आये उछाले बेचना और हाथों हाथ नफा खाते रहना। आंकड़ा हर वस्तु मात्रका अच्छी स्थितिमें समझो।

ता० २५ से ३१ अगस्त तक

अगस्तका उदय मंगलवारको होगा, आप घटे हुए भावोंमें माल खरीदियेगा। यहां दोनों प्रकारके योग संयोग हैं, प्रथम तो बाजार पड़े हुए दिखाई देंगे, लेकिन फिर ता० २९ से अचानक तेजीका रूप बन जावेगा। और चांदी ३) ३॥), स्वर्ण ॥) १) शेयर आईरन १) ११), काली मिर्च ५०) ६०), टाटा डिफर्ड ४०) ४५), रुई ऐरंडा ८) १०), अलसी सरसों २) २॥), मूंगफली ३) ३॥), गुवार मटर ॥।)१) की तादाद में बढ़ जावेंगे।

ता० १ से ७ सितम्बर तक

मंगलका सर्पके ऊपर सवार होना, राहु केतुका चरण परिवर्तन ता० १ को घटे भावोंमें माल पौते करो, ता० २ तक सर्व वस्तु तेज। ता० ३-४ को मामूली झटके भले ही आ जावें लेकिन बाजार रहेगा तेजीके ही स्टेवड पर। ता० ५ से ७ तक अचानक असाधारण तेजी चल पड़ेगी महान्वेषण हमने बता दिया है। बाजारकी टोन आप स्वयं देख लें।

ता० ८ से १४ सितम्बर तक

ता० ८ से १२ तक योग मन्दे चलेंगे, चांदी ३॥) ४) टका घट जावे तब और वस्तु तो चांदीकी चांदी हैं। सर्व वस्तुओंमें मन्दीधारा दिखाई देगा। ता० १३ को तेजीका उछाला आकर ता० १४ को भाव समान दिखाई देंगे।

ता० १५ से २१ सितम्बर तक

ता० १५ को बुध शुक्रकी युति होगी, वह फिर आपको मन्दी दिखाई देकर बाजारको ता० १८ से एक भारी तेजीमें ले जावेगी। ता० २०, २१ तक बाजार मन्दीसे गुजरेंगे, लेकिन यह मन्दी मामूली मन्दी ही समझना, आंकड़े अधिक नहीं दिखाई देते हैं।

ता० २२ से २८ सितम्बर तक

ता० २२-२३ को दोनों तरफ बाजार चलेंगे, वहां घटे भावोंमें माल पौते रखना। ता० २४ से २७ तक एक चाईन तेजी चले, वह चांस परीक्षित बता पड़ा है। आंकड़ोंका अनुमान लगाते भावोंमें चांदी ३) ३॥), स्वर्ण १) ११), गुवार मटर ॥।) १) आईरन १) ११) टाटा-डिफर्ड ४०) ४५), कालीमिर्च ३०) ३५), रुई अरंडा ५) ७), अलसी, सरसों, मूंगफली २) २॥) की तेजी पकड़ ले। ता० २८ को कुछ मन्दा रहेगा।

ता० २९ सितम्बर से ५ अक्तूबर तक

ता० २९ की आई हुई मन्दीमें माल पोते करो, ता० ३० से २ अक्तूबर तक बाजारमें तेजियां आवेंगी। हर वस्तु मात्र तेजीमें रहे, ता० ३-४ को बाजार दोनों तरफ चलता हुआ मन्दीका समर्थन करेगा। लेकिन ता० ४ के बन्द बाजार पर माल पोते करो। ता० ५ को तेजी-का तरारा आवेगा।

ता० ६ से १० अक्तूबर तक

ता० ६ को मार्केटमें तेजी आवेगी, ता० ७ को भी उछाला आवेगा। इस आये उछालेमें मालका बेचाण करो। ता० ८-९-१० इन तीन दिनोंमें मार्केट दोनों तरफ भारी दौड़ धूप लगावेगा। लेकिन आप आये उछाले मालका बेचाण चालू कर दें। नफा खाना चतुर व्यापारी-का काम होगा, आगे आनेवाले अनुभूत चांस और हमारी राय जाननेके लिए ४) भेजकर श्रीस्वाध्यायके ग्यारहवें वर्षके ग्राहक शीघ्र बन जाइये।

अचूक चाँस चांदी, स्वर्ण, गुवार, मटर, शेयर

[ता० १४ जुलाई से १० अक्तूबर सन् १९५१ ई० तक]

ता० मास — बाजारका रुख

१४ जुलाई सायंकाल ६ से ९ तक बाजार तेज चांदी ॥) ॥=)

१६ जुलाई प्रातःसे सायं तक मन्दा, चांदी १॥ २), शेयर स्वर्ण, गुवार, मटर ॥) ॥।)

१९ जुलाई मामूली तेजीके झुमके आयेंगे।

२० जुलाई सायंकाल ४-४५ से मन्दी चल पड़े, चांदी ॥।) १) मन्दा।

२३ जुलाई खुलते बाजारसे चांदी १) ११) तेजीमें बन्द होगी।

२४ जुलाई मध्यान्ह २से ४ बजे तक चांदी ॥) ॥।) तेजी।

३१ जुलाई सायंकाल ६ से रात्रिके ९ बजे तक तेज ।
१ अगस्त प्रातः १० बजेसे ४ बजे तक चांदी १) ११) तेज ।
३ अगस्त मध्यान्ह १२॥ बजेसे बन्द बाजार तक मन्दा ।
४ अगस्त मध्यान्ह १॥ बजेसे ४ बजे तक मन्दा, रात्रि ९ से ९ तेजी ।
६ अगस्त प्रातः ८ से २ तक चांदी मन्दी १) ११)
१२ अगस्त मध्यान्ह ३॥ से ४॥ बजे तक मन्दा ॥) १) होगा ।
१४ अगस्त मध्यान्ह १॥ बजे से ३ बजे तक चांदीमें तेजी १) १।)
१५ अगस्त मध्यान्ह ३ से ५ बजेतक चांदीमें तेजी ॥) १)
१७ अगस्त दिन भर तेजीका चांस है । चांदीमें १॥) २) भी बढ़ जायँ ।
१८ अगस्त मध्यान्ह १ से ४ बजे तक चांदीमें तेजी ॥) १)
२० अगस्त रात्रि मन्दीमें गुजर जावेगा ।

१ सितम्बर दिन २। बजे से ६ बजे तक चांदी मन्दी १) ११) फिर तेज ॥) १)
४ सितम्बर सायंकालसे रात्रिके ९ बजे तक चांदीमें तेजी ॥) ।=) होगी ।
८ सितम्बर सायंकाल ६। से ८। बजे तक मन्दी ।
१० सितम्बर प्रातः ११ से ४ बजे तक १) ११) मन्दी ।
१४ सितम्बर आये उछाले के योग मन्दीके अधिक हैं ।
२४ सितम्बर मध्यान्ह २। बजे से ७ बजे तक तेजी ।
२८ सितम्बर प्रातः ८ बजे से ३ बजे तक तेजी १) ॥)
३० सितम्बर खुलते ८ बजे से १ बजे तक मन्दा ।
१ अक्तूबर प्रातः ११॥ बजे तक कलकत्ता तेज फिर मन्दी चल पड़े ।
४ अक्तूबर सायंकालसे रात्रिमें चांदीमें मन्दी चलेगी ॥) ॥=)
७ अक्तूबर प्रातःसे २ बजे तक तेजी फिर २। बजेसे सायंकाल तक मन्दा ।

त्रैमासिक अनुभूत रिपोर्ट

चांदी, सोना, रुई, गुड़ आदि की तजी-मन्दी

[लेखक—ज्यो॰ भू॰ दै॰ र॰ पं॰ गिरिधारीलाल शर्मा]

प्रथम सप्ताह

सम्वत् २००८ आषाढ़ शुक्ला १० शनिवार ता० १४ से २१ जौलाई तक चांदी में २) या ३) की तेजी आकर मन्दी होने की सम्भावना है। १४ जौलाई के सायङ्काल से गुड़ में तेजी का झटका पाकर १६ १७-१८ तारीखों में भी तेजी बनी रहेगी। ता० १७ को अच्छी घटा बढ़ी होगी। शेयरें अचूक तेज होंगी।

द्वितीय सप्ताह

ता० २२ से २८ जौलाई तक सोना चांदीमें अवश्य तेजी रहेगी। ता० २३के ४ बजेसे २४के २ बजे तक अवश्य तेजी रहेगी। ता० २६, २७में घटाबढ़ी होगी। ता० २६को एक घंटासे व्यापार बदलते रहो। ता० २८को एक तरफा व्यापार रहेगा। ४ बजे व्यापार बदलेगा।

तृतीय सप्ताह

ता० २६ जुलाईसे ४ अगस्त तक साधारण घटाबढ़ी रहेगी। ता० १ या २से गुड़ खांड साधारण मन्दे रहेंगे। सोना चांदीमें तेजी रहेगी। चांदीकी अपेक्षा सोनेमें ज्यादा घटाबढ़ी रहेगी। परन्तु जहां घटे वहां लेना अच्छा रहेगा। ता० ३० जौलाईमें तेजी ३१में मन्दी, ता. १ अगस्तको २ बजे तक मन्दी पीछे तेजी, ता. २ को रात्रिमें तेजीका वातावरण रहेगा।

सोने चांदीमें ता. ३ ४ को विशेष तेजी होगी तेजी मन्दी लगाओ।

चतुर्थ सप्ताह

ता० ५ अगस्तसे ११ तक घटबढ़ का सामना करना पड़ेगा। ता. ६, ७ को एक अवश्य तेजीका चांस है। ता० ८ के १ बजेसे और ता० १० के १२ बजेसे सोना चांदीमें घटाबढ़ी से मन्दी रहेगी। गुड़, खांडमें तेजी आवेगी। ता० १० को एक बार घटेगा, वहां खरीदो। सोना चांदीमें ता. ११ को तेजी होगी।

पंचम सप्ताह

ता. १२ अगस्तसे १७ तक सोना चांदी में तेजी रहेगी। एक तरफा नहीं होगी। ता. १३ को पहले घटेगा वहां खरीदो। ता. १४ को घटबढ़ चलेगा, दिन भर कभी ॥) घटेंगे कभी ॥) बढ़ेंगे। ता. १५ को २ बजेसे १६ तक तेजी खेलना। मन्दीमें खरीदो।

षष्ठ सप्ताह

ता. १८ अगस्तसे २५ तक घटाबढ़ीसे मन्दी रहेगी। परन्तु ता. २१ से मन्दी होगी। पहले घटबढ़से तेजी होगी। ता. १८ या २०को अवश्य तेजी आवेगी। ता० २१, २२ में अचूक मन्दीका योग है। अगर ता० २१, २२में मन्दी नहीं हो सके तो २३, २४ में अवश्य मन्दी होगी। ता. २५ को तेजी रहेगी।

सप्तम सप्ताह

ता. २६ अगस्तसे ३१ तक २) या ३) रु० की मन्दीका योग है। गुड़, खांडमें भी मन्दी रहेगी। ता. २६ को एकबार तेजी होगी। यहां बेचो। ता. २८, २९, ३०, ३१ में प्रायः मन्दी रहेगी। इनमें भी २८, २९ में अवश्य मन्दी होगी। ता. ३० को मन्दी होके तेजीका योग है। ता. ३१ को घटाबढ़ी होती रहेगी। ता. १ सितम्बरको चांदी मन्दी होकर तेज होगी।

अष्टम सप्ताह

ता. १ सितम्बरसे ७ तक चांदी सोनेमें अवश्य मन्दी आवेगी। ता. ४, ५, ६ में अचूक मन्दी होगी। ता. ७, ८ को दोतरफा बाजार रहेगा। अच्छी घटाबढ़ी रहेगी बढ़े भाव बेचो।

नवम सप्ताह

ता. ९ सितम्बरसे १५ तक घटे भावमें खरीदना अच्छा है। ता. १०को अवश्य तेजी, ११ को मन्दी, १२ को २ बजेसे तेजी, १३ और १४ को दोतरफा लगाओ। ता. १५ को तेजी, यहां पर उत्पात भी बहुत होंगे।

दशम सप्ताह

ता. १६ सितम्बरसे २३ तक मन्दीकी सम्भावना बनी रहेगी। बढ़े भाव बेचो। ता. १७ को एकबार तेजी होगी वहां बेचो। ता. १८, १९ को अवश्य मन्दी होगी। ता. २०, २१ को दोतरफा लगाओ घटबढ़ रहेगा। यहां बढ़े वहां बेचो। ता. २२ को मन्दी होकर तेजीकी संभावना है।

ग्यारहवां सप्ताह

ता. २४ सितम्बर से ३० तक इसमें भी २८ तक तो तेजी रहेगी। २९, ३० और १ अक्टूबरको मन्दी रहेगी। ता. २५, २६ अवश्य तेजी, ता. २६ को दो तरफा लगाओ ता. २८ को दिनभर घटबढ़ रहेगा। ता. २९ या १ अक्टूबरको अच्छी मन्दी आवेगी।

बारहवां सप्ताह

ता. २ अक्टूबरसे ६ तक व्यापारमें बहुत परिवर्तनका योग है। इसमें व्यापारी वर्ग सचेत होकर कार्य करें।

सारांश—

आषाढ़ शुक्ला १० दशमी ता. १४ जौलाईसे ६ अक्टूबर तक उत्पातोंका समूह घेरे रहेगा। इन तीन महीनोंमें एकबार प्रजा और व्यापार पर हिन्दुस्तान और पाकिस्तानके भयङ्कर दूषित वातावरणका प्रभाव अवश्य पड़ेगा।

वर्षाका उत्पात भी एकबार भयंकर रूप धारण करेगा। कई एक ग्रामोंकी सीमाएं नष्ट-भ्रष्ट हो जायँगी।

भाद्रपद मास ज्यादा करके मन्दीमें रहेगा। तेजीका व्यापार कम करो। आश्विन प्रथम पक्षमें प्रथम हफ्तामें तेजी, दूसरेमें मन्दी रहेगी। ता. २ अक्टूबरसे १० दिन विशेष घटबढ़में रहेंगे। यहां संसारमें व्यग्रता बढ़ेगी। १३ दिनका पक्ष शान्तिमें नहीं गुजरेगा। युद्ध या वर्षासे हानि होगी।

•~•~•

लॉटरी द्वारा अनायास धनप्राप्तिका योग

(ले०—श्री पं० गंगाप्रसादजी ज्योतिषाचार्य)

लग्नमें मेष, वृषभ, कर्क, मकर राशिका चन्द्रमा, १।४।२।८।९ राशिका गुरु १।४।२। स्थानमें, २।८।१२ राशिका शुक्र ८।६।११ स्थानमें, ७।१०।११ राशिका शनि ४।७।११ स्थानमें तथा अष्टम और पंचम स्थानमें २।४।८।१०।११ राशिके चं. गु. बु. शु. हों तो उस प्राणीको अवश्य ही लाटरीसे अनायास धनकी प्राप्ति होगी।

(१) जिसका कर्कका गुरु चतुर्थमें, तुलाका शनि सप्तममें, वृश्चिकका शुक्र अष्टममें हो तो उसकी लाटरीसे ६००००) की संख्या तक लाटरीसे धन प्राप्त होता है। यदि धनुका गुरु नवममें, मकरका मंगल दशम हो तो उसकी लाटरीसे ढाई लाखका अनायास धन प्राप्त होता है।

(२) लग्नमें सिंहका चन्द्रमा, शनि कुम्भका हो तो ३००००) लाटरीसे अनायास धनका लाभ होता है, देखो कुण्डली माधव जी गोरधनदास बम्बई की। इस योगमें (र. गु. मं.) लाभ स्थानमें ऊपरके योगको पुष्ट करते हैं। सन् १९२३ में लाटरीसे तीस हजार प्राप्त हुए।

(३) केवल मकरका चन्द्रमा लग्नमें, गुरु मेष या कर्कका चतुर्थमें हो, शनि या बुध धनेश हो तो ८०००) का अचानक धनका लाभ लाटरीसे होता है।

(४) केवल बुध शुक्र कुम्भ राशिके अष्टम भावमें हो तो १०००) लाटरीसे अनायास धन मिलता है। इन योगोंमें (चं. मं.) का योग एक राशिमें होना आवश्यक है।

———

त्रैमासिक राशिफल

[ले०—श्री पं० गंगाप्रसादजी ज्यो०]

आषाढ़ शुक्ल श्रावण कृष्ण पक्ष

(ता० ५ जुलाईसे २ अगस्त तक)

मेष—सम्पत्ति सुख, यश, लाभ हो, बड़े काम हों, मुकद्दमे मामले ठीक, शत्रु नष्ट हों।

वृषभ—विशेष लाभ नहीं, लड़ाई झगड़ा हो, मुकद्दमे मामले ठीक नहीं।

मिथुन—समय ठीक, लाभ हो, व्यापार ठीक, घरू त्रास, रोग, बुद्धि अच्छी, नये काममें लाभ व यश मिले।

कर्क—रोग, शरीर कष्ट, पराधीनता, मन चंचल, चिन्ता बढ़े, खर्च बढ़े, व्यापारसे लाभ नहीं।

सिंह—समय ठीक, लाभ अधिक, सब प्रकारका सुख हो, हाथमें लिये कामोंमें यश व लाभ हो।

कन्या—समय ठीक नहीं, रोग, जिम्मेदारीके कामोंमें सावधानी रखना चाहिये।

तुला—मित्रोंसे वैमनस्य व शत्रुओंसे भय, क्लेश हो, बड़े-बड़े काम हों, लाभ कम हो, यश मिले, बड़े लोगोंसे मित्रता हो, शरीर सुखी रहे।

वृश्चिक—बड़ी-बड़ी अड़चनें आवें, फिकर रहे, व्यापार मामूली, शरीर कष्ट, काम-काज सावधानीसे करना चाहिये।

धनुः—स्थावर सम्पत्तिसे लाभ, मान मिले, सवारीसे सुख हो, खर्च अधिक, शरीर कष्ट, स्थावरकी चिन्ता, बड़ोंसे विरोध।

मकर—स्त्री चिन्ता, घरू कलह, खर्च अधिक, शारीरिक क्लेश, अड़चन, स्थावर जायदादमें झगड़ा हो, मान हानि, कर्ज बढ़े।

कुम्भ—समय साधारण, लाभ कम, चालू व्यापार मामूली, उतावलीसे काम करनेमें नुकसान हो, बुद्धि भ्रम हो।

मीन—बड़े लोगोंसे मित्रता हो, शरीरको क्लेश, स्त्री सन्तानको मामूली, चंचल बुद्धिसे काम करनेमें नुकसान हो, मानसिक कष्ट।

श्रावणशुक्ल भाद्रपदकृष्णपक्ष

(ता० ३ अगस्तसे १ सितम्बर तक)

मेष—समय अच्छा, शरीर सुख मामूली, पीछे लाभ हो, आरम्भमें चिन्ता।

वृषभ—प्रतिकूल परिस्थिति, मन चंचल रहे, बुद्धि ठीक नहीं, संभलके काम करना चाहिये। यह महीना चिन्ताकारक जायगा।

मिथुन—यश मिले, लाभ हो, स्त्री कष्ट, घरू फिकर, व्यापारमें पूर्ण लाभ हो, गुप्त शत्रुसे भय, सवारी सुख साधारण।

कर्क—आरम्भमें रोग हो, उत्तरार्ध ठीक जायगा, अपमानका भय, घरू सुख कम, कुटुम्बीय कष्ट हो।

सिंह—समय ठीक, सम्पत्ति सुख, लाभ हो, मान मिले, नये काममें यश, व्यापारमें लाभ हो।

कन्या—चालू व्यापारमें व नये काममें यश मिले, शरीर कष्ट, खर्च अधिक, साम्पत्तिक लाभ, सुखमें अड़चन।

तुला—समय साधारण, लाभ कम, मित्र विरोध, शत्रु बढ़ें, व्यापारमें लाभ हो, यश मिले, अकस्मात् लाभ हो।

वृश्चिक—काम काजमें असफलता, स्वास्थ्य खराब, वात विकार, पित्त विकार, प्रवास।

धनुः—समय अनुकूल, सब काम पूरे होंगे, सम्पत्ति मिले, लाभ हो, नौकरीमें लाभ, बड़े लोगोंसे मित्रता, रोग।

मकर—घरू चिन्ता, सन्तान चिन्ता व्यापार मामूली, नये काममें लाभ हो, परिश्रम अधिक।
कुम्भ—खर्च अधिक, रोग, घरू कलह, मित्रोंसे विरोध, व्यवसाय चिन्ता।
मीन—जल्दी करनेसे नुकसान होगा लाभ साधारण, साम्पत्तिक सुख, सवारी सुख, मित्रोंसे सहायता मिले, धन लाभ हो।

भाद्रपदशुक्ल आश्विनकृष्ण

(ता० २ सितम्बर से १ अक्तूबर तक)

मेष—द्रव्य लाभ हो, सम्पत्ति मिले, नये काममें यश मिले, राजद्वारसे लाभ, कष्ट, प्रापचिक क्लेश।
वृषभ—चित्त प्रसन्न, अकल्पित लाभ हो, कार्य सिद्धि हो, लेन देनमें सावधानीसे काम लेना चाहिये, लड़ाई झगड़ेसे बचना चाहिये।
मिथुन—सार्वजनिक कामोंमें भाग लेनेसे भय, समय ठीक नहीं, व्यवसायिक चिन्ता।
कर्क—घरू कलह, मित्रोंसे विरोध, गुप्त शत्रुसे त्रास, शरीर सुख मामूली, कुटुम्बीय कष्ट, लाभ कम, परिश्रम अधिक।
सिंह—लाभ कम, मित्रोंकी सहायतासे लाभ, शरीर सुखी रहेगा। कोई गुप्त चिन्ता रहे।
कन्या—चित्तको दुखी करने वाला प्रसंग आवेगा, भ्रान्ति होगी, घरू कलह, स्त्री कष्ट, खर्च अधिक, गुप्त चिन्ता।
तुला—धन इकट्ठा होगा शरीर कष्ट, व्यापार सुधरेगा, नीचोंसे कष्ट, शत्रु वृद्धि।
वृश्चिक—पहिलेसे सोचे हुए काम ठीक होंगे, व्यापार सुधरेगा, लाभ होगा।
धनुः—व्यापारके लिये पूर्वार्ध ठीक नहीं, लाभ कम, खर्च अधिक, व्यवसाय चिन्ता।
मकर—शत्रुओंसे भय, अपयश, लाभ कम, खर्च अधिक पारिवारिक चिन्ता।
कुम्भ—लाभ हो, मुकद्दमा मामलेमें विजय, सवारीसे सुख, डूबी हुई रकम मिलेगी, शरीर सुख, स्त्री सन्तान चिन्ता।
मीन—यह महीना लाभका व सुखका जायगा, मान प्रतिष्ठा बढ़ेगी, सन्तान सुख, भाग्योदय, तीर्थयात्रा, साधु दर्शन हो।

—★★—

त्रैमासिक पर्व व्रतादि निर्णय

['श्री विश्वविजय पञ्चाङ्ग'से]

आषाढ़ शुक्ला	१० शनिवार ता० १४ जुलाई	श्री स्वाध्याय सदन स्थापना दिवस
	११ रविवार ता० १५ जुलाई	देवशयनी एकादशी व्रत
	१२ सोमवार ता० १६ जुलाई	सोमप्रदोषव्रत कर्कसंक्रांति मु० १५
	१५ बुधवार ता० १८ जुलाई	व्यासपूजा गुरुपूर्णिमा सत्यव्रत, वायुपरीक्षा
श्रावण कृष्ण	३ शनिवार ता० २१ जुलाई	श्री गणेश चतुर्थी व्रत, चन्द्रोदय स्टेंडर्ड टाईम ९।२६
	११ रविवार ता० २९ जुलाई	कामदा एकादशी व्रत ।
	१३ मंगलवार ता० ३१ जुलाई	प्रदोषव्रत
	१४ बुधवार ता० १ अगस्त	श्री लोकमान्य तिलक सम्वत्सरी
	३० गुरुवार ता० २ अगस्त	अमावास्या गुरुपुष्ययोग
श्रावण शुक्ला	१ शुक्रवार ता० ३ अगस्त	नक्तव्रतारम्भ
	२ शनिवार ता० ४ अगस्त	चन्द्रदर्शन
	३ सोमवार ता० ६ अगस्त	सिंधारा तीज मधुश्रवा ३
	४ मंगलवार ता० ७ अगस्त	नागपंचमी, ऋषितर्पण, (श्रावणी उपाकर्म)
	७ गुरुवार ता० ९ अगस्त	श्री गोस्वामी तुलसीदास जयन्ती
	८ शुक्रवार ता० १० अगस्त	दुर्गाष्टमी मेला श्री नयना देवी और चिन्तपूर्णी ।
	११ सोमवार ता० १३ अगस्त	पुत्रदा एकादशी व्रत
	१२ मंगलवार ता० १४ अगस्त	भौमप्रदोषव्रत
	१३ बुधवार ता० १५ अगस्त	भारत स्वातन्त्र्योत्सव ५ वां
	१४ गुरुवार ता० १६ अगस्त	सत्यव्रत
	१५ शुक्रवार ता० १७ अगस्त	रक्षाबन्धन (राखड़ी) प्रातः स्टे. टा. ८।४२ तक [illegible] संक्रांति मु० ३०
भाद्रपद कृष्णा	३ रविवार ता० १९ अगस्त	कजली तीज
	४ सोमवार ता० २० अगस्त	श्री गणेश ४ व्रत चन्द्रोदय स्टैण्डर्ड टाइम घं० ८ मि० ५७
	६ बुधवार ता० २२ अगस्त	चन्दन ६ हल ६ चन्द्रोदय स्टैण्डर्ड टाइम घं० १० मि० १
	८ शुक्रवार ता० २४ अगस्त	श्रीकृष्णजन्माष्टमीव्रत चन्द्रोदय स्टैण्डर्डटाइम घं. ११ मि० १६
	९ रविवार ता० २६ अगस्त	श्री रामानन्दाचार्य जयन्ती, गुग्गा ९
	११ मंगलवार ता० २८ अगस्त	अजा एकादशी व्रत
	१२ बुधवार ता० २९ अगस्त	प्रदोष गोवत्सा १२
	३० शनिवार ता० १ सितम्बर	कुशोत्पाटिनी पिठोरी अमावस्या शनैश्चरी ३०

मास	तिथि	वार	तारीख	विवरण
भाद्रपद शु०	२	सोमवार	ता० ३ सितम्बर	चन्द्रदर्शन
	३	मंगलवार	ता० ४ सितम्बर	हरितालिका ३ व्रत वाराहजयन्ती पत्थर चौथ, कलङ्क चौथ चन्द्रदर्शन निषेध
	५	गुरुवार	ता० ६ सितम्बर	ऋषिपंचमीव्रत
	७	शनिवार	ता० ८ सितम्बर	महालक्ष्मी व्रतारम्भ सुतका ७ मुक्ताभरण ७
	९	सोमवार	ता० १० सितम्बर	श्रीचन्द्रनवमी उदासीन सम्प्रदाय महोत्सव
	११	मंगलवार	ता० ११ सितम्बर	पद्मा एकादशी व्रत स्मार्तोंका
	१२	बुधवार	ता० १२ सितम्बर	पद्मा एकादशी व्रत वैष्णवोंका वामन जयन्ती मेला
	१३	गुरुवार	ता० १३ सितम्बर	प्रदोषव्रत [अम्बाला और पटियाला
	१४	शुक्रवार	ता० १४ सितम्बर	अनन्तचतुर्दशी व्रत, मेला कपाल
	१५	शनिवार	ता० १५ सितम्बर	प्रौष्ठपदी श्राद्ध सत्यव्रत पूर्णिमा
आश्विन कृष्ण	१	रविवार	ता० १६ सितम्बर	महालय (पितृ पक्ष) प्रारम्भ
	२	सोमवार	ता० १७ सितम्बर	कन्या संक्रांति मु० ३०
	३	मंगलवार	ता० १८ सितम्बर	श्रीगणेशचौथ व्रत, चन्द्रोदय स्टेंडर्ड टाइम घं. ७ मि. ५१
	७	शनिवार	ता० २२ सितम्बर	महालक्ष्मी व्रत, जीवित्पुत्रिका व्रत
	९	सोमवार	ता० २४ सितम्बर	सौभाग्यवती स्त्रियोंका श्राद्ध मातृनवमी
	११	बुधवार	ता० २६ सितम्बर	इन्दिरा एकादशी व्रत स्मार्तोंका
	१२	गुरुवार	ता० २७ सितम्बर	इन्दिरा एकादशी व्रत वैष्णवोंका सन्यासियों का श्राद्ध
	१३	शुक्रवार	ता० २८ सितम्बर	प्रदोषव्रत ।
	१३	शनिवार	ता० २९ सितम्बर	शस्त्राग्निविषादिसे मृतकोंका श्राद्ध
	१४	रविवार	ता० ३० सितम्बर	जिनकी मृत्यु तिथि का ज्ञान नहीं है उन मृतकों का श्राद्ध महालय समाप्ति अमावास्या
	३०	सोमवार	ता० १ अक्टूबर	सोमवती अमावस मातामहका श्राद्ध ।
आश्विन शुक्ला	१	मंगलवार	ता० २ अक्टूबर	शारद नवरात्रारम्भ, घटस्थापन, और १३ दिनका पक्ष प्रारम्भ श्री महात्मा गान्धी जयन्ती चन्द्रदर्शन
	५	शुक्रवार	ता० ५ अक्टूबर	ललिता पञ्चमी
	६	शनिवार	ता० ६ अक्टूबर	मेला माईसरखाना
	७	रविवार	ता० ७ अक्टूबर	श्री सरस्वतीजीका आवाहन
	८	सोमवार	ता० ८ अक्टूबर	श्रीदुर्गाष्टमी, श्रीसरस्वतीपूजन, बलिदान मेला श्रीज्वालामुखी
	९	मंगलवार	ता० ९ अक्टूबर	श्रीसरस्वती विसर्जन नवरात्रसमाप्ति । बुद्धजयन्ती, विजययात्रा १० शमीपूजन राजचिन्ह पूजन सीमोल्लंघन
	१०	बुधवार	ता० १० अगस्त	विजयादशमी, पट्टाभिषेक, दशहरा का मेला ।

———

दैवज्ञकी दृष्टिमें संसार-चक्र

स्वतन्त्र भारतके पांचवें वर्षलग्नका भविष्य

नभोमण्डलमें वक्रगतिसे जाने वाले गुरु शुक्रका भूमण्डल पर प्रभाव

❀ आषाढ़ी पूर्णिमाकी वायु परीक्षा ❀

[श्री हरदेव शर्मा त्रिवेदी ज्योतिषाचार्य]



श्रावण शुक्ला १२ मंगलवार तदनुसार ता० १४ अगस्त (अर्धरात्रोत्तर १५ अगस्त) १९५१ ई० को इष्ट घट्यादि ४७।२६ पर वृष लग्नमें भारतको स्वतन्त्र हुए चार वर्ष पूर्ण होकर पांचवां वर्ष प्रारम्भ हो जायेगा। इस समयकी ग्रहस्थिति निम्न है –

स्वतन्त्र भारतका पांचवां वर्षलग्न



और यह है स्वतन्त्र भारतका जन्मलग्न
[ता० १५ अगस्त १९४७ इष्ट ४२।२०]



गत वर्ष इन्हीं दिनों हमने 'श्रीस्वाध्याय'के 'ग्रीष्माङ्क' में स्वतन्त्र भारतके चतुर्थ वर्षलग्नका विचार करते हुए स्पष्ट लिखा था कि—"इस वर्ष विश्व युद्ध नहीं होगा......भारतके शारीरिक बल एवं आर्थिक स्थितिमें कोई विशेष सुधार न हो सकेगा।......सरकार अपने कार्यसे जनताको प्रसन्न नहीं कर सकेगी। भ्रष्टाचार रिश्वतखोरी और चोर-बाजारीसे जनता संत्रस्त होकर शासनका विरोध करने पर बाध्य होगी।......किसी प्रधान पुरुषका निधन होगा।......शान्तिपूर्ण ढंगसे अखण्ड काश्मीर भारतके अधिकारमें न आ सकेगा। यह प्रदेश भारत और पाकिस्तानकी प्रतिस्पर्धाका अड्डा बना रहेगा।......" इत्यादि।

वर्तमान वर्षके 'श्रीविश्वविजय-पंचांग' और 'श्रीस्वाध्याय' के गताङ्कमें सं० २००८ का जो विस्तृत भविष्य विवेचन हमने किया था वह पाठकों को विदित ही है। अब यहां पांचवें वर्ष लग्नकी ग्रहस्थिति पर शास्त्रीय विचार प्रकट करेंगे।

स्वतन्त्रताका यह पांचवां वर्ष भारतके लिए बड़ा क्रांतिकारी और ऐतिहासिक घटनाओंको लेकर आ रहा है। ग्रहस्थिति अनेक प्रकारकी उलझनें और आपत्तियोंको प्रकट कर रही है। एक प्रकारसे इस वर्षमें स्वतन्त्रताका पुनर्जन्म ही कह दिया जाय तो कोई अत्युक्ति न होगी। क्योंकि इस वर्षका लग्न वही आया है जो जन्म लग्न था। वर्षलग्न जन्मलग्नके समान (एक) होने पर ज्योतिष-शास्त्रकी परिभाषामें उसे 'द्विजन्मा योग' कहते हैं। इसका फल शास्त्रकारोंने यों लिखा है—

वर्षलग्न जनुर्लग्ने भवेतां च यदा समे।
द्विजन्माख्यस्तदा योगः कष्टमृत्यु प्रदायकः ॥

जिस प्रकार किसी व्यक्तिकी वर्षकुण्डलीमें द्विजन्मा योग हो और लग्न लग्नेश बलवान् न हो तो उस व्यक्तिको वह सारा वर्ष कष्टप्रद जाता है। इसी प्रकार यह वर्ष भारत राष्ट्रके लिए कठिनाई का जायेगा। सरकार एवं जनताके सामने अनेक विषम-समस्याएं उत्पन्न होकर अग्निपरीक्षाका समय उपस्थित होगा। त्रिविधतापोंसे जनता सन्तप्त रहेगी। आर्थिक संकट भयानक रूप धारण करेगा। लग्नेश शुक्र शत्रुराशिमें नीचाभिलाषी होकर राज्येश शनिसे द्विर्द्वादश योग बना रहा है और प्रजा-सत्तात्मक पराक्रमेश चन्द्रमा अष्टम भावमें चला गया है। अतः राजा प्रजाका वैमनस्य उग्ररूप धारण करेगा। पारस्परिक प्रतिस्पर्धा और राजनैतिक दल बन्दियोंके दल-दलमें भारतका द्रव्य और दीमाग बुरी तरह दब जावेगा। जन्मलग्नेश वर्षलग्नेश शुक्र पाप युक्त है और केन्द्र तथा पंचम स्थानमें पाप ग्रह भी देशके दुःख दरि-द्रय और धननाशादि अशुभ फलके सूचक हैं। लिखा भी है—

'जन्माधिपः क्रूरयुतस्तदानीं
महार्थ नाशं मरणेन तुल्यम्।'
'पापग्रहाः पंचमकेन्द्रगा वा
दारिद्र्य दुःखाय भवन्ति तत्र॥'

त्यागभावना निर्लोभवृत्ति और उदारताका अभा-वसा कहीं दिखाई नहीं देगा। राजनैतिक सामाजिक गति-रोधके साथ ही मनुष्योंके प्रज्ञापराध और अधार्मिक मनो-वृत्तिके कारण भारतमें दैवी-प्रकोप (अनावृष्टि अतिवृष्टि दुर्भिक्ष अग्निकाण्ड भूकम्प महामारी आदि) से भी बहुत हानि होगी। इन दैवी आपत्तियोंका मूलकारण और उनसे बचनेके उपाय हम गत वर्षके ग्रीष्माङ्क (वर्ष ६ अङ्क ४) में शास्त्रीय आधार पर भली प्रकार लिख चुके हैं। जब तक इन आपत्तियोंके मूल कारणके प्रतीकारका प्रयत्न नहीं किया जायेगा तब तक संसारमें सुख शान्तिका साम्राज्य स्थापित होना सर्वथा असम्भव है, अस्तु।

इस वर्ष आसाम, बिहार, उड़ीसा, बंगाल, नेपाल, तिब्बत, काश्मीर, पंजाब, राजस्थान और पूर्व दक्षिण एवं पश्चिमोत्तरीय सीमा प्रदेशोंमें उत्पात अधिक होंगे। किसी प्रधान पुरुषकी मृत्यु होगी। केन्द्रीय व प्रान्तीय मन्त्रि-मण्डलोंमें उलट फेर होगा। कई बगुले भक्तोंका असली रूप इस वर्ष सामने आयेगा। सामन्तशाहीका आतंक बढेगा। यत्र-तत्र चोर डाकू लुटेरों द्वारा जन-धनका अप-हरण होगा। कुछ एक उच्च पदारूढ व्यक्ति अपने साहस एवं सहन-शीलताका संतुलन खोनेके कारण जनताके कोपभाजन बनेंगे। तीसरे माससे आगेका समय विशेष विपद् ग्रस्त रहेगा। इस वर्षमें गुरु लाभस्थानमें बलवान् है। यही एक भारतकी प्रतिष्ठा और स्वतन्त्रताको जीवन प्रदान करता रहेगा। शनिका प्रतियोगी होनेके कारण यह गुरु आरम्भमें आर्योंको अनेक आपत्तियोंमें डालकर अन्तमें उनके गौरवको बढ़ाने वाला सिद्ध होगा।

संक्षिप्त द्वादश भाव फल

१. लग्नेश शुक्र वक्री होकर हृदय स्थानमें केतुके साथ पाप ग्रहोंके मध्यमें विराजमान है और लग्न पर शनिकी दृष्टि है अतः भारतीय प्रजाका शारीरिक एवं मानसिक स्वास्थ्य इस वर्ष पतनोन्मुख रहेगा। वीर्य विकार एवं अनाचारकी वृद्धि होगी। हृदयमें स्नेह सद्भावना न रहेगी। राष्ट्रके किन्हीं दो प्रमुख पुरुषोंको स्वास्थ्य बिग-ड़नेके कारण विश्राम करना पड़ेगा।

२. धनभाव शनिसे दृष्ट और धनेश पाप मध्य बैठा है। अतः इस वर्ष जनसाधारणकी आर्थिक स्थिति संकटा-पन्न रहेगी, राज्यकोषकी स्थिति भी चिन्ताजनक बनेगी। कुछ प्रान्त ऋणग्रस्त होंगे। करोंके बोझसे जनता संत्रस्त होगी। पूंजीपति और श्रमिकवर्गके संघर्षसे औद्योगिक क्षेत्रोंमें गतिरोध उत्पन्न होगा।

३. तृतीयेश चन्द्रमा अष्टममें और पराक्रममें नीचस्थ मंगलके साथ सूर्य हैं अतः जनताके साहस एवं परा-क्रमका ह्रास होगा। प्रजाजनोंमें कहीं भी उत्साह एवं आनन्दकी तरंगें दिखाई नहीं देंगी। सूर्य गुरुके कारण राजा वा अधिकारी वर्गकी ओरसे पूर्ण साहस और शौर्य दिखाया जावेगा, परन्तु वह दिखावा मात्र ही रहेगा।

आयात निर्यातमें कठिनाई होगी। किसी बड़े अधिकारी व सेनापतिको यान दुर्घटनासे आघात होगा।

४. लग्नेश शुक्र धनेश पंचमेश बुधके साथ चतुर्थ भावमें है, अतः भूमि-सुधार, ग्राम-सुधार, नगर निर्माण, कृषि एवं उपज वृद्धिके लिए नवीन योजनाएं बनेंगी। नये बांध, खानें, नहरें और सड़कोंके विस्तारमें पर्याप्त व्यय होगा। परन्तु चतुर्थ भाव केतु और चतुर्थेश सूर्य नीचस्थ मंगलके साथ होनेसे ये सब योजनाएं पूर्णरूपेण सफल न हो सकेंगी। कहीं अर्थाभावसे, कहीं अनुभवी त्यागी कार्यकर्ताओंके अभावसे, कहीं प्रकृति-प्रकोपसे तो कहीं राजनैतिक पारस्परिक प्रतिस्पर्धासे पूर्ण प्रगतिमें बाधा उपस्थित होगी। गृहमंत्री और गृह विभागके लिए यह वर्ष अनुकूल नहीं है।

(५) पंचमेश बुध केन्द्रमें है और पंचमभाव गुरुसे दृष्ट है; अतः इस वर्ष विज्ञान और शिक्षा संस्थाओं की उन्नति विशेष होगी। शिक्षामें पर्याप्त सुधार होगा। पंचममें शनि पड़ा है अतः हिन्दी संस्कृतसाहित्यकी उन्नतिमें अन्दर बाहरके शत्रुओं द्वारा बाधा पड़ेगी। शिक्षामन्त्रीके लिए भी यह वर्ष नेष्ट रहेगा।

(६) षष्ठेश शुक्र चतुर्थ भावमें बुध केतुके साथ हैं अतः भारतकी जल स्थल नभ सेनामें पर्याप्त सुधार होगा। सैनिक संगठन सुदृढ़ बनेगा। शत्रु स्थानाधिपति शुक्र लग्नेश भी है और शत्रु राशिमें ही पड़ा है अतः यह कई गुप्त शत्रु भी उत्पन्न करता है। वर्तमान कांग्रेसी सरकारके कई अपने अन्तरङ्ग निजी व्यक्ति भी शत्रु बन सकते हैं और अनार्यप्रकृतिके विदेशी एवं पड़ोसी गुप्तचर भारतको हानि पहुँचानेकी ताकमें रहेंगे। अतः ऐसे प्रच्छन्न शत्रुओं भारतको सदा सतर्क रहना चाहिये। मंगलके कारण कहीं सैनिक संघर्ष और कहीं रक्तपातकी भी सम्भावना है। परन्तु भौम दृष्टि होनेके कारण अन्तमें शत्रुओंके सभी दुष्प्रयत्न निष्फल होंगे। रक्षामन्त्रीके लिए यह वर्ष अग्नि परीक्षाका होगा।

(७) सप्तमेश मंगल नीचका है और सप्तमभाव शनिमंगलसे दृष्ट है अतः भारतके वाणिज्य व्यवसायके लिए वर्ष उन्नति कारक नहीं है। निम्नकोटिका व्यापारीवर्ग असंतुष्ट रहेगा। मध्यम श्रेणीके लोगोंको अपना जीवन निर्वाह कठिन होगा। नियन्त्रणसे अनेक गृहस्थ आपद्ग्रस्त होंगे। गुरु दृष्टि होनेके कारण विदेशोंसे भारतका सम्बन्ध सहानुभूतिपूर्ण रहेगा।

(८) अष्टम भावस्थ चन्द्रमा सूर्य मंगलसे षडष्टक योग बना रहा है अतः किसी राजपुरुषकी मृत्यु होगी। रोगादि उपद्रव भी बढ़ेगा। गुरुदृष्टि होनेके कारण उत्पादनमें वृद्धि और मृत्युसे जन्म संख्या अधिक होगी।

(९) नवम (भाग्य) भाव पर सूर्य मंगल शनिकी दृष्टि है। अतः इस वर्ष भी भारतके भाग्यविधाता रूठे ही रहेंगे। धार्मिकभावका ह्रास होगा और आर्यलोग कष्ट पावेंगे। भाग्येश उच्चाभिलाषी है और गुरुसे दृष्ट भी अतः आगे चलकर तुलाके शनिमें सम्वत् २०१०से भारतका भाग्य उज्ज्वल बनने लगेगा।

(१०) दशमेश शनि दशमभावसे अष्टम गया है, शत्रुग्रह सूर्य मंगलकी इस पर दृष्टि है अतः इस वर्ष केन्द्रीय और प्रान्तीय शासकोंके लिए कठिन अग्निपरीक्षाका समय उपस्थित करेगा। सबल हाथोंसे शत्रुओंका सामना करना पड़ेगा। एक छिद्रको बन्द करते दूसरी दरार फटने लगेगी। राज्येश मित्रक्षेत्रमें गुरुसे दृष्ट है अतः विरोधि वातावरणके होते हुए भी वर्तमान सरकारका अस्तित्व स्थिर रह सकेगा। मन्त्रीमंडलमें परिवर्तन अवश्यंभावी है।

(११) लाभस्थान में स्वक्षेत्री गुरु भारतको शक्तिशाली एवं स्वावलम्बी बनानेमें सहायक होगा। शनि पहले बाधा डालेगा।

(१२) व्ययेश मंगल नीचका होकर सूर्यके साथ तीसरे भावमें हैं अतः इस वर्ष राजनैतिक दल बन्दियों, सत्तारूढ़ होनेकी महत्वाकांक्षाओं, वाणिज्य व्यवसाय और सुरक्षा सम्बन्धी कार्योंमें राष्ट्रका धन विशेष रूपसे व्यय होगा। सूर्य मंगल शनिके कारण

पाकिस्तानसे आन्तरिक सम्बन्ध अच्छे न रहेंगे । सैनिक संघर्ष होगा । काश्मीरमें जन-धनका विनाश होगा । पश्चिमोत्तरीय भारतीय सीमापर शत्रु द्वारा आतङ्क फैलेगा ।

तीन मासके ग्रहयोग

क्रूर ग्रह वक्री होने पर महाक्रूर हो जाते हैं और शुभग्रह वक्री होने पर विशेष शुभफलदायी बनजाते हैं । लिखा भी है —

"सौम्याः यदा वक्रगता तदा वृष्टिविधायिनः'

"क्रूरावक्रा महाक्रूराःशुभावक्रा महा शुभाः'

वर्षारम्भमें जो दो क्रूरग्रह (शनि और नेपच्यून-इन्द्र) वक्री थे वे अब मार्गी हो गये हैं और आगे श्रावण शु० २ को गुरु और श्रा० शु० १० को शुक्र वक्री हो रहे हैं । गुरु मार्गी शु० २ और शुक्र आश्विन कृष्णा १० ता० २५ सितम्बर तक वक्री रहेंगे । अतः इस ३ मास की अवधिमें ये दोनों ग्रह संसारमें रोग दुर्भिक्ष युद्ध उत्पातादि अशुभ फलोंको न्यून करके कुछ सुख शान्तिकी वर्षा करेंगे । युद्ध उत्पातादि कारक मंगल श्रावण शु० ४ ता० ७ अगस्तको कर्क (नीच) राशिमें प्रवेश करेगा, इस पर सुख शान्तिकारक गुरुदेवकी मित्रदृष्टि रहेगी, अतः इस अवधिमें बड़े-बड़े राष्ट्रोंमें शान्ति और सन्धि चर्चाएं अधिक चलेंगी। सम्भव है ईरानकी वर्तमान विस्फोटक स्थिति शान्त हो जावे और कोरिया-काण्ड भी यहां समाप्त होता दिखाई देगा । ईरानी तेलके झगड़ेमें कोई समझौतेका मार्ग निकल आये तो आश्चर्य नहीं । शनि कन्या राशिमें चल रहा है और पाकिस्तानकी भी कन्या राशि है अतः काश्मीरकी समस्या अभी सुलझने न पायेगी । शनि पाकिस्तानियोंको आरम्भमें उन्मत्त एवं आक्रान्ता बनाकर अन्तमें विनाश करेगा । कन्याका शनि काश्मीरमें विग्रह-विनाश कारक रहेगा यह हम अपने पंचांग और गताङ्क में बता ही चुके हैं ।

अब यहां इन तीन मासमें आने वाले अन्य योगों का विवेचन करेंगे ।

(१) श्रावण कृष्णा प्रतिपदाको गुरुवार है, अतः आगे तिल, तैल और उड़द मंहगे होंगे । यथा—

श्रावणे कृष्णपक्षे च प्रतिपद्-गुरुवासरे ।
तदा माषस्तिलस्तैलं महर्घं च प्रजायते ॥

(२) मघासे चित्रा तक पांच नक्षत्रमें शुक्रका धूलिद्वार माना गया है । इस अवधिमें शुक्र धूलि द्वारमें ही रहेगा, यह प्रजामें दुःख, जलनाश या अतिवृष्टिसे उपद्रवकारक है । यथा—

मघादि पंचके शुक्रो धूलिद्वारेऽभ्युदीर्यते ।
प्रजा दुःखं जलनाशस्तदोपद्रवमादिशेत् ॥

(३) श्रावण शुक्लपक्षमें तिथिक्षय आगे कार्तिक मास में छत्रभंग या उत्पात सूचक है—

श्रावणेशुक्लपक्षे च तिथि क्वापि क्षया भवेत् ।
तदा वै कार्तिकेमासे छत्रभंगः प्रजायते ॥

(४) सिंह राशिमें शुक्र धान्य सुवर्ण लालरंगकी वस्तुएं और चतुष्पदोंका भाव मंहगा करेगा ।

यदा दैत्यगुरुः सिंहे हेम रक्तं चतुष्पदः ।
धान्यानि च महर्घाणि नाशं याति च वारिदः ॥

(५) भाद्रपद मासमें सिंहराशिमें सूर्य बुध शुक्र एकत्र रहेंगे ये सब अन्नपदार्थकी मंहगा करने वाले हैं । यथा—

एकराशौ गता ह्येते सौम्यशुक्रदिनाधिपाः ।
सर्वधान्य महर्घत्वं मेघाः स्वल्पजलप्रदाः ॥

(६) भाद्रपद कृष्ण ३०को सिंहराशिमें पंचग्रह योग जलप्लावन या उत्पात सूचक है ।

एकराशौ यदा यान्ति चत्वारः पंचखेचराः ।
प्लावयन्ति महीं सर्वां रुधिरेण जलेन वा ॥

(७) भाद्रपद कृष्णमें सिंहराशिमें शुक्रास्त राजाओं को कष्ट और अनावृष्टिकारक है—

'सिंहे पीड़ा भूपवर्गे तथाऽनावृष्टिजं भयम् ।'

(८) आश्विन कृष्णा ३ को मंगलवार अन्नकी मंहगाई और अग्निभयका सूचक है—

आश्विने हि तृतीयायां यदि भौमश्चनैश्चरो ।
तदा त्वग्निभयं विद्यादथवान्न महर्घता ॥

(९) आश्विन शुक्ल १ को मंगलवार है, अतः उड़द, कपास आदिका संग्रह करनेसे आगे चैत्रमें अच्छा लाभ होगा । यथा—

नवमी चाश्विने शुक्ले कुजवारेण संयुता।
मुहुः कार्पास चपला माषादेः संग्रहो मतः ॥
द्विगुणस्तु भवेल्लाभो चैत्रमासेऽथ विक्रये।

(१०) श्रावण शुक्ल २ को मीनराशिमें गुरु वक्री हो रहा है। यह संसारमें धन क्षय, चौरादि उपद्रवोंसे प्रजामें पीड़ा और सब प्रकारके अन्न धान्य, गुड़, खांड, घृत, तैल लवणादि पदार्थ विशेष मंहगे करेगा तथा कपास, रुई में भी पर्याप्त तेजी आती है। यथा—

मीनराशि गतो जीवो वक्रतामुपयाति चेत्।
धनक्षयस्तदा लोके चौराद्राजापि रोषितः ॥
निराधारा प्रजापीड़ा ग्रहभूतादि दोषतः।
तुलाभांडं गुड़ः खंडावाञ्छितार्घं ददाति च ॥
लवणं घृत तैलादि सर्व धान्य महर्घता।
कार्पासस्यार्घ सम्प्राप्तिलभिस्तेषां चतुर्गुणः ॥

सारांश

उपर्युक्त सब रोग संसारमें रोग दुर्भिक्ष, उत्पात, धनक्षय और अन्न हानिके द्योतक हैं। पंजाब, काश्मीर, राजस्थान और पूर्वी भारतमें उपद्रव अधिक होंगे। इस अवधिमें एक यही बात सन्तोषकी है कि गुरु शुक्र दोनों शुभग्रह बलवान् हैं, और शनि मंगल पर गुरुकी दृष्टि रहेगी। अतः उपद्रवोंके कारण उपस्थित होने पर भी स्थिति काबूसे बाहर नहीं होने पायेगी। वक्री गुरु शुक्र अन्न, वस्त्र घृत तैलादि रस पदार्थोंकी विशेष मंहगा न होने देकर सब वस्तुओंको ६ मास तक मंदीकी ओर ही ले जावेंगे। आगे माघ मास जनवरी १९५२ से उक्त सभी वस्तुओंमें विशेष तेजी प्रारम्भ होगी। इस अवधिमें उक्त योग आधिदैविक आधिभौतिक उपद्रव और सामाजिक, राजनैतिक संघर्षमात्र करावेंगे। दूसरी बात यह भी स्मरण रखें कि इन अनिष्ट योगोंके होने पर भी यदि भगवत् कृपासे आषाढ़ शु० १५ बुधवार ता० १८ जुलाई १९५१ ई०को वायुका शकुन अच्छा रहा तो इनका अनिष्ट परिणाम बहुत थोड़ा रह जावेगा, अन्यथा आगे घोर विप्लव होगा। लिखा भी है—

यदा श्रेष्ठतमाऽऽषाढ़ी ग्रहयोगातिदारुणा।
तदाऽनावृष्टिर्न दौष्ट्यं व्याधिश्च विग्रहोऽपि वा ॥

[जिस वर्षमें ग्रहोंका योग बहुत अशुभ हो, परन्तु यदि आषाढ़ी पूर्णिमा (वायु बादल आदिसे) श्रेष्ठ हो जावे तो अनावृष्टि दुःख रोग युद्ध विग्रहादि अशुभ फल उस वर्षमें अधिक नहीं होता।] अतः संवत्का शुभाशुभ फल जाननेके लिए आषाढ़ी पूर्णिमाको वायु-परीक्षा भली-भांति करना चाहिये।

वायु परीक्षा

आषाढ़ी पूर्णिमाको वायु देखनेके लिए क्षीर (दूध वाले) वृक्षके दश हाथके दण्ड पर महीन वस्त्रकी ५ हाथ लम्बी ध्वजा बांध कर (यदि ऐसा दण्ड और महीन वस्त्र न मिल सके तो लम्बे बांस पर सूतके धागेसे रुईकी पूणी बांध कर) नगरके पूर्व वा उत्तरमें कहीं समतल भूमि पर खड़ी कर (गाड़कर)के इन्द्र वरुण तथा ध्वजाका पूजन करके उसके द्वारा सायंकालकी वायु परीक्षा करे। ध्वजा को अभिमंत्रित करनेका मन्त्र यह है—

"ॐ सत्यदेवते ! सत्यवादिनी ! ध्वजरूपधरे !
ह्येहि ॐ ह्रां ह्रीं ह्रः सत्यवादिनी स्वाहा ॥"

आषाढ्यां भास्करास्ते सुरपतिककुभौ वातिवाते सुवृष्टिः
शस्यध्वंसं प्रकुर्याद्दहनदिशि यदा मन्दवृष्टिर्यमेन ॥
नैऋर्त्यां शस्यनाशो वरुणबहुजलो वायुना वायुकोपः।
कौबेर्यां शस्यपूर्णा भवति वसुमति तद्वदीशानकोणे ॥

[आषाढ़ी पूर्णिमाके दिन सूर्यास्तके समय यदि वायु पूर्वका हो तो वर्षा श्रेष्ठ, अग्निकोणका हो तो कृषि (खेतियों) की हानि, दक्षिणका हो तो वर्षाकी कमी, नैऋत्यका हो तो खेतियोंका नाश, पश्चिमका हो तो वर्षा अधिक, वायव्यका हो तो वायुका जोर, उत्तर और ईशानका हो तो कृषि (उपज) वृद्धि सुभिक्ष जगत्में आनन्द। वायु जोर का हो तो पूर्ण, साधारण हो तो मध्यम और अल्प हो तो थोड़ा फल जानें। आषाढ़ शु० पूर्णिमाको रात्रिमें चन्द्रमा निर्मल रहे अर्थात् बादल न हो तो दुर्भिक्ष पड़े।]

जिन जिन प्रान्त या नगरोंमें आ० शु० १५ को सूर्य अर्धास्तके समय पूर्व उत्तर पश्चिम या ईशानकी वायु चलेगी उन-उन प्रान्त या नगरोंमें उपर्युक्त अशुभ ग्रह-योगोंका अनिष्ट फल बहुत न्यून होगा और जहां

दिव्य उत्पात और सं० २००८ विक्रमी

[लेखक—श्री पं० कालीचरणजी शर्मा ज्यो०]

'प्रकृतेरन्यत्वं उत्पातः' प्रकृति धर्मसे विपरीत होना ही उत्पात है। ज्योतिष-संहिता ग्रन्थानुसार मनुष्योंके अहिताचरण करनेसे जो पाप संचय होते हैं इसीसे उपद्रव होते हैं। दिव्य अन्तरिक्ष और समस्त भौम उत्पात उनकी भली भांति सूचना देते हैं। और इन उत्पातों द्वारा जगतीमें अनेक प्रकारसे संकष्ट उत्पन्न होते हैं।

भारत स्वतन्त्र हुआ उसके पूर्व सं० २००३ के मार्गशीर्षसे संवत् २००४ विक्रमके वैशाख तक दिनमें गुरुग्रहको तथा शुक्रग्रहको देखा था। अपने मित्रोंको भी दिखाया था। और उसका फल भी पत्रोंमें प्रकाशित किया था।

इन गुरु शुक्रके दिनमें दिखनेसे जो सं० २००४ विक्रममें अमानुषीय कांड हुए वह किसीसे छिपे नहीं हैं। संसारके एक महानिधि महात्माजी भी अचानक परलोक वासी हुए। अखण्ड भारतके खण्ड हुए। कितनी ही माता बहिनोंके सतीत्व नष्ट हुए, बच्चे मरे, इतना ही नहीं उनकी अवर्णनीय दशा हुई। पौलेण्ड और जर्मनीके आक्रमण पर भी यह एकाध्वो दिनको दिखता था। प्रथम जर्मन युद्धमें भी यह दिनमें दीखा था, बर्माके बम्बार्डमेण्टकालमें यह दिखता था। द० हैदराबादके पतनावसरमें यह दीखता रहा और वर्तमानमें इन्हीं दोनों ग्रहोंको १॥ या २ महीनेसे पुनः दिनमें देख रहा हूं। बारबार निर्भ्रम देखकर ही यह फल लिख रहा हूं।

अहःसर्वयदा शुक्रो दृश्यते तु महाग्रहः।
तदा चागन्तुभर्ग्रामा वध्यन्ते नगराणि च।
कदाचिद् दृश्यते यत्र दिवा देवपुरोहितः।
राजा वा म्रियते तत्र सर्व देशो विनश्यति॥

यदि शुक्रग्रह दिनको दीखे तो आगन्तुक सेनाओं द्वारा बड़े-बड़े नगर और ग्रामोंका बन्धन होता है। (हमारे व्यक्तिगत अनुभवके बलपर साथ अन्नकी फसलमें क्षति होती है यह क्षति अवर्षणसे हो चाहे अतिवर्षणसे होती है अवश्य)।

गुरुदेवका दिवसमें दीखना अत्यधिक संकट कारक है। या तो देशका राजा मरे या देशका नाश हो। युगके प्रभावसे राजाओंका प्रभुत्व तो नष्ट हो गया, परन्तु जिनके हस्तगत राज्य शासनकी बागडोर है ऐसे महाप्रतापशाली देशके किसी बड़े नेताकी मृत्यु अवश्य होगी।

लगभग ८ या ९ वर्षके अन्तर्गत ही देशकी प्रजाका बहुत बड़ी संख्यामें नाश होगा। यह नाश भूकम्प जलमारी विशूचिका दुर्भिक्ष आदि द्वारा बड़े बड़े जन-पद शून्य होंगे और इस बढ़ती हुई मंहगाईकी गति भी उसी समय रुकेगी। इस महान् कष्टकारी फलके कारक ग्रह केवल गुरु शुक्र हैं जो कई वर्षोंसे दिनमें दीखते ही रहते हैं, इसीलिए शास्त्रमें लिखा है—

अग्निकोण दक्षिण नैऋत्य और वायव्यकोणकी वायु चलेगी, वहां भयङ्कर विप्लव होगा। यदि आषाढ़ शु० १५ बुधवारको ईरान पाकिस्तान काश्मीर आदिमें अशुभ दिशाकी वायु चल पड़ी तो वहां युद्धादि द्वारा भयानक विनाश होगा।

विज्ञ पाठक महानुभाव आ० शु० १५ बुधवार ता० १८ जुलाईको ठीक सूर्यास्तके समय अपने-अपने नगरमें वायु परीक्षा अवश्य करें और इसकी सूचना यदि वे हमें भी दे सकें तो उनकी महती कृपा होगी।

भावी चुनाव और श्री पं० जवाहरलालजीकी जन्मकुण्डली तथा आगामी वर्षकुण्डलीका विस्तृत विवेचन आगामी अङ्कमें दिया जायेगा।

शिवमस्तु सर्वजगतः॥

—×—

संसार पर शनिका कुप्रभाव

तीन मासका तेजी मन्दी विचार

[ले०—श्री पं० गेंदनलाल शास्त्री ज्यौतिषाचार्य]

इस वर्षमें शनैश्चर-दक्षिणदेशीय उत्तराफाल्गुनी और हस्त नक्षत्रपर स्थित होकर उत्तरदेशीय उत्तराभाद्रपदा और पूर्वाभाद्रपदाका वेध करेगा। अतएव—

उत्तरा हस्तचित्राश्च दक्षिणां कुक्षिमागताः।
दर्दुरं च महेन्द्रञ्च वनवासं ससिंहलम् ॥ १ ॥
तापी भीमरथी लङ्का त्रिकूटं मलयस्तथा।
श्रीपर्वतश्च किष्किन्धा इति नश्यन्ति दक्षिणे ॥२॥
शतभादित्रयं धीरैरुत्तरां कुक्षिमाश्रितम्।
नैपालं कीरकाश्मीरं गृञ्जनं खुरसानकम् ॥ ३ ॥
माथुरं म्लेच्छदेशाश्च खशं केदारमण्डलम्।
हिमाश्रयाश्च नश्यन्ति देशा ये चोत्तराश्रिता ॥४॥

इस शास्त्रीय विवेचनानुसार दर्दुर, महेन्द्र, वनवास, सिंहल, (सिलोनवेट, लङ्कासमीपवर्ती देश) तापी भीमरथी, लङ्का, (मालदीव वेट से पूर्व) त्रिकूट, मलय, श्रीपर्वत, किष्किन्धा, (मैसूर प्रान्त) दक्षिण दिशाके इन प्रदेशोंमें तथा—नैपाल, कीर, काश्मीर, गृञ्जन, खुरसानक, माथुर, (मथुरा) म्लेच्छदेश, खश, (ईरान) केदार, और हिमाश्रित प्रदेश, उत्तर दिशाके इन प्रदेशोंमें युद्धादि छः ईतियोंके कारण विप्लव, और आतङ्क होनेकी सम्भावना होगी। भारतीय-सीमाओं पर युद्धादिके कारण अशान्तिमय वातावरण रहेगा।

सं० २००८ भाद्रपदकृष्णा १ शनिवार तदनुसार ता० १८.८.५१ ई० से सं० २०११ मार्गशीर्षकृष्णा ५ चन्द्रवार ता० १५।११।१९५४ ई० तक क्रमशः छत्र, दण्ड, पतद्ग्रह, इन स्थानोंमें स्थित • हस्त, चित्रा, स्वाति, नक्षत्रों पर शनैश्चर चार होगा। अतएव—

यदा धिष्ण्यत्रये सौरिश्छत्रे दण्डे पतद्ग्रहे।
तदा तस्य भवेद्भङ्गश्छत्रस्यापि न संशयः ॥ १ ॥

शास्त्रीय इस परामर्शानुसार सम्वत् २००८ भाद्रपद कृष्णा १ शनिवार ता० १८।८।५१ ई० से सं०२०११ मार्गशीर्ष कृष्णा ५ चन्द्रवार ता. १५-११-१९५४ ई० तक समस्त संसारमें, अशान्ति, दुर्भिक्ष, अन्नादि खाद्य-पदार्थों पर कण्ट्रोल, ६ ईतियों, और युद्धकी तरङ्गे किल्लोल (क्रीडा) करती रहेंगी। किसी राजा या नेताकी मृत्यु, होगी तथा राजधानी देहलीसे पूर्व दिशामें छत्रभङ्ग होनेकी सम्भावना होगी। इसी बीचमें जमीन्दारी उन्मूलन होनेका प्रबल योग है।

व्यापार विषयक परामर्श—

(१) आषाढ़ शुक्ला १० शनिवार ता० १४ जौलाईसे श्रावण शुक्ला पूर्णिमा १७ अगस्त तक चांदी में ५) रु० या ६) रु.के लगभग घटाबढ़ी रहेगी। ५)

प्रकृतेश्चान्यथाभावे उत्पातः स त्वनेकधा।
स यत्र तत्र दुर्भिक्षं देशराज्यप्रजाक्षयः ॥

प्रकृति धर्मके बदलनेको ही उत्पात कहते हैं, उत्पात अनेक प्रकार के होते हैं। जहां उत्पात होते हैं वहां दुर्भिक्ष, देश-राष्ट्रका और राज्य प्रजा का नाश होता है। शुक्र के उत्पातके फलकी अवधि ६ मास और गुरुके फलकी अवधि १ सालकी होती है, तदपि दूसरे दूसरे ग्रह योगोंको दृष्टिमें रख कर यही निश्चित होता है कि आगे जगत्‌की बड़ी क्षति होगी।

सं० २००८ चातुर्मासके पूर्वार्द्धमें कण्ट्रोल रेट जल वर्षेगा। उत्तार्धमें आवश्यकतासे भी अधिक जल वर्षेगा। ऐसी वर्षा मालव नीमाड़ प्रान्तमें संभव है। परिणाम-स्वरूप जल कम वर्षेगा, तब हलकी जमीनकी खेती सूखेगी, अधिक वर्षाके कारण उत्तम दर्जेकी खेतीकी फसल बिगड़ेगी। अन्नका त्रास रहेगा।

———

घटे भावमें खरीदकर ६) रु० के लगभग तेजी आने पर लाभ (नफा) उठाना चाहिए।

(२) भाद्रपद कृष्णा १ शनिवार १८ अगस्तसे क्वार कृष्णा २ सोमवार १७ सितम्बर तक चांदीमें पूर्ववत् ५) या ६) की घटाबढ़ी रहेगी। घटे भावमें खरीदकर बढ़े भाव (तेजी)में बेचना चाहिये।

(३) आश्विन कृष्णा २ सोमवार ता० १७ सितम्बर दिनके २ बजेसे आश्विन शुक्ला १० बुधवार ता० १० अक्टूबर तक चांदीमें तेजीका बड़ा झटका (तूफान) आनेकी सम्भावना है। आषाढ़, श्रावण और भाद्रपद में खरीदी हुई चांदीको इस समय बेचनेमें अधिक लाभ होनेकी सम्भावना है।

पूर्वोक्त तीन महीनोंमें सोना, चांदीके बाजारमें असंभावित घटाबढ़ी रहेगी। अतएव सामयिक परिस्थितिको ध्यानमें रखते हुए व्यापारियोंको तेजी मन्दी लगानी चाहिए। विशेष जानकारीके लिए श्रीस्वध्याय सदन सोलन (शिमला)के पते पर हमसे पत्र व्यवहार करें।

———

अहिंसक राज्यमें हिंसाका भीषण ताण्डव

यावन्ति पशुरोमाणि तावत्कृत्वेह मारणम् ।
वृथापशुघ्नः प्राप्नोति प्रेत्य जन्मनि जन्मनि ॥
योऽहिंसकानि भूतानि हिनस्त्यात्मसुखेच्छया ।
स जीवंश्च मृतश्चैव न क्वचित्सुखमेधते ॥

जो मनुष्य पशुओंको अकारण मारता है, वह मृत्युके पश्चात् पशुओंके असंख्य रोमकी संख्याके बराबर उतने ही जन्मोंमें मारा जाता है । अतः पशुओंका बध नहीं करना चाहिए ॥

जो मनुष्य अपने सुखकी इच्छासे अहिंसक पशुओं का बध करता है, उसे इस लोक और परलोकमें लेशमात्र भी सुख नहीं मिलता; अतः प्राणियोंको मारना न चाहिये ।

मनुस्मृतिमें वर्णित उक्त श्लोकोंमें महाराज मनुने स्पष्ट शब्दोंमें कहा है, कि हमें पशुओंका बध करना न चाहिये । जो मनुष्य अपना पेट भरनेके लिये पशु-पक्षियों को मारते हैं. उन्हें इस संसारमें किञ्चिन्मात्र सुख-शान्ति नहीं मिलती; वरन् उन्हें भी मूक प्राणियोंकी भांति जन्मान्तरोंमें पशु बनकर भीषण यातनाएं भोगनी पड़ती हैं । मनु महाराज कहते हैं,—

"हिंस्राः भवन्ति क्रव्यादाः क्रमयोऽभक्ष्यभक्षिणः ।"
अर्थात् मांसादिके खाने वाले मनुष्योंको अन्य जन्मोंमें बिलाव तथा कृमि-कीट बनकर पापोंका फल भोगना पड़ता है ।

धर्म-ग्रन्थोंमें इस प्रकार मांसादि अभक्ष्य वस्तुओंके सेवनका सर्वथा निषेध होने पर भी मनुष्य अज्ञानसे उन्हें खाता है और पापोंका फल भोगता है ।

यथार्थमें राजकीय सरकारको ऐसी व्यवस्था करनी चाहिए कि जनताको अन्न फल-मूलादि सरलतासे प्राप्त हो सकें और उसके राज्यमें किसी प्रकारकी हिंसा न हो ।

पर बड़े दुःखके साथ लिखना पड़ता है कि— "अहिंसा परमो धर्मः" सिद्धान्तके प्रबल समर्थक भारत-राष्ट्रमें और अहिंसक सिद्धान्तके पोषक वर्तमान कांग्रेसी शासन-कालमें भी हिंसाका भीषण ताण्डव-नृत्य हो रहा है ।

महात्मा गांधीने अपने जीवनकाल तक अहिंसाका प्रचार किया और उसके प्रसारके लिए ही अपना आत्मोत्सर्ग भी कर डाला । फिर भी, उनके अनुयायी सत्तारूढ़ होकर भी भारतमें अभीतक हिंसाको मिटा नहीं सके । पारस्परिक ईर्षा द्वेष, कलह और मानव हिंसाकी बात तो दूर रही; वे कानून बनाकर अभी भारत राष्ट्रमें उपयोगी प्राणियोंके बधको भी पूर्णतया रोक नहीं सके हैं ।

यद्यपि कांग्रेसी सरकारने अहिंसाके प्रतीक सम्राट अशोकके चक्र तथा त्रिसिंह-स्तम्भ-चिन्होंको अपना राजचिन्ह माना है, तथापि वह उनके अन्तर्निहित आदर्शको अभी तक कार्यमें परिणत नहीं कर सकी है । सम्राट अशोकने अपने शासन-कालमें प्राणियोंका बध पूर्णरूपसे बन्द करवा दिया था । कांग्रेस शासकोंका कर्तव्य है, कि वे भी सम्पूर्ण भारतमें प्राणि बध पर प्रतिबन्ध लगा दें ।

हमें तो इस बातसे और भी आश्चर्य होता है, कि हमारे गो-भक्त और गो-पूजक अधिकारी गोवंशके बधको भी अभीतक नहीं रुकवा सके हैं । समस्त भारतमें आजके कांग्रेसी शासनमें भी लाखों प्राणियोंका बध किया जा रहा है; उनमें ऐसी दुधारू गाएं और बैल भी कत्ल किए जाते हैं, जिन्हें थोड़े दिन खिला पिलाकर दूध तथा काम देनेवाला बनाया जा सकता है; जब कि देशमें दूध, घी तथा बैलों और अन्नका अत्यन्ताभाव हो रहा है, तब भी कामधेनु-गोवंशकी वृद्धिकी और सरकारका विशेष ध्यान नहीं है ।

यदि ध्यान होता तो स्वास्थ्य नाशक एवं शुद्ध घीके विनाशक 'बनस्पति घीका' उत्पादन भारतमें

बढ़ने न पाता । केन्द्रीय तथा प्रान्तीय स्वास्थ्य विभागोंके अधिकारी न तो शुद्ध घी-दूधकी प्राप्तिके लिए गोवंशकी वृद्धिका यत्न कर रहे हैं और न स्वास्थ्यको हानि पहुंचाने एवं घीके रूपमें बेचे जाने वाले बनस्पति द्रव्य पर प्रतिबन्ध लगा रहे हैं । पार्लियामेण्टमें इस विषय पर विचार-विमर्श किया जाता है और फिर उस प्रश्नको खटाईमें डाल दिया जाता है ।

अब जनताका कर्तव्य है, कि वह आगामी चुनावमें उन्हीं प्रतिनिधियोंको चुने जो सरकारमें जाकर गोवध को तत्काल बन्द करवा दे तथा घीको अशुद्ध करने वाले पदार्थोंके उत्पादनपर प्रतिबन्ध लगवायें । यथार्थतः भारतमें गोवधका होना तथा बनस्पतिका बनना मनुष्य की आयुको घटाना है । पौष्टिक तत्वोंके अभावसे ही भारतवासियोंकी आनुपातिक आयु अन्य देशवासियोंसे कम हो गई है ।

अहिंसाके प्रचारका कोई मूल्य नहीं । आगामी चुनावोंमें जो सज्जन शासनकी बागडोर हाथमें लेनेके लिए खड़े होना चाहते हैं, उन्हें जनताको केवल आश्वासन ही नहीं; अपितु उसके समक्ष वचन-बद्ध होना पड़ेगा, कि वे भारतकी राजनीतिको धर्म-विशिष्ट रखेंगे और गोवधको बन्द कर भारतमें किसी प्रकारकी हिंसा होने न देंगे । तभी भारत पशु धन धान्यसे समृद्ध हो सकेगा ।

———

आज का भारतीय...... ......?

(१)

आस हीके झूले पर झूलते हैं रात-दिन,
नौकरी लगे पै बाबू साहब कहायेंगे ।
हाथ अधिकार जब आया मनमानी करें,
घूंस ले-ले कोठियां औ बंगले सजायेंगे ।
ईश्वर औ देवी-देवता तो मूर्ख मानते हैं,
भक्त-राज लेडी-देवताके ही कहायेंगे ।
कहै 'रसिकेश' ये ही देशके सपूत भले,
भारत माताके आय-बन्धन छुड़ायेंगे ॥

(२)

'धर्म-कर्म, गीता-मर्म, लोक परलोक आदि,
ढोंग है ढकोसला है, झूठ है, बहाना है ।'
पूजा - पाठ, ईश - वन्दनाकी कहे कौन,
देश भक्तिकी इजाजत भी देता न जमाना है ।
'जैसे भी हो अपना ही उल्लू सीधा करो यारो,
ऐसा वक्त जाने फिर और कब आना है ।'
ऐसे धर्म-तत्वोंके पुजारी युवकोंने ही तो,
भारतको उन्नतिके शिखर चढ़ाना है ।

(३)

धर्म-ध्वजी लम्पट निगोड़े कपटी जो महा,
माया-वेशधारी साधुरूप दिखलाते हैं ।
बालाजीसे कहैं—सावधान ! है जमाना बुरा,
चोरको उपाय चोरीका जो सिखलाते हैं ।
निर्धन, निरीह जनताका लहू चूस-चूस,
काली करतूतों पर हाय ! इठलाते हैं ।
भाग्यके विधाता तेरे प्यारे देश भारत !
ये जनताको कपटका पाठ सिखलाते हैं ।

—'रसिक'



लग्नेशका द्वादश भावस्थ फल

[लेखक:— श्री पं० अमरदत्तजी मिश्र राजवैद्य]

(१) लग्नेश प्रथममें (लग्नमें) हो तो दो स्त्रियां, स्वतन्त्र व्यवसाई, एक स्त्री पाणिगृहीता और दूसरीसे प्रेम संबंध रहे।

(२) लग्नेश दूसरे भावमें हो तो अधिक धन प्राप्त करने वाला, शत्रुओंसे दुःखी, सच्चरित्रवान्, नम्र, शौर्यवान् होता है।

(३) लग्नेश तीसरे भावमें हो तो बड़ा प्रतापी, साहसी, भाग्यवान्, प्रतिष्ठित, दो पत्नियां, बुद्धिमान् और प्रसन्नचित्त होता है।

(४) लग्नेश चतुर्थ भावमें हो तो मातृ सुखसे प्रसन्न, बहुत भाइयों वाला, सुन्दर और अच्छे व्यवहार वाला होता है।

(५) लग्नेश पंचममें हो तो प्रथम सन्तान नहीं जीती है, न संतान पक्षसे विशेष प्रसन्न ही रहता है। छोटे दिमाग वाला और नौकरी पैसा वाला होता है।

(६) लग्नेश छठे हो तो तृतीयवत् फल समझें। किन्तु लग्नाधिपतिकी दशामें ऋणसे मुक्त हो जाता है।

(७) लग्नेश सप्तम भावमें हो तो एक पत्नी होगी, किन्तु वह अधिक काल तक जीवित नहीं रहेगी, जीवनके अन्तमें संसारसे घृणा होगी और सन्तके समान जीवन व्यतीत करेगा।

(८) अष्टममें लग्नेश हो तो जुवारी, पठित, गुप्त विद्याके ज्ञाता और संकीर्ण तथा मलीन प्रकृतिका होता है।

(९) नवममें लग्नेश होवे तो भाग्यशाली, दूसरोंकी रक्षा करने वाला, धार्मिक, स्त्री लक्ष्मीके समान, सन्तान पक्षसे सुखी होगा।

(१०) लग्नेश दशममें हो तो चतुर्थवत् फल होगा, किन्तु राज्य सम्मान प्रतिष्ठा और सफलता वाला होता है और लग्नेशके गुणोंके अनुसार उस विषयका विशेषज्ञ होता है।

(११) ग्यारहवें लग्नेश हो तो दूसरे भावके समान फल होगा। व्यवसायमें उन्नति करने वाला होता है।

(१२) लग्नेश द्वादश भावमें हो तो अष्टमवत् फल जाने, किन्तु तीर्थस्थानों और यात्रामें उसका अधिक धन व्यय होगा और व्यापारमें कभी भी लाभ नहीं होगा।

—×—

अनुभूत चांस

नक्षत्रों पर होने वाले ग्रहवेधका फल

[ले०:—श्री चाननरामजी शर्मा वैद्य]

(१) श्रीस्वाध्यायके ग्राहकोंको एक तरफे दो अनुभूत चान्स भेंट हैं। तारीख १ जुलाई सन् १९५१ से ८ मार्च १९५२ तक एक ऐसा ग्रह वेध होने जा रहा है, जो सरसों, सोना, चांदीकी एकतरफी तेजीकी लाइन बनायेगा। बीच-बीचमें ग्रहयोग फलसे मन्दीके झटके बेशक आते रहेंगे, परन्तु बाजारका रुख तेजी हीकी तरफ डटे रहेगा।

(२) तारीख ३ अगस्त १९५१ से रुईमें तेजी प्रारम्भ होगी, जो कि उत्तरोत्तर तेजीकी तरफ बढ़ती रहेगी, व्यापारी ध्यान रखें। यहांसे गुड़, शक्कर, खांडमें भी तूफानी तेजी आनी प्रारम्भ होगी। ता० ९ सितम्बर १९५१ से मोठेमें आग लग जायगी, जो कि २५ जनवरी १९५२ तक विशेषकर रहेगी।

कब कितनी तेजी कितनी मन्दी आवेगी, यह स्पष्ट जाननेके लिए सम्पादक 'श्रीस्वाध्याय' द्वारा हमसे पत्र-व्यवहार करें।

★★

व्यक्तिगत शंका समाधान

[ज्यौ० 'गर्ग']

(१) प्रश्न— आर्थिक स्थिति किस प्रकार किस व्यवसायसे सुधरेगी ? कन्याका विवाह कर सकूंगा या क्या ? —एच. डी. वर्मा

उत्तर— वर्तमान वर्ष अच्छा है, आर्थिक स्थिति सुधरेगी। कन्याका संबन्ध माघ मास तक हो सकेगा। शुक्र मंगलकी आराधना करो।

(२) प्रश्न— लगातार हानि हो रही है, लाभ कब व कैसे होगा ?— वासुदेवप्रसाद बंसल मनिया।
ग्रह योगोंका प्रभाव हो दिख रहा है कि आपकी चिंता दूर हो चली होगी सं० २००८ व २००९ लाभकारी हैं।

(३) प्रश्न— सन्तानको किस कार्यमें जीविकार्थ लगाया जावे ? — रामसिंह

उत्तर— शिक्षाकी लाईन लाभप्रद है। शिक्षण चालू रखें, राज्यसेवा हानि प्रद होगी, उसमें न डालो। कलाकार बननेके भी योग हैं।

(४) प्रश्न— पुत्र होगा कि नहीं, संतान सुख कैसा रहेगा ? — जयसिंह शर्मा भाणोत

उत्तर— पुत्र अवश्य होगा - सम्बत् २००९ पौष शुक्ला तक योग बनेगा, संतान सुख साधारण रहेगा। गुरुकी उपासना करें।

(५) प्रश्न — व्यापार अच्छा रहेगा या नौकरी, शान्ति बतावें ? — मुरारी दास

उत्तर—ग्रहयोग प्रतिकूल थे, अब अनुकूल होते जारहे हैं, फिलहाल नौकरी कर लें, व्यापार सं० २००९ श्रावणसे प्रारम्भ करें, लाभ होगा

(६) प्रश्न— रंगीलालकी शादी कब कैसे होगी —प्रा० सं० ३४२७

उत्तर — जन्म पत्र या प्रश्नकाल कुछ नहीं भेजा अतः उत्तर नहीं दिया जा सकता।

(७) प्रश्न— धन, भूमि, मित्र लाभ कैसा है ? कौतर पर प्रकाश डालें। — ए. ए. नाथडू

उत्तर— धन लाभ अच्छा, खर्च भी अधिक, भूलाभ साधारण पशु हानि होगी, शुक्रांतर मध्यम है।

(८) प्रश्न— शादी कब होगी ? देरी क्यों ? —नारायण शंकर भट्ट.

उत्तर—जून १९५२ तक प्रतीक्षा करें।

(९) प्रश्न— भाग्योदय कब व कैसे होगा, यह वर्ष कैसा है ? — रामेश्वर शर्मा ब्यावर

उत्तर— भाग्योदय ३१ वें वर्ष होगा, मित्र द्वारा अच्छा लाभ होगा।

(१०) प्रश्न— कौनसी वस्तुसे लाभ होगा ? प्रा०—संख्या ३६८५.

उत्तर— सामग्री अपूर्ण है पूरी नकल या प्रश्न समय भेजें।

(११) प्रश्न— निश्चित पुत्र योग कब है ? — प्रा. सं० ३९८७ अजमेर

उत्तर—बुधकी शांति बिना संतान-सुखकी सम्भावना कम है।

(१२) प्रश्न— ज्योतिष, आयुर्वेदमें किससे, किस दिशा व ग्राममें लाभ है ?—प्रा० सं० १२२८ सरदारशहर

उत्तरः— दोनोंसे लाभ है प्रथमसे मानसिक व अन्य से आर्थिक, जन्म स्थानसे पूर्व व आग्नेयकोणमें अच्छा लाभ होगा।

(१३) प्रश्न— हाइकोर्ट केसका फल क्या होगा, कब सुनवाई करावें ? प्रा० सं० ३८७२ मेरठ।

उत्तर— आषाढ़ सुदि १५के पश्चात् सब समय शुभ राजकिशोरके नामसे अच्छा लाभ होगा

(१४) प्रश्न— प्रवेश इंजीनियरिंग या कृषि किसमें वा कहां होगा ? -प्रा० सं० ३७७२ लश्कर

उत्तर— कृषिमें प्रवेश होगा, ग्वालियरमें ही।—

(१५) प्रश्न —सं० २००८ में सट्टेसे लाभ होगा या नहीं ? —प्रा० सं० ३८८४ भिवानी

उत्तर —पत्रिका गलत व अपूर्ण है, न प्रश्न-समय लिखा है तथापि सं० २००६ लाभकारी है —

(१६) —सरकारी नौकरी या व्यापार द्वारा लाभका योग है ? —श्यामलाल शर्मा ब्यावर

उत्तर— नौकरी मईसे प्रारम्भ हो चुकी होगी। मित्रों व ससुरालकी सहायतासे शेष वर्ष लाभकारी रहेगा ।—

(१७) प्रश्न— धन स्थान कैसा है ? तथा अन्य ३ गुप्त प्रश्न, भाग्योदय आदि ग्रा० सं० ३८७५ नागौर

उत्तर— भाग्योदय ३६ वें वर्ष होगा, किसी फेक्टरीसे लाभ है शेष प्रश्नों संबंधी सुख विलंबसे होगा ।

(१८) प्रश्न— अगला प्रोमोशन कब होगा, सर्वोत्तम वर्ष कौनसा है ? के. पू. जादव सांगली

उत्तर— दूसरा प्रोमोशन अप्रेल १६५२ से होगा। सर्वोत्तम वर्ष १६५६ होगा ।



प्राप्ति स्वीकार

सामुद्रिक-दीपिका प्रथम भाग - लेखक— श्री लक्ष्मीनारायण त्रिपाठी, प्रकाशक—राज ज्योतिषी प्रभुदयालु त्रिपाठी, दैवज्ञभवन ,नरसिंहगढ़, पृष्ठ संख्या २०० । मू० ४)

'सामुद्रिक-दीपिका सचित्र द्वितीय भाग लेखक—श्री लक्ष्मीनारायण त्रिपाठी, प्रकाशक—श्री प्रभुदयालु त्रिपाठी दैवज्ञ भवन नरसिंहगढ़ । पृष्ठसंख्या ६२६ । मूल्य सजिल्द ८) रु० अजिल्द ७) रु० ।

'वर्षा व तेजी-मन्दीका ज्ञान'—संग्रहकर्ता-मक्खनलाल साबिक दारोगा सायर । प्रकाशक—स्टुडेण्ट ब्रादर्स भरतपुर । पृष्ठ संख्या ११२ । मूल्य १) रु० ।

'रमलशास्त्र' अर्थात् रमल प्रदीपिका (प्रथम भाग)— लेखक-श्री पं० बचानप्रसाद त्रिपाठी तान्त्रिक रमलाचार्य । प्रकाशक—भार्गव पुस्तकालय, गायघाट, बनारस । पृष्ठ संख्या १३६ । मूल्य २॥)

उक्त ग्रन्थों में से जिनकी दो दो प्रतियां प्राप्त हुई हैं, उनकी समालोचना आगामी अङ्क में प्रकाशित होगी ।



'श्रीस्वाध्याय' के गताङ्कः—

प्रथम वर्षकी फाइल—

१—शरदङ्क १॥) रु० २—हेमन्ताङ्क २॥) रु०

३—वसन्ताङ्क १॥) रु० ४—ग्रीष्माङ्क १॥) रु०

चारों अङ्कोंकी पूरी फाइलका मूल्य ६) रु०

द्वितीय वर्षकी फाइल—

१—शरदङ्क ४) रु० २—हेमन्ताङ्क २) रु०

३—वसन्ताङ्क १॥) रु० ४—ग्रीष्माङ्क १॥) रु०

चारों अङ्कोंकी पूरी फाइलका मूल्य १०)

तृतीय वर्षकी फाइल—

१—नववर्षाङ्क ५॥) रु० २—हेमन्ताङ्क २) रु०

३—वसन्ताङ्क १।॥) रु० ४—ग्रीष्माङ्क १॥) रु०

चारों अङ्कोंकी पूरी फाइलका मूल्य १०)

चतुर्थ वर्षकी फाइल—

१—नववर्षाङ्क अप्राप्य २—हेमन्ताङ्क ३) रु०

३—वसन्ताङ्क ३) रु० ४—ग्रीष्माङ्क २) रु०

तीनों अङ्कोंका इकट्ठा मू० ६॥)

पंचम वर्ष की फाइल—

१—नववर्षाङ्क ५) रु० २—हेमन्ताङ्क १) रु०

३—साहित्याङ्क २) रु० ४—ग्रीष्माङ्क अप्राप्य

तीनों अङ्कों का इकट्ठा मू० ७)

छठे वर्षकी फाइल—

१—नववर्षाङ्क ३) रु० २—हेमन्ताङ्क ४) रु०

३—वसन्ताङ्क १) रु० ४—ग्रीष्माङ्क १) रु०

चारों अङ्कोंकी पूरी फाइलका मू० ७) रु०

सातवें वर्षकी फाइल—

१—नववर्षाङ्क ३) रु० २—हेमन्ताङ्क ४) रु०

३—वसन्ताङ्क अप्राप्य ४—ग्रीष्माङ्क १॥) रु०

तीनों अङ्कोंका इकट्ठा मू० ६)

आठवें वर्षकी फाइल—

१—नववर्षाङ्क २) रु० २—हेमन्ताङ्क १॥) रु०

३—वसन्ताङ्क १॥) रु० ४—ग्रीष्माङ्क १।) रु०

चारों अङ्कोंकी पूरी फाइलका मूल्य ५) रु०

नवें वोर्षकी फाइल—

१—नववर्षाङ्क २॥) रु० २—हेमन्ताङ्क १॥) रु०

३—वसन्ताङ्क १॥) रु० ४—ग्रीष्माङ्क १॥) रु०

चारों अङ्कोंका इकट्ठा मूल्य ५) रु०

दशवें वर्षकी फाइल—

१—नववर्षाङ्क २) रु० २—हेमन्ताङ्क १।) रु०

३—वसन्ताङ्क १।) रु० ४—ग्रीष्माङ्क १।) रु०

चारों अङ्कोंका इकट्ठा मूल्य ४) रु०

स्थायी लाभके लिए— श्रीस्वाध्यायमें

विज्ञापन दीजिये

'श्रीस्वाध्याय, प्रत्येक शिक्षित परिवारके पास पहुंचता है। 'श्रीस्वाध्याय' व्यापार का पथप्रदर्शक है। व्यापारी इसे पूंजीकी भांति सुरक्षित रखते हैं। इसलिए प्रत्येक उच्च घरानेमें इसका आदर है।

आप अपने व्यापारका सम्बन्ध

यदि उच्च घरानोंसे कराना चाहते हैं। यदि आप अपना व्यवसाय बढ़ाना चाहते हैं; तो 'श्रीस्वाध्यायय' के आगामी 'नववर्षाङ्क' में विज्ञापन दीजिये।

प्रामाणिक विश्वस्त व्यवसाइयोंके कुछ चुने हुए विज्ञापन ही 'श्रीस्वाध्याय' में लिए जायेंगे। इसलिए विज्ञापनदाता अभीसे अपने विज्ञापन भेजकर आगामी नववर्ष विशेषांकके लिये स्थान रिजर्व करा लें। अश्लील विज्ञापन प्रकाशित न होंगे। विज्ञापनकी पूरी रकम पेशगी नीचे लिखे पते पर कार्यालयमें जमा कराना आवश्यक है। २५ सितम्बर १६५१ के पश्चात् आये हुए विज्ञापन 'नववर्षाङ्क' में प्रकाशित न हो सकेंगे।

विज्ञापन छपाईका शुल्क

१. पृष्ठ या दो कालमकी छपाई ६०) प्रति अङ्क। आधा पृष्ठ या एक कालमकी छपाई २५) प्रति अङ्क। चौथाई पृष्ठ या आधे कालमकी छपाई २०) प्रति अङ्क। पूरे वर्ष या चार अङ्कोंमें एक पृष्ठकी छपाई १८०) टाइटलके चौथे पृष्ठ की छपाई १२५) प्रति अङ्क। वर्षभर तक टाइटल के चौथे पृष्ठकी ४००) रु०।

व्यवस्थापक 'श्रीस्वाध्याय' सोलन (शिमला)

योग्य विद्वानोंका सम्मान

इस प्रगतिशीलताके आडम्बरपूर्ण युगमें यद्यपि सर्वत्र प्रगति-प्रगतिका ही उद्‌घोष प्रत्येक क्षेत्रमें व्याप्त हो रहा है। किन्तु वास्तविक प्रगति एवं उन्नति कहीं ढूंढ़े भी दृष्टिगत नहीं होती। श्रीस्वाध्याय-सदनका ध्येय आरम्भसे ही भारतीय संस्कृतिको समुन्नत बनानेका रहा है और अद्यावधि यथासाध्य विगत दश वर्षोंसे जो प्रयत्न इस संस्था की ओरसे किये गये हैं वे पाठकोंको विदित ही हैं। अपनी इन्हीं सद्भावनाओंको मूर्तिमान् रूप देनेके लिए सं० २००४ विक्रमीमें 'श्रीस्वाध्याय' के प्रवर्त्तक श्री १०८ पूज्यपाद आचार्यचरण श्री अमृतवाग्भवजी महाराजके आदेशानुसार सदनकी ओरसे योग्य विद्वानोंको प्रोत्साहन देनेके विचार से प्रतिवर्ष १२५)का एक पुरष्कार तथा योग्य विशिष्ट विद्वान् व्यक्तियोंको उचित उपाधि आदि देनेका निश्चित किया गया था। तदनुसार सं० २००५ वि०में भरतपुरके स्थानीय कवि एवं साहित्यिकवर्गकी एक गोष्ठीका आयोजन किया गया, इसमें तत्काल समस्या देकर कवियोंसे पूर्ति कराई गई। सं० २००६ वि०में भी यही क्रम रखा गया। सं० २००७ में भी एक साहित्यगोष्ठीका आयोजन किया गया और इसमें निम्नांकित महानुभावोंको उपाधि तथा पुरस्कारसे सम्मानित किया गया।

सं० २००५ विक्रमीमें

विद्वानोंके शुभ नाम	उपाधि
श्री पं० सूर्यनारायणजी शास्त्री	'कविमार्तण्ड'
श्री पं० कुलशेखरजी	'आशुकवि'
श्री पं० नन्दकुमारजी	'कविशिरोमणि'

सं० २००६ वि०

श्री पं० चम्पालालजी १२५) पुरष्कार

(श्री पं० चम्पालालजीने 'छिनछिनमें छिन जात' समस्या पर श्री आचार्यचरणके आदेशानुसार दोहा छन्दमें बड़ा ही सरस एवं भावपूर्ण शतकको रचना की थी, जिसमें लगभग १२५ दोहे हैं। इसी पुस्तक पर उक्त पुरष्कार दिया गया था।)

सं० २००७

श्री पं० नन्दकुमारजी १२५) पुरष्कार

(श्री पं० नन्दकुमारजीने एक 'अन्त्याक्षरी कल्पद्रुम' नामके काव्यग्रन्थ की रचना की है, इसमें लगभग १०००० दोहे हैं। इसके कुछ दोहे गताङ्कमें प्रकाशित किये गये थे। इसी ग्रन्थ पर विद्वान् लेखकको उक्त पुरष्कार प्रदान किया गया था।

इसके अतिरिक्त श्री ला० बद्रीप्रसादजीको उनकी ज्योतिष-शास्त्रमें प्रवीणता और अन्वेषणात्मक प्रतिभासे सन्तुष्ट होकर आचार्य चरणोंने 'गणकचूडामणि'की उपाधि से सम्मानित किया। श्री ला० बद्रीप्रसादजीने 'हायनरत्न' ग्रन्थकी सुन्दर हिन्दी टीका लिखी है जो अभी अप्रकाशित है।

आशा है कि भारतका विद्वद्वर्ग उक्त योजनाको सफल बनानेमें प्रयत्नशील रहेगा।



व्यापारमें भारी क्रांति

[एक अनुभवी दैवज्ञ]

श्रावण शुक्ला ५ बुधवार ता० ८ अगस्त १९५१ से बारदाना जूट पाट शेयर टाटा डिफर्ड आदि सब वस्तुओंमें उत्तरोत्तर भारी मन्दी प्रारम्भ होगी। टाटा डिफर्ड लगभग १७००) और इण्डियन आयरन लगभग २६) हो जायगा।

इस ६ मासकी अवधिमें अधिकांश वस्तुओं परसे सरकारी नियंत्रण वा कण्ट्रोल समाप्त हो जायगा। जापान स्वतन्त्र हो जायगा। ईरानकी तेल समस्या सुलझ जाएगी और कोरियाका युद्ध भी समाप्त हो जायेगा। परन्तु काश्मीर समस्या अभी नहीं सुलझ सकेगी।

श्रीस्वाध्यायसदन (ज्योतिषविभाग) के नियम

इस कार्यालयमें ज्योतिष-सम्बन्धी प्रत्येक कार्य शास्त्रानुसार सन्तोषजनक रीतिसे किये जाते हैं। योग्य कार्यकर्ताके अभावमें कुछ समयसे ज्योतिषका कार्य बिलकुल बन्द था, वह अब प्रारम्भ हो गया है। काशीके एक ज्योतिषाचार्यकी कार्यालयमें नियुक्ति हो गई है। जन्मपत्र वर्षफलमें आयुः, सन्तान, स्त्री, धन, व्यापार, नौकरी, शरीरका सुख-दुःख, भाग्योदयादिका पूरा पूरा विचार शास्त्र-प्रमाणानुसार लिखा जाता है। प्राचीन तथा नवीन दोनों पक्षोंसे गणित होता है। दोनों पद्धतियोंका पारिश्रमिक (फीस) भिन्न-भिन्न है। जन्मपत्र बनानेकी फीस २१) से १०००) रु० तक। वर्षफल ११) से २००) रु० तक। एक भावका सूक्ष्म विचार (यथार्थ निर्णय) के १५) रु०। आयुर्विचार (अंशायुर्गणित मारकेशविचार मृत्यु-समय-स्थान-रोग-मोहादिके निर्णय सहित) राजा महाराजा एवं सेठ साहूकारोंसे १२५) रु०, सर्वसाधारणसे ३१) रु०। टेवा बनवानेकी फीस ५) रु०। भारतसे बाहर अन्य देशोंमें उत्पन्न हुए बालकोंके शुद्ध इष्ट और केवल जन्मकुण्डली बनानेकी फीस १५) रु० विवादास्पद प्रश्न पर शास्त्रानुसार व्यवस्था बतलानेकी फीस ११) रु०। शुद्ध विवाह मुहूर्त और ग्रहमेलापक (कुण्डली मिलान) ५) रु०। सामान्य प्रश्न ५)।

व्यापार के चांस

चांदी, सोना, रुई, गुड़, तिलहन, शेयर आदिके अनुभवसिद्ध लम्बी लाइनके इकतर्फा पक्के चांस वर्ष भरमें कभी-कभी एक-दो बार ही आते हैं—ऐसे समय पर यदि पहलेसे सावधान होकर अपनी ग्रहदशाके अनुकूल होने पर व्यापार किया जाय तो अवश्य लाभ होता है। इस श्रावण माससे आगे व्यापारमें बड़ी भारी उथल-पुथल होने वाली है। अतः जो व्यापारी इस वर्षके अचूक चांसोंसे लाभ उठाना चाहते हों वे २५) रु० प्राथमिक (एडवांस) नीचे लिखे पते पर हमारे कार्यालयमें भेजकर स्थायी ग्राहकोंमें नाम लिखा लें। समय पर उन्हें लाभदायक चांस भेजा जायगा। शेष फीस लाभ होने पर ली जावेगी। जो सज्जन हमसे प्रत्यक्ष मिलना चाहें वे जवाबी पत्र भेजकर मिलनेकी तिथि (तारीख) पहले निश्चित कर लें।

प्रत्येक छोटे बड़े कार्यकी आधी फीस मनीआर्डर द्वारा पत्रके साथ ही भेजना आवश्यक है। बिना प्रारम्भिक (एडवांस) प्राप्त हुए कार्य आरम्भ नहीं किया जायगा। उत्तर प्राप्त करनेके लिए जवाबी कार्ड वा टिकट भेजना आवश्यक है।

निवेदकः—

हरदेव शर्मा त्रिवेदी

श्रीस्वाध्याय सदन, सोलन (शिमला)

विद्वान् लेखकोंसे आवश्यक निवेदन

'श्रीस्वाध्याय' का ग्यारहवें वर्षका नववर्षाङ्क, पहले सब विशेषाङ्कोंसे अधिक सुन्दर एवं आकर्षक रूपमें प्रकाशित हो रहा है। यह 'नववर्षाङ्क' आश्विन शु० १ ता० २ अक्टूबरको छपकर तैयार हो जावेगा। अतः आप अपना लेख, कविता, कहानी आदि संक्षिप्त हृदयस्पर्शी मौलिक सुन्दर भाषामें श्रावण शु० १५ ता० १७ अगस्त १९५१ तक कार्यालयमें सम्पादकके पास भेजने की कृपा करें। इस अवधिके पश्चात् आने वाले तथा अस्पष्ट और कागजके दोनों ओर लिखे हुए लेख प्रकाशित न हो सकेंगे।

—सम्पादक 'श्रीस्वाध्याय' सोलन (शिमला)